हिसाब दाख़िल होंगे

بِغَيْرِ حِسَابٍ

٦٥٤١- حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ مَيْسَرَةَ، قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ، ح وَحَدَّثَنِي أَسِيدُ بْنُ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ حُصَيْنٍ، قَالَ: كُنْتُ عِنْدَ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، فَقَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((عُرِضَتْ عَلَيَّ الأُمَمُ، فَأَخَذَ النَّبِيُّ يَمُرُّ مَعَهُ الأُمَّةُ، وَالنَّبِيُّ يَمُرُّ مَعَهُ النَّفَرُ، وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمُرُّ مَعَهُ الْعَشَرَةُ وَالنَّبِيُّ يَمُرُّ مَعَهُ الْخَمْسَةُ وَالنَّبِيُّ يَمُرُّ وَحْدَهُ، فَنَظَرْتُ فَإِذَا سَوَادٌ كَثِيرٌ قُلْتُ: يَا جِبْرِيلُ هَؤُلَاءِ أُمَّتِي؟ قَالَ: لَا، وَلَكِنِ انْظُرْ إِلَى الأُفُقِ فَنَظَرْتُ فَإِذَا سَوَادٌ كَثِيرٌ، قَالَ : هَؤُلَاءِ أُمَّتُكَ، وَهَؤُلَاءِ سَبْعُونَ أَلْفًا قُدَّامَهُمْ لَا حِسَابَ عَلَيْهِمْ، وَلَا عَذَابَ، قُلْتُ : وَلِمَ؟ قَالَ : كَانُوا لَا يَكْتَوُونَ وَلَا يَسْتَرْقُونَ وَلَا يَتَطَيَّرُونَ وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ))، فَقَامَ إِلَيْهِ عُكَّاشَةُ بْنُ مِحْصَنٍ فَقَالَ: ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، قَالَ. ((اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ مِنْهُمْ)) ثُمَّ قَامَ إِلَيْهِ رَجُلٌ آخَرُ قَالَ : ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ قَالَ : ((سَبَقَكَ بِهَا عُكَّاشَةُ)).

[راجع: ٣٤١٠]

6541. हमसे इमरान बिन मैसरह ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने, कहा हमसे हुसैन बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया (दूसरी सनद) और मुझसे उसैद बिन ज़ैद ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया कि मैं सईद बिन जुबैर की ख़िदमत में मौजूद था उस वक़्त उन्होंने बयान किया कि मुझसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे सामने उम्मतें पेश की गईं किसी नबी के साथ पूरी उम्मत गुज़री, किसी नबी के साथ चंद आदमी गुज़रे, किसी नबी के साथ दस आदमी गुज़रे, किसी नबी के साथ पाँच आदमी गुज़रे और कोई नबी तन्हा गुज़रा। फिर मैंने देखा तो इंसानों की एक बहुत बड़ी जमाअ़त दूर से नज़र आई। मैंने जिब्रईल अ़लैहिस्सलाम से पूछा क्या ये मेरी उम्मत है? उन्होंने कहा कि नहीं बल्कि उफ़ुक़ की त़रफ़ देखो। मैंने देखा तो एक बहुत ज़बरदस्त जमाअ़त दिखाई दी। फ़र्माया कि ये है आपकी उम्मत और ये जो आगे आगे सत्तर हज़ार की ता'दाद है उन लोगों से हिसाब न लिया जाएगा और न उन पर अ़ज़ाब होगा। मैंने पूछा, ऐसा क्यूँ होगा? उन्होंने कहा कि इसकी वजह ये है कि ये लोग दाग़ नहीं लगवाते थे, दम झाड़ नहीं करवाते थे शगुन नहीं लेते थे, अपने रब पर भरोसा करते थे। फिर आँहज़रत (ﷺ) की त़रफ़ उ़क्काशा बिन मिह़सन (रज़ि.) उठकर बढ़े और अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर दुआ करें कि अल्लाह तआ़ला मुझे भी उन लोगों में कर दे। आँहज़रत (ﷺ) ने दुआ फ़र्माई कि ऐ अल्लाह! इन्हें भी उनमें से कर दे। उसके बाद एक और स़हाबी खड़े हुए और अ़र्ज़ किया कि मेरे लिये भी दुआ कीजिए कि अल्लाह तआ़ला मुझे भी उनमें से कर दे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उ़क्काशा इसमें तुमसे आगे बढ़ गये। (राजेअ़ : 3410)

तश्रीह : ये उ़क्काशा बिन मिह़सन असदी बनी उमय्या के ह़लीफ़ हैं। जंगे बद्र में इनकी तलवार टूट गई थी तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने इनको एक छड़ी दे दी जो उनके हाथ में तलवार हो गई। बाद की लड़ाइयों में भी शरीक रहे। फ़ाज़िल स़ह़ाबा मे से थे जो ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी में बउ़म्र 45 साल फ़ौत हुए। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास, ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) और उनकी बहन उम्मे क़ैस (रज़ि.) इनसे रिवायत करती हैं। सनद में ह़ज़रत सईद बिन जुबैर का नाम आया है जिन्हें

बन जाना कि एक-दूसरे की गर्दन मारने लगो।
(राजेअ : 1742)

قَالَ: ((وَيْحَكُمْ -أَوْ وَيْلَكُمْ- لاَ تَرْجِعُنَّ بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ)). [راجع: ١٧٤٢]

इस ह़दीष़ से ज़ाहिर है कि मुसलमान का अल्लाह के नज़दीक कितना बड़ा मुक़ाम है। जिसका लिह़ाज़ रखना हर मुसलमान का अहम फ़रीज़ा है।

बाब 11 : हुदूद क़ायम करना और अल्लाह की हुर्मतों को जो कोई तोड़े उससे बदला लेना

١١- باب إِقَامَةِ الْحُدُودِ وَالانْتِقَامِ لِحُرُمَاتِ اللهِ

6786. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने, उनसे अ़क़ील ने, उनसे शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को जब भी दो चीज़ों में से एक का इख़्तियार करने का हुक्म दिया गया तो आपने उनमे से आसान ही को पसंद किया, बशर्तेकि उसमें गुनाह का कोई पहलू न हो, अगर उसमें गुनाह का कोई पहलू होता तो आप उससे सबसे ज़्यादा दूर होते। अल्लाह की क़सम! आँह़ज़रत (ﷺ) ने कभी अपने ज़ाती मामले में किसी से बदला नहीं लिया अल्बत्ता जब अल्लाह की हुर्मतों को तोड़ा जाता तो आप अल्लाह के लिये बदला लेते थे। (राजेअ : 3560)

٦٧٨٦- حدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا خُيِّرَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ أَمْرَيْنِ إِلاَّ اخْتَارَ أَيْسَرَهُمَا مَا لَمْ يَكُنْ إِثْمًا، فَإِذَا كَانَ الإِثْمُ كَانَ أَبْعَدَهُمَا مِنْهُ، وَاللهِ مَا انْتَقَمَ لِنَفْسِهِ فِي شَيْءٍ يُؤْتَى إِلَيْهِ قَطُّ، حَتَّى تُنْتَهَكَ حُرُمَاتُ اللهِ فَيَنْتَقِمُ للهِ. [راجع: ٣٥٦٠]

बाब 12 : कोई बुलंद मर्तबा शख़्स हो या कम मर्तबा सब पर बराबर ह़द क़ायम करना

١٢- باب إِقَامَةِ الْحُدُودِ عَلَى الشَّرِيفِ وَالْوَضِيعِ

ये नहीं कि अशराफ़ (ऊँचे दर्जे के लोगों) को छोड़ दिया जाए।

6787. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि उसामा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से एक औरत की (जिस पर ह़द का मुक़द्दमा होने वाला था) सिफ़ारिश की तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुमसे पहले के लोग इसलिये हलाक हो गये कि वो कमज़ोरों पर तो ह़द क़ायम करते और बुलंद मर्तबा लोगों को छोड़ देते थे। उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। अगर (मेरी बेटी) फ़ात़िमा (रज़ि.) ने भी (चोरी) की होती तो मैं उसका भी हाथ काट लेता। (राजेअ : 2648)

٦٧٨٧- حدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ أُسَامَةَ كَلَّمَ النَّبِيَّ ﷺ فِي امْرَأَةٍ فَقَالَ: ((إِنَّمَا هَلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ، أَنَّهُمْ كَانُوا يُقِيمُونَ الْحَدَّ عَلَى الْوَضِيعِ، وَيَتْرُكُونَ الشَّرِيفَ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ فَاطِمَةُ فَعَلَتْ ذَلِكَ، لَقَطَعْتُ يَدَهَا)). [راجع: ٢٦٤٨]

इस्लामी हुदूद का अज्र बहरहाल हमेशा के लिये है बशर्ते कि इस्लामी स्टेट में इस्लामी अ़दालत में हो।

बाब 13 : जब हद्दी मुक़द्दमा हाकिम के पास पहुँच जाए फिर सिफ़ारिश करना मना है

١٣- باب كَرَاهِيَةِ الشَّفَاعَةِ فِي الْحَدِّ إِذَا رُفِعَ إِلَى السُّلْطَانِ

बल्कि गुनाहे अ़ज़ीम है।

6788. हमसे सईद बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उ़र्वा ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक मख़्ज़ूमी औरत का मामला जिसने चोरी की थी, क़ुरैश के लोगों के लिये अहमियत इख़्तियार कर गया और उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) से इस मामले में कौन बात कर सकता है उसामा (रज़ि.) के सिवा, जो आँहज़रत (ﷺ) को बहुत प्यारे हैं और कोई आपसे सिफ़ारिश की हिम्मत नहीं कर सकता? चुनाँचे उसामा (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से बात की तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या तुम अल्लाह की हदों में सिफ़ारिश करने आए हो। फिर आप खड़े हुए और ख़ुत्बा दिया और फ़र्माया ऐ लोगों! तुमसे पहले के लोग इसलिये गुमराह हो गये कि जब उनमें कोई बड़ा आदमी चोरी करता तो उसे छोड़ देते लेकिन अगर कमज़ोर चोरी करता तो उस पर हद क़ायम करते थे और अल्लाह की क़सम! अगर फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद (ﷺ) ने भी चोरी की होती तो मुहम्मद (ﷺ) उसका हाथ ज़रूर काट डालते। (राजेअ़ : 2648)

٦٧٨٨- حدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ قُرَيْشًا أَهَمَّتْهُمُ الْمَرْأَةُ الْمَخْزُومِيَّةُ الَّتِي سَرَقَتْ فَقَالُوا: مَنْ يُكَلِّمُ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَمَنْ يَجْتَرِىءُ عَلَيْهِ إِلاَّ أُسَامَةُ حِبُّ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ فَكَلَّمَ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((أَتَشْفَعُ فِي حَدٍّ مِنْ حُدُودِ اللهِ؟)) ثُمَّ قَامَ فَخَطَبَ فَقَالَ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا ضَلَّ مَنْ قَبْلِكُمْ، أَنَّهُمْ كَانُوا إِذَا سَرَقَ الشَّرِيفُ تَرَكُوهُ، وَإِذَا سَرَقَ الضَّعِيفُ فِيهِمْ أَقَامُوا عَلَيْهِ الْحَدَّ، وَايْمُ اللهِ لَوْ أَنَّ فَاطِمَةَ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَرَقَتْ لَقَطَعَ مُحَمَّدٌ يَدَهَا)). [راجع: ٢٦٤٨]

इस सिफ़ारिश पर आपने हज़रत उसामा को तम्बीह फ़र्माई।

बाब 14 : अल्लाह तआ़ला ने सूरह माइदह में फ़र्माया और चोर मर्द और चोर औ़रत का हाथ काटो

١٤- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى ﴿وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا﴾ وَإِلَى كَمْ يُقْطَعُ؟ وَقَطَعَ عَلِيٌّ مِنَ الْكَفِّ وَقَالَ قَتَادَةُ: فِي امْرَأَةٍ سَرَقَتْ فَقُطِعَتْ شِمَالُهَا لَيْسَ إِلاَّ ذَلِكَ.

(कितनी मालियत पर हाथ काटा जाए हज़रत अ़ली रज़ि. ने पहुँचे से हाथ कटवाया था। और क़तादा ने कहा अगर किसी औ़रत ने चोरी की और ग़लती से उसका बायाँ हाथ काट डाला गया तो बस अब दाहिना हाथ न काटा जाएगा।)

इस बाब में ये बयान है कि कितनी मालियत पर हाथ काटा जाए। बयान की गई अह़ादीष़ से मा'लूम होता कि कम अज़्कम तीन दिरहम की मालियत पर हाथ काटा जाएगा।

6789. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा

٦٧٨٩- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ،

نَزْنِي، وَلاَ نَسْرِقَ، وَلاَ نَقْتُلَ النَّفْسُ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ، وَلاَ نَنْتَهِبَ وَلاَ نَعْصِيَ بِالْجَنَّةِ إِنْ فَعَلْنَا فَإِنْ غَشِينَا مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا كَانَ قَضَاءُ ذَلِكَ إِلَى اللهِ.

[راجع: ١٨]

अल्लाह ने हराम की है, हम लूटमार नहीं करेंगे और आप (ﷺ) की नाफ़र्मानी नहीं करेंगे और ये कि अगर हमने इस पर अमल किया तो हमें जन्नत मिलेगी और अगर हमने इनमें से किसी तरह का गुनाह किया तो उसका फ़ैसला अल्लाह तबारक व तआला के यहाँ होगा। (राजेअ : 18)

جो बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है।

٦٨٧٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَمَلَ عَلَيْنَا السِّلاَحَ فَلَيْسَ مِنَّا)). رَوَاهُ أَبُو مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[طرفه في: ٧٠٧٠]

6874. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने हम पर हथियार उठाया वो हममें से नहीं है। हज़रत मूसा (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से ये हदीष रिवायत की है। (दीगर मक़ाम : 7070)

अगर मुबाह समझकर उठाता है तो काफ़िर होगा और जो मुबाह नहीं समझता तो काफ़िर नहीं हुआ मगर काफ़िरों जैसा काम किया इसलिये तश्लीज़न फ़र्माया कि वो मुसलमान नहीं है बल्कि काफ़िर है।

٦٨٧٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْمُبَارَكِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ وَ يُونُسُ عَنِ الْحَسَنِ، عَنِ الأَحْنَفِ بْنِ قَيْسٍ قَالَ : ذَهَبْتُ لأَنْصُرَ هَذَا الرَّجُلَ فَلَقِيَنِي أَبُو بَكْرَةَ فَقَالَ: أَيْنَ تُرِيدُ : قُلْتُ : أَنْصُرُ هَذَا الرَّجُلَ قَالَ: ارْجِعْ فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِذَا الْتَقَى الْمُسْلِمَانِ بِسَيْفَيْهِمَا فَالْقَاتِلُ وَالْمَقْتُولُ فِي النَّارِ)) قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ هَذَا الْقَاتِلُ فَمَا بَالُ الْمَقْتُولِ؟ قَالَ : ((إِنَّهُ كَانَ حَرِيصًا عَلَى قَتْلِ صَاحِبِهِ)).[راجع: ٣١]

6875. हमसे अब्दुर्रहमान बिन मुबारक ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने, कहा हमसे अय्यूब और यूनुस ने, उनसे इमाम हसन बसरी ने, उनसे अहनफ़ बिन क़ैस ने कि मैं उन साहब (अली बिन अबी तालिब रज़ि.) की जंगे जमल में मदद के लिये तैयार था कि अबू बक्रा (रज़ि.) से मेरी मुलाक़ात हुई। उन्होंने पूछा, कहाँ का इरादा है? मैंने कहा कि उन साहब की मदद के लिये जाना चाहता हूँ। उन्होंने फ़र्माया कि वापस चले जाओ मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है आँहज़रत (ﷺ) फ़र्माते थे कि जब दो मुसलमान तलवार खींचकर एक-दूसरे से भिड़ जाएँ तो क़ातिल और मक़्तूल दोनों दोज़ख़ में जाते हैं। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! एक तो क़ातिल था लेकिन मक़्तूल को सज़ा क्यूँ मिलेगी? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया वो भी अपने क़ातिल के क़त्ल पर आमादा था। (राजेअ : 31)

तश्रीह : मगर इत्तिफ़ाक़ से ये मौक़ा उसको न मिला ख़ुद मारा गया। हदीष का मतलब ये है कि जब बिला वजहे शरई एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को मारने की निय्यत करे।

बाब 3 : अल्लाह तआला ने सूरह बक़र: में फ़र्माया, ऐ ईमानवालों! तुममें जो लोग

٣- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَى الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالأُنْثَى بِالأُنْثَى فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ ذَلِكَ تَخْفِيفٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ فَمَنِ اعْتَدَى بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾

[البقرة : ١٧٨].

क़त्ल किये जाएँ उनका क़िसास फ़र्ज़ किया गया है। आज़ाद के बदले मे आज़ाद और ग़ुलाम के बदले में ग़ुलाम और औरत के बदले में औरत। हाँ! जिस किसी को उसके फ़रीक़े मुक़ाबिल की तरफ़ से क़िसास का कोई हिस्सा माफ़ कर दिया जाए सो मुतालबा मा'कूल और नर्म तरीक़ पर करना चाहिये और दियत को उस फ़रीक़ के पास ख़ूबी से पहुँचा देना चाहिये। ये तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से रिआयत और मेहरबानी है सो जो कोई इसके बाद भी ज़्यादती करे उसके लिये आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब है। (अल बक़र: : 178)

बाब 4 : हाकिम का क़ातिल से पूछगछ करना यहाँ तक कि वो इक़रार कर ले और हुदूद में इक़रार (इष्बाते जुर्म के लिये) काफ़ी ह

٤- باب سُؤَالِ الْقَاتِلِ حَتَّى يُقِرَّ وَالإِقْرَارِ فِي الْحُدُودِ

٦٨٧٦- حدثنا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه أَنَّ يَهُودِيًّا رَضَّ رَأْسَ جَارِيَةٍ بَيْنَ حَجَرَيْنِ فَقِيلَ لَهَا: مَنْ فَعَلَ بِكِ هَذَا أَفُلَانٌ أَوْ فُلَانٌ؟ حَتَّى سُمِّيَ الْيَهُودِيُّ فَأُتِيَ بِهِ النَّبِيُّ ﷺ فَلَمْ يَزَلْ بِهِ حَتَّى أَقَرَّ فَرُضَّ رَأْسُهُ بِالْحِجَارَةِ.

[راجع: ٢٤١٣]

6876. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक यहूदी ने एक लड़की का सर दो पत्थरों के बीच में रखकर कुचल दिया फिर उस लड़की से पूछा गया कि ये किसने किया है? फ़लाँ ने फ़लाँ ने? आख़िर जब उस यहूदी का नाम लिया गया (तो लड़की ने सर के इशारे से हाँ कहा) फिर यहूदी को नबी करीम (ﷺ) के यहाँ लाया और उससे पूछगछ की जाती रही यहाँ तक कि उसने जुर्म का इक़रार कर लिया चुनाँचे उसका सर भी पत्थरों से कुचला गया। (राजेअ : 2413)

तश्रीह: इस हदीष से हनफ़िया का रद्द हुआ जो कहते हैं कि क़िसास हमेशा तलवार ही से लिया जाएगा और ये भी षाबित हुआ कि मर्द औरत के बदले क़त्ल किया जाएगा। कुछ लोगों ने इससे दलील ली है कि इज्माअ का मुंकिर काफ़िर है मगर ये सहीह नहीं है। ऐसी इज्माई बात का मुंकिर काफ़िर है जिसका वजूब शरीअत से तवातरन षाबित हो लेकिन जिस मसले का षुबूत हदीष सहीह मुतवातिर या आयते कुर्आन से षाबित न हो और उसमें कोई इज्माअ का ख़िलाफ़ करे तो वो काफ़िर न होगा। क़ाज़ी अयाज़ ने कहा जो आलिम की हदूष का मुंकिर हो और उसे क़दीम कहे वो काफ़िर है और जमाअत के छोड़ने में बाग़ी और रहज़न और उस क़ौल से मुड़ने वाले और इमामे बरहक़ से मुख़ालफ़त करने वाले भी आ गये उनका भी क़त्ल दुरुस्त है।

बाब 5 : जब किसी ने पत्थर या डंडे से किसी को क़त्ल किया

٥- باب إِذَا قَتَلَ بِحَجَرٍ أَوْ بِعَصًا

इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब का तर्जुमा गोल रखा क्योंकि इसमें इख़्तिलाफ़ है कि इस सूरत में क़ातिल को भी पत्थर या

लकड़ी से क़त्ल करेंगे या तलवार से। हनफ़िया कहते हैं कि हमेशा क़िसास तलवार से लिया जाएगा और जुम्हूर उलमा कहते हैं कि जिस तरह क़ातिल ने क़त्ल किया है उस तरह भी क़िसास ले सकते हैं।

6877. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन इदरीस ने ख़बर दी, उन्हें शुअबा ने, उन्हें हिशाम बिन ज़ैद बिन अनस ने, उनसे उनके दादा अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मदीना मुनव्वरह में एक लड़की चाँदी के ज़ेवर पहने बाहर निकली। रावी ने बयान किया कि फिर उसे एक यहूदी ने पत्थर से मार दिया। जब उसे नबी करीम (ﷺ) के पास लाया गया तो अभी उसमें जान बाक़ी थी। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा तुम्हें फ़लाँ ने मारा है? उस पर लड़की ने अपना सर (इंकार के लिये) उठाया फिर आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा तुम्हें फ़लाँ ने मारा है? लड़की ने उस पर भी सर उठाया। तीसरी मर्तबा आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा फ़लाँ ने तुम्हें मारा है? उस पर लड़की ने अपना सर नीचे की तरफ़ झुका लिया (इक़रार करते हुए झुका लिया) चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने उस शख़्स को बुलाया तब आप (ﷺ) ने दो पत्थरों से कुचल कर उसको क़त्ल कराया। (राजेअ : 2413)

٦٨٧٧- حدَّثنا مُحَمَّدٌ، قالَ أخبَرَنا عَبْدُ اللهِ بْنُ إدْرِيسَ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدِ بْنِ أنَسٍ عَنْ جَدِّهِ أنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: خَرَجَتْ جارِيَةٌ عَلَيْهَا أوْضَاحٌ بِالْمَدِينَةِ قَالَ: فَرَمَاهَا يَهُودِيٌّ بِحَجَرٍ قَالَ: فَجِيءَ بِهَا إلَى النَّبِيِّ ﷺ وَبِهَا رَمَقٌ فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((فُلَانٌ قَتَلَكِ؟)) فَرَفَعَتْ رَأسَهَا فَأعَادَ عَلَيْهَا قَالَ: ((فُلَانٌ قَتَلَكِ)) فَرَفَعَتْ رَأسَهَا فَقَالَ لَهَا فِي الثَّالِثَةِ: ((فُلَانٌ قَتَلَكِ؟)) فَخَفَضَتْ رَأسَهَا فَدَعَا بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَتَلَهُ بَيْنَ الْحَجَرَيْنِ. [راجع: ٢٤١٣]

٦- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

﴿أنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالأنْفَ بِالأنْفِ وَالأذُنَ بِالأذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ، وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ، وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أنْزَلَ اللهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ﴾ [المائدة: ٤٥].

बाब 6 : अल्लाह तआला ने सूरह माइदह में फ़र्माया कि

जान का बदला जान है और आँख का बदला आँख और नाक का बदला नाक और कान का बदला कान और दांत का बदला दांत और ज़ख़्मों में क़िसास है, सो कोई उसे माफ़ कर दे तो वो उसकी तरफ़ से कफ़्फ़ारा हो जाएगा और जो कोई अल्लाह के नाज़िल किये हुए अहकाम के मुवाफ़िक़ फ़ैसला न करे तो वो ज़ालिम हैं। (अल माइदह : 45)

٦٨٧٨- حدَّثنا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنا أبِي، حَدَّثَنا الأعْمَشُ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُرَّةَ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَا يَحِلُّ دَمُ امْرِئٍ مُسْلِمٍ يَشْهَدُ أنْ لَا إلَهَ إلَّا اللهُ وَأنِّي رَسُولُ اللهِ إلَّا بِإحْدَى ثَلَاثٍ: النَّفْسُ بِالنَّفْسِ، وَالثَّيِّبُ الزَّانِي، وَالْمَارِقُ مِنَ الدِّينِ التَّارِكُ الْجَمَاعَةَ)).

6878. हमसे उमर बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन मुर्रह ने बयान किया, उनसे मसरूक़ ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया किसी मुसलमान का ख़ून जो कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह का मानने वाला हो हलाल नहीं है अल्बत्ता तीन सूरतों में जाइज़ है। जान के बदले जान लेने वाला, शादी शुदा होकर ज़िना करने वाला और इस्लाम से निकल जाने वाला (मुर्तद) जमाअत को छोड़ देने वाला।

क़दमी है। और क़तादा, यूनुस, हिशाम और अबू हिलाल ने इब्ने सीरीन से नक़ल किया है, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। और कुछ ने ये सारी रिवायत हदीष में शुमार की है लेकिन औफ़ की रिवायत ज़्यादा वाज़ेह है और यूनुस ने कहा कि क़ैद के बारे में रिवायत को मैं नबी करीम (ﷺ) की हदीष ही समझता हूँ। अबू अब्दुल्लाह हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि नौफ़ हमेशा गर्दनों ही में होते हैं।

وَكَانَ يَكْرَهُ الْغُلَّ فِي النَّوْمِ، وَكَانَ يُعْجِبُهُمُ الْقَيْدُ وَيُقَالُ: الْقَيْدُ ثَبَاتٌ فِي الدِّينِ. وَرَوَى قَتَادَةُ وَيُونُسُ وَهِشَامٌ وَأَبُو هِلَالٍ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَدْرَجَهُ بَعْضُهُمْ كُلَّهُ فِي الْحَدِيثِ وَحَدِيثُ عَوْفٍ أَبْيَنُ وَقَالَ يُونُسُ: لاَ أَحْسِبُهُ إِلاَّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْقَيْدِ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: لاَ تَكُونُ الأَغْلاَلُ إِلاَّ فِي الأَعْنَاقِ.

और बेड़ियाँ हाथों में। आयत, ग़ुल्लत अयदीहिम में हाथों की बेड़ियाँ मज़्कूर हैं।

बाब 27 : ख़्वाब में पानी का बहता चश्मा देखना

٢٧- باب الْعَيْنِ الْجَارِيَةِ فِي الْمَنَامِ

7018. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें ख़ारिजा बिन ज़ैद बिन षाबित ने और उनसे हज़रत उम्मे अला (रज़ि.) ने बयान किया जो उन्हीं में से एक ख़ातून हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअत की थी। उन्होंने बयान किया कि जब अंसार ने मुहाजिरीन के क़याम के लिये क़ुर्आअंदाज़ी की तो हज़रत उष्मान बिन मज़्ऊन (रज़ि.) का नाम हमारे यहाँ ठहरने के लिये निकला। फिर वो बीमार पड़े, हमने उनकी तीमारदारी की लेकिन उनकी वफ़ात हो गई। फिर हमने उन्हें उनके कपड़ों में लपेट दिया। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) हमारे घर तशरीफ़ लाए तो मैंने कहा अबू साइब! तुम पर अल्लाह की रहमतें हों, मेरी गवाही है कि तुम्हें अल्लाह तआला इज़्ज़त बख़्शी है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हें ये कैसे मा'लूम हुआ? मैंने अर्ज़ किया अल्लाह की क़सम! मुझे मा'लूम नहीं है। आँहज़रत (ﷺ) ने उसके बाद फ़र्माया कि जहाँ तक इनका ता'ल्लुक़ है तो यक़ीनी बात (मौत) इन तक पहुँच चुकी है और मैं अल्लाह से इनके लिए ख़ैर की उम्मीद रखता हूँ लेकिन अल्लाह की क़सम! मैं रसूलुल्लाह हूँ और इसके बावजूद मुझे मा'लूम नहीं कि मेरे साथ क्या मामला किया जाएगा? उम्मे अला ने कहा कि वल्लाह! इसके बाद मैं किसी इंसान की पाकी नहीं बयान करूँगी। उन्होंने बयान किया मैंने हज़रत

٧٠١٨- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ خَارِجَةَ بْنِ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ عَنْ أُمِّ الْعَلاَءِ وَهِيَ امْرَأَةٌ مِنْ نِسَائِهِمْ بَايَعَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَتْ: طَارَ لَنَا عُثْمَانُ بْنُ مَظْعُونٍ فِي السُّكْنَى حِينَ اقْتَرَعَتِ الأَنْصَارُ عَلَى سُكْنَى الْمُهَاجِرِينَ، فَاشْتَكَى فَمَرَّضْنَاهُ حَتَّى تُوُفِّيَ، ثُمَّ جَعَلْنَاهُ فِي أَثْوَابِهِ فَدَخَلَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ: رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْكَ أَبَا السَّائِبِ فَشَهَادَتِي عَلَيْكَ لَقَدْ أَكْرَمَكَ اللهُ قَالَ: ((وَمَا يُدْرِيكِ؟)) قُلْتُ: لاَ أَدْرِي وَاللهِ قَالَ: ((أَمَّا هُوَ فَقَدْ جَاءَهُ الْيَقِينُ، إِنِّي لأَرْجُو لَهُ الْخَيْرَ مِنَ اللهِ، وَاللهِ مَا أَدْرِي وَأَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ مَا يُفْعَلُ بِي وَلاَ بِكُمْ)). قَالَتْ أُمُّ الْعَلاَءِ: فَوَاللهِ لاَ أُزَكِّي أَحَدًا بَعْدَهُ، قَالَتْ: وَرَأَيْتُ

हमसे फ़र्माया, तुम मेरे बाद कुछ काम ऐसे देखोगे जो तुमको बुरे लगेंगे। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप इस सिलसिले में क्या हुक्म फ़र्माते हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उन्हें उनका हक़ अदा करो और अपना हक़ अल्लाह से मांगो। (राजेअ : 3603)

قَالَ لَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ بَعْدِي أَثَرَةً وَأُمُورًا تُنْكِرُونَهَا)). قَالُوا: فَمَا تَأْمُرُنَا يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((أَدُّوا إِلَيْهِمْ حَقَّهُمْ وَسَلُوا اللهَ حَقَّكُمْ)).

[راجع: ٣٦٠٣]

तश्रीह : या'नी अल्लाह से दुआ करो कि अल्लाह उनको इंसाफ़ और हक़ पहचानने की तौफ़ीक़ दे। जैसे ज़ौरी की रिवायत में है या अल्लाह! इनके बदल तुम पर दूसरे हाकिम जो आदिल और मुंसिफ़ हों, मुक़र्रर कर। मुस्लिम और तबरानी की रिवायत में यूँ है कि या रसूलल्लाह! हम उनसे लड़ें नहीं। आपने फ़र्माया नहीं जब तक वो नमाज़ पढ़ते रहें। मा'लूम हुआ कि जब मुसलमान हाकिम नमाज़ पढ़ना भी छोड़ दे तो फिर उससे लड़ना और उसका ख़िलाफ़ करना दुरुस्त हो गया। बेनमाज़ी हाकिम की इताअत ज़रूरी नहीं है। इस पर तमाम अहले हदीष का इत्तिफ़ाक़ है। हाफ़िज़ ने कहा इसका ये मतलब नहीं है कि वो काफिर हो जाएगा बल्कि मतलब ये है कि जाहिलियत वालों की तरह मरेगा या'नी जैसे जाहिलियत वालों का कोई इमाम नहीं होता। उसी तरह उसका भी न होगा। दूसरी रिवायत में यूँ फ़र्माया है कि जो शख़्स जमाअत से बालिश्त बराबर जुदा हो गया उसने इस्लाम की रस्सी अपनी गर्दन से निकाल डाली। इब्ने बत्ताल ने कहा इस हदीष से ये निकला हाकिम गो ज़ालिम या फ़ासिक़ हो उससे बग़ावत करना दुरुस्त नहीं अल्बत्ता अगर सरीह कुफ़्र इख़्तियार करे तब उसकी इताअत जाइज़ नहीं बल्कि जिसको क़ुदरत हो उसको उस पर जिहाद करना वाजिब है। आजकल के कुछ अइम्मा मस्जिद लोगों से अपनी इमामत की बेअत लेकर बेअत न करने वालों को जाहिलियत की मौत का फ़त्वा सुनाते हैं और लोगों से ज़कात वसूल करते हैं। ये सब फ़रेब ख़ूरदा हैं। यहाँ मुराद ख़लीफ़ा इस्लाम है, जो सहीह मा'नों में इस्लामी तौर पर साहिबे इक़्तिदा हो।

7053. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उनसे अ बदुल वारिष बिन सईद ने बयान किया, उनसे जअदि सीरफ़ी ने, उनसे अबू रजाअ अतारदी ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स अपने अमीर में कोई नापसंद बात देखे तो सब्र करे (ख़लीफ़ा) की इताअत से अगर कोई बालिश्त भर भी बाहर निकला तो उसकी मौत जाहिलियत की मौत होगी। (दीगर मक़ामात : 7054, 7143)

٧٠٥٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، عَنْ عَبْدِ الْوَارِثِ، عَنِ الْجَعْدِ، عَنْ أَبِي رَجَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ كَرِهَ مِنْ أَمِيرِهِ شَيْئًا فَلْيَصْبِرْ، فَإِنَّهُ مَنْ خَرَجَ مِنَ السُّلْطَانِ شِبْرًا مَاتَ مِيتَةً جَاهِلِيَّةً)).

ख़लीफ़ा-ए-इस्लाम की इताअत से मक़सद ये है कि मा'मूली बातों को बहाना बनाकर क़ानून शिकनी करके लाक़ानूनियत (अराजकता) न पैदा की जाए वरना अहदे जाहिलियत की याद ताज़ा हो जाएगी फ़ित्ना व फ़साद ज़ोर पकड़ जाएगा।

7054. हमसे अबूल नोअमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे जअदि अबी उष्मान ने बयान किया, उनसे अबू रजाअ अतारदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना, उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने अपने अमीर की कोई नापसंद चीज़ देखी तो उसे चाहिये कि सब्र करे इसलिये कि जिसने जमाअत से एक बालिश्त भर जुदाई इख़्तियार की और

٧٠٥٤- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنِ الْجَعْدِ أَبِي عُثْمَانَ، حَدَّثَنِي أَبُو رَجَاءٍ الْعُطَارِدِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ رَأَى مِنْ أَمِيرِهِ شَيْئًا يَكْرَهُهُ

इसी हाल में मरा तो वो जाहिलियत की सी मौत मरेगा।
(राजेअ : 7053)

فَلْيَصْبِرْ عَلَيْهِ، فَإِنَّهُ مَنْ فَارَقَ الْجَمَاعَةَ شِبْرًا فَمَاتَ إِلاَّ مَاتَ مِيتَةً جَاهِلِيَّةً)).

[راجع: ٧٠٥٣]

तश्रीह : इमाम अहमद की रिवायत में इतना ज़्यादा है गो तुम अपने तईं हुकूमत का हक़दार समझो जब भी इस राय पर न चलो बल्कि हाकिमे वक़्त की इताअत करो, उसका हुक्म सुनो, यहाँ तक कि अगर अल्लाह को मंज़ूर है तो बिन लड़े भिड़े तुमको हुकूमत मिल जाए। इब्ने हिब्बान और इमाम अहमद की रिवायत मे है गो ये हाकिम तुम्हारा माल खाए, तुम्हारी पीठ पर मार लगाए या'नी तब भी सब्र करो। अगर कुफ़्र करे तो उससे लड़ने पर तुमको मुवाख़िज़ा न होगा। दूसरी रिवायत में यूँ है जब तक वो तुमको साफ़ और सरीह गुनाह की बात का हुक्म न दे। तीसरी रिवायत में है जो हाकिम अल्लाह की नाफ़र्मानी करे उसकी इताअत नहीं करना चाहिये। इब्ने अबी शैबा की रिवायत में यूँ है तुम पर ऐसे लोग हाकिम होंगे जो तुमको ऐसी बातों का हुक्म करेंगे जिनको तुम नहीं पहचानते और ऐसे काम करेंगे जिनको तुम बुरा जानते हो तो ऐसे हाकिमों की इताअत करना तुमको ज़रूरी नहीं ये जो फ़र्माया अल्लाह के पास तुमको दलील मिल जाएगी या'नी उससे लड़ने और उसकी मुख़ालफ़त करने की सनद तुमको मिल जाएगी। इससे ये निकला कि जब तक हाकिम के क़ौल व फ़ेअल की तावील शरई हो सके उस वक़्त तक उससे लड़ना या उस पर ख़ुरूज करना जाइज़ नहीं अल्बत्ता अगर साफ़ व सरीह वो शरअ के मुख़ालिफ़ हुक्म दे और क़वाइदे इस्लाम के बरख़िलाफ़ चले जब तू उस पर ए'तिराज़ करना और अगर न माने तो उससे लड़ना दुरुस्त है। दाऊदी ने कहा अगर ज़ालिम हाकिम का मअज़ूल करना बग़ैर फ़ित्ने और फ़साद के मुम्किन हो तब तो वाजिब है कि वो मअज़ूल कर दिया जाए वरना सब्र करना चाहिये। कुछ ने कहा इब्तिदा फ़ासिक़ को हाकिम बनाना दुरुस्त नहीं अगर हुकूमत मिलते वक़्त आदिल हो फिर फ़ासिक़ हो जाए उस पर ख़ुरूज करने में उलमा का इख़्तिलाफ़ है और सहीह ये है कि ख़ुरूज उस वक़्त तक जाइज़ नहीं जब तक ए'लानिया कुफ़्र न करे, अगर ए'लानिया कुफ़्र की बातें करने लगे उस वक़्त उसको मअज़ूल करना वाजिब है।

7055. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे अम्र बिन हारिष ने, उनसे बुकैर बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे बुस्र बिन सईद ने, उनसे जुनादा बिन अबी उमय्या ने बयान किया कि हम उबादह बिन सामित (रज़ि.) की ख़िदमत में पहुँचे वो मरीज़ थे और हमने अर्ज़ किया अल्लाह तआला आपको सेहत अता करे कोई हदीष बयान कीजिए जिसका नफ़ा आपको अल्लाह तआला पहुँचाए। उन्होंने बयान किया कि) मैंने नबी करीम (ﷺ) से लैलतुल उक़्बा में सुना है कि आपने हमें बुलाया और हमने आपसे बेअत की। (राजेअ : 18)

٧٠٥٥- حدَّثَنَا إسْماعيلُ، حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ عَمْرٍو عَنْ بُكَيْرٍ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ جُنَادَةَ بْنِ أَبِي أُمَيَّةَ قَالَ: دَخَلْنَا عَلَى عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ وَهُوَ مَرِيضٌ فَقُلْنَا: أَصْلَحَكَ اللهُ حَدِّثْ بِحَدِيثٍ يَنْفَعُكَ اللهُ بِهِ سَمِعْتَهُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ دَعَانَا النَّبِيُّ ﷺ فَبَايَعْنَاهُ.

[راجع: ١٨]

7056. उन्होंने बयान किया कि जिन बातों का आँहज़रत (ﷺ) ने हम से अहद लिया था उनमें ये भी था कि ख़ुशी व नागवारी, तंगी और कुशादगी और अपनी हक़ तलफ़ी में भी इताअत व फ़र्मांबरदारी करें और ये भी कि हुक्मरानों के साथ हुकूमत के बारे में उस वक़्त तक झगड़ा न करें जब तक उनको ए'लानिया

٧٠٥٦- فقال: فِيمَا أَخَذَ عَلَيْنَا أَنْ بَايَعَنَا عَلَى السَّمْعِ وَالطَّاعَةِ فِي مَنْشَطِنَا وَمَكْرَهِنَا وَعُسْرِنَا وَيُسْرِنَا، وَأَثَرَةٍ عَلَيْنَا وَأَنْ لاَ نُنَازِعَ الأَمْرَ أَهْلَهُ إِلاَّ أَنْ تَرَوْا

الْحِمَارِ بِرَحَاهُ فَيُطِيفُ بِهِ أَهْلُ النَّارِ فَيَقُولُونَ أَيْ فُلَانُ أَلَسْتَ كُنْتَ تَأْمُرُ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَى عَنِ الْمُنْكَرِ؟ فَيَقُولُ: إِنِّي كُنْتُ آمُرُ بِالْمَعْرُوفِ وَلَا أَفْعَلُهُ وَأَنْهَى عَنِ الْمُنْكَرِ وَأَفْعَلُهُ)).

[راجع: ٣٢٦٧]

शख़्स को (क़यामत के दिन) लाया जाएगा और उसे आग में डाल दिया जाएगा। फिर वो उसमें इस तरह चक्की पीसेगा जैसे गधा पीसता है। फिर दोज़ख़ के लोग उसके चारों तरफ़ जमा हो जाएँगे और कहेंगे, ऐ फ़लाँ! क्या तुम नेकियों का हुक्म करते और बुराइयों से रोका नहीं करते थे? वो शख़्स कहेगा कि मैं अच्छी बात के लिये कहता तो ज़रूर था लेकिन ख़ुद नहीं करता था और बुरी बात से रोकता भी था लेकिन ख़ुद करता था। (राजेअ : 3267)

तशरीह : हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) का मतलब ये था कि मेरी निस्बत तुम लोग ये ख़याल न करना कि मैं उ़ष्मान (रज़ि.) को नेक बात समझाने में मुराहिनत और सुस्ती करता हू और उ़ष्मान (रज़ि.) की इस वजह से कि वो हाकिम हैं ख़्वाह मख़्वाह ख़ुशामद के तौर पर ता'रीफ़ करता हूँ। कुछ ने कहा मतलब ये है कि जो शख़्स दो आदमियों पर भी हाकिम बने मैं उसकी ता'रीफ़ करने वाला नहीं, इसलिये कि हुकूमत बड़े मुवाख़िज़ा की चीज़ है। हाकिम को अ़दल और इंसाफ़ और रिआया की पूरी ख़बरगीरी का इंतिज़ाम करना चाहिये तो हाकिम शख़्स के लिये यही ग़नीमत है कि हुकूमत की वजह से और मुवाख़िज़ा में गिरफ़्तार न हो, चहजा ये कि भलाई और षवाब हासिल करे। उसामा (रज़ि.) ने उस दोज़ख़ी आदमी से ये हदीष बयान करके लोगों को ये समझाया कि तुम मेरी निस्बत ये गुमान न करना कि मैं उ़ष्मान (रज़ि.) को नेक सलाह देने में कोताही करता हूँ क्या मैं क़यामत के दिन अपना हाल उस शख़्स का सा कर लूँगा जो अंतड़ियों को उठाए हुए गधे की तरह घूमेगा या'नी अगर मैं तुम लोगों को ये कहूँगा कि बुरी बात देखने पर मना किया करो और जो कोई बुरा काम करे उसको समझाकर उसे ऐसे काम से दूर रखा करो और ख़ुद मैं ऐसा न करूँ बल्कि बुरे कामों को देखकर ख़ामोश रह जाऊँ तो मेरा हाल उसी शख़्स का सा होना है।

बाब 18

١٨- باب

٧٠٩٩- حدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ الْهَيْثَمِ، حَدَّثَنَا عَوْفٌ، عَنِ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: لَقَدْ نَفَعَنِي اللهُ بِكَلِمَةٍ أَيَّامَ الْجَمَلِ لَمَّا بَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ أَنَّ فَارِسًا مَلَّكُوا ابْنَةَ كِسْرَى قَالَ: ((لَنْ يُفْلِحَ قَوْمٌ وَلَّوْا أَمْرَهُمُ امْرَأَةً)).

[راجع: ٤٤٢٥]

7099. हमसे उ़ष्मान बिन हैशम ने बयान किया, कहा हमसे औ़फ़ ने बयान किया, कहा उनसे हसन ने और उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे जमल के ज़माने में मुझे एक कलिमा ने फ़ायदा पहुँचाया जब नबी करीम (ﷺ) को मा'लूम हुआ कि फ़ारस की सल्तनत वालों ने बौरान नामी किसरा की बेटी को बादशाह बना लिया है तो आपने फ़र्माया कि वो क़ौम कभी फ़लाह नहीं पाएगी जिसकी हुकूमत एक औ़रत के हाथ में हो। (राजेअ : 4425)

तशरीह : जंगे जमल में हज़रत आइशा (रज़ि.) हज़रत अ़ली (रज़ि.) के मुक़ाबिल फ़रीक़ की सरदार थीं, नतीजा नाकामी हुआ। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के क़ौल का यही मतलब है। हज़रत आइशा (रज़ि.) को भड़काने वाले चंद मुनाफ़िक़ क़िस्म के फ़सादी लोग थे। जिन्होंने हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के ख़ून का बदला लेने के बहाने मुसलमानों को आपस में लड़ाना चाहा और हज़रत आइशा (रज़ि.) पर अपना जादू चलाकर उनको फ़ौज का सरदार बना लिया और जंगे जमल वाक़ेअ हुई, जिसमें सरासर मुनाफ़िक़ यहूदी सिफ़त लोगों का हाथ था।

٧١٠٠- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ،

7100. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने

कहा कि आप दोनों भाई कपड़े पहनकर जुम्आ पढ़ने चलें। (राजेअ : 7102,103,104)

وَالأُخْرَى عَمَّارًا وَقَالَ : رُوَحا فِيهِ إِلَى الْجُمُعَةِ.

[راجع: ٧١٠٢، ٧١٠٣، ٧١٠٤]

तश्रीह : हुआ ये था कि अबू मूसा अश्अरी (रज़ि.) हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) की त़रफ़ से कूफ़ा के ह़ाकिम थे। हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने उन्हीं को क़ायम रखा। जब हज़रत आइशा (रज़ि.) एक बड़ी फ़ौज के साथ बस्रा तशरीफ़ ले गईं और त़लह़ा (रज़ि.) और ज़ुबैर (रज़ि.) दोनों हज़रत अ़ली (रज़ि.) की बेअ़त तोड़कर उनके साथ गये तो हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने अबू मूसा (रज़ि.) को कहला भेजा कि मुसलमानों को जंग के लिये तैयार रख और ह़क़ की मदद कर। अबू मूसा (रज़ि.) ने साइब बिन मालिक अश्अरी से राय ली। उन्होंने भी राय दी कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के ह़ुक्म पर चलना चाहिये लेकिन अबू मूसा (रज़ि.) ने न सुना और उल्टा लोगों से ये कहने लगे कि जंग का इरादा न करो। आख़िर हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने क़ुर्ज़ा बिन कअ़ब को कूफ़ा का ह़ाकिम किया और अबू मूसा (रज़ि.) को मअ़ज़ूल किया। उधर त़लह़ा (रज़ि.) और ज़ुबैर (रज़ि.) ने बस्रा जाकर क्या किया कि हज़रत अ़ली (रज़ि.) के नाइब इब्ने ह़नीफ़ा को गिरफ़्तार कर लिया। ये तो ए'लानिया बग़ावत और अ़हदशिकनी ठहरी और ऐसे लोगो से लड़ना बमौजिब नस्से क़ुर्आनी, **फ़क़ातिलुल लती तबग़ी हत्ता तफ़िअ इला अम्रिल्लाह** (अल हुजुरात : 9) ज़रूर था और अ़म्मार (रज़ि.) की राय बिलकुल साइब थी कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की ता'मीले ह़ुक्म में देर न करना चाहिये और आँह़ज़रत (ﷺ) ने ख़ुद अ़ली (रज़ि.) से फ़र्माया था या अ़ली! तुम बेअ़त तोड़ने वालों और बाग़ियों से लड़ोगे। कहते हैं जब जंगे जमल शुरू हुई सन 36 हिजरी 15 जमादिल ऊला को तो एक शख़्स हज़रत अ़ली (रज़ि.) के पास आया कहने लगे तुम उन लोगों से कैसे लड़ते हो उन्होंने कहा मैं ह़क़ पर लड़ता हूँ। वो कहने लगा वो भी यही कहते हैं हम ह़क़ पर लड़ते हैं। अ़ली (रज़ि.) ने कहा, मैं उनसे बेअ़त शिकनी और जमाअ़त को छोड़ देने पर लड़ता हूँ। ग़फ़रल्लाहु लहुम अज्मईन।

बाब 19 : जब अल्लाह किसी क़ौम पर अ़ज़ाब नाज़िल करता है तो सब क़िस्म के लोग उसमें शामिल हो जाते हैं

١٩- باب إِذَا أَنْزَلَ اللهُ بِقَوْمٍ عَذَابًا

7108. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़स्मान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब अल्लाह किसी क़ौम पर अ़ज़ाब नाज़िल करता है तो अ़ज़ाब उन सब लोगों पर आता है जो उस क़ौम में होते हैं फिर उन्हें उनके आ'माल के मुत़ाबिक़ उठाया जाएगा। (राजेअ़ : 2704)

٧١٠٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُثْمَانَ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا أَنْزَلَ اللهُ بِقَوْمٍ عَذَابًا أَصَابَ الْعَذَابُ مَنْ كَانَ فِيهِمْ ثُمَّ بُعِثُوا عَلَى أَعْمَالِهِمْ)).

[راجع: ٢٧٠٤]

आयते क़ुर्आनी, **वत्तक़ू फ़ित्नतल ला तुसीबन्नल लज़ीन ज़लमू मिन्कुम ख़ास्सा** में इसी ह़क़ीक़त को बयान किया गया है। सच है कि चने के साथ गेहूँ पिस जाता है।

बाब 20 : नबी करीम (ﷺ) का हज़रत ह़सन (रज़ि.) के बारे में फ़र्माना

٢٠- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ لِلْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ ((إِنَّ ابْنِي هَذَا لَسَيِّدٌ وَلَعَلَّ اللهَ

أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ)).

मेरा ये बेटा सरदार है और यक़ीनन अल्लाह पाक इसके ज़रिये मुसलमानों की दो जमाअतों में सुलह कराएगा।

जो आपस में लड़ाई चाहते होंगे मगर उनके इक़्दामे सुलह से वो जंग ख़त्म हो जाएगी। हज़रत हसन (रज़ि.) ने हज़रत मुआविया (रज़ि.) से सुलह करके फ़साद को ख़त्म करा दिया जो बेहद क़ाबिले ता'रीफ़ है।

٧١٠٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ أَبُو مُوسَى وَلَقِيتُهُ بِالْكُوفَةِ جَاءَ إِلَى ابْنِ شُبْرُمَةَ فَقَالَ: أَدْخِلَنِي عَلَى عِيسَى فَأَعِظَهُ فَكَأَنَّ ابْنَ شُبْرُمَةَ خَافَ عَلَيْهِ فَلَمْ يَفْعَلْ قَالَ: حَدَّثَنَا الْحَسَنُ قَالَ : لَمَّا سَارَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا إِلَى مُعَاوِيَةَ بِالْكَتَائِبِ قَالَ عَمْرُو بْنُ الْعَاصِ لِمُعَاوِيَةَ: أَرَى كَتِيبَةً لاَ تُوَلِّي حَتَّى تُدْبِرَ أُخْرَاهَا قَالَ مُعَاوِيَةُ: مَنْ لِذَرَارِيِّ الْمُسْلِمِينَ؟ فَقَالَ: أَنَا فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَامِرٍ وَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سَمُرَةَ نَلْقَاهُ فَنَقُولُ لَهُ الصُّلْحَ قَالَ الْحَسَنُ: وَلَقَدْ سَمِعْتُ أَبَا بَكْرَةَ قَالَ: بَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ جَاءَ الْحَسَنُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ، وَلَعَلَّ اللهَ أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ)).

7109. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल अबू मूसा ने बयान किया और मेरी उनसे मुलाक़ात कूफ़ा में हुई थी। वो इब्ने शुबरमा के पास आए और कहा कि मुझे ईसा (मंसूर के भाई और कूफ़ा के वाली) के पास ले चलो ताकि मैं उसे नसीहत करूँ। ग़ालिबन इब्ने शुबरमा ने डर महसूस किया और नहीं ले गये। उन्होंने उस पर बयान किया कि हमसे हसन बसरी ने बयान किया कि जब हसन बिन अ़ली अमीर मुआविया (रज़ि.) के ख़िलाफ़ लश्कर लेकर निकले तो अ़म्र बिन आ़स ने अमीर मुआविया (रज़ि.) से कहा कि मैं ऐसा लश्कर देखता हूँ जो उस वक़्त तक वापस नहीं जा सकता जब तक अपने मुक़ाबिल को भगा न ले। फिर अमीर मुआविया (रज़ि.) ने कहा कि मुसलमानों के अहलो अ़याल का कौन कफ़ील होगा? जवाब दिया कि मैं। फिर अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर और अ़ब्दुर्रहमान बिन समुरह ने कहा कि हम अमीर मुआविया (रज़ि.) से मिलते हैं (और उनसे सुलह के लिये कहते हैं) हसन बसरी (रज़ि.) ने कहा कि मैंने अबूबक्र (रज़ि) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ख़ुत्बा दे रहे थे कि हसन (रज़ि.) आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरा ये बेटा सय्यद है और उम्मीद है कि इसके ज़रिये अल्लाह मुसलमानों की दो जमाअ़तों में सुलह कराएगा।

तश्रीह: हज़रत हसन (रज़ि.) के इस इक़्दाम से मुसलमानों में एक बड़ी जंग टल गई जबकि हालात हज़रत हसन (रज़ि.) के लिये साज़गार थे मगर आपने उस ख़ानाजंगी को हुस्ने तदब्बुर से ख़त्म कर दिया। अल्लाह पाक आपकी रूहे पाक पर हज़ारों रहमतें नाज़िल फ़र्माए। इस तरह रसूले करीम (ﷺ) की ये पेशीनगोई सच्ची हो गई जो इस हदीष में मज़्कूर है। **अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन।** फिर ये दोनों हज़रत हसन (रज़ि.) के पास आए और सुलह की तज्वीज़ ठहर गई और उन्होंने सुलह कर ली। हज़रत हसन (रज़ि.) के मुक़द्दम लश्कर के सरदार क़ैस बिन सअ़द थे। ये दोनों लश्कर कूफ़ा के क़रीब एक दूसरे से मिले। हज़रत हसन (रज़ि.) ने उन लश्करों की ता'दाद पर नज़र डालकर हज़रत मुआविया (रज़ि.) को पुकारा फ़र्माया मैंने अपने परवरदिगार पास जो मिलने वाला है उसको इख़्तियार किया अगर ख़िलाफ़त अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिखी है तो मुझको मिलने वाली नहीं और अगर मेरे लिये लिखी है तो मैंने तुमको दे डाली। उस वक़्त हज़रत मुआविया (रज़ि.) के लश्कर वालों ने तक्बीर कही और मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) ने ये हदीष सुनाई, **इन्नबनी हाज़ा सय्यिदुन** अख़ीर तक। फिर हज़रत हसन (रज़ि.) ने ख़ुत्बा सुनाया और

ख़िलाफ़त मुआविया (रज़ि.) के सुपुर्द कर दी, इस शर्त पर कि वो अल्लाह की किताब और सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) पर अमल करते रहें। लोग हज़रत हसन (रज़ि.) को कहने लगे **या आरिल मुस्लिमीन** या'नी मुसलमानों के नंग। आपने जवाब दिया **अल आर ख़ैरुम् मिनन्नार**। जो सुलहनामा क़रार पाया था उसमें ये भी शर्त थी कि हज़रत मुआविया (रज़ि.) के बाद फिर ख़िलाफ़त हज़रत हसन को मिलेगी। मुहम्मद बिन कुदामा ने ब सनद सहीह और इब्ने अबी ख़ुप़ैमा ने ऐसा ही रिवायत किया है कि हज़रत हसन (रज़ि.) ने हज़रत मुआविया (रज़ि.) से इसी शर्त पर बेअ़त की थी।

٧١١٠- حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ : قَالَ عَمْرٌو أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَلِيٍّ ان حَرْمَلَةَ مَوْلَى أُسَامَةَ أَخْبَرَهُ قَالَ عَمْرٌو: وَقَدْ رَأَيْتُ حَرْمَلَةَ قَالَ: أَرْسَلَنِي أُسَامَةُ إِلَى عَلِيٍّ وَقَالَ: إِنَّهُ سَيَسْأَلُكَ الآنَ فَيَقُولُ :مَا خَلَّفَ صَاحِبَكَ؟ فَقُلْ لَهُ : يَقُولُ لَكَ لَوْ كُنْتَ فِي شِدْقِ الأَسَدِ لأَحْبَبْتُ أَنْ أَكُونَ مَعَكَ فِيهِ، وَلَكِنْ هَذَا أَمْرٌ لَمْ أَرَهُ فَلَمْ يُعْطِنِي شَيْئًا فَذَهَبْتُ إِلَى حَسَنٍ وَحُسَيْنٍ وَابْنِ جَعْفَرٍ فَأَوْقَرُوا لِي رَاحِلَتِي.

7110. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने, कहा कि अ़म्र ने बयान किया, उन्हें मुहम्मद बिन अ़ली ने ख़बर दी, उन्हें उसामा (रज़ि.) के ग़ुलाम हरमला ने ख़बर दी। अ़म्र ने बयान किया कि मैंने हरमला को देखा था। हरमला ने बयान किया कि मुझे उसामा ने अ़ली (रज़ि.) के पास भेजा और मुझसे कहा, उस वक़्त तुमसे अ़ली (रज़ि.) पूछेंगे कि तुम्हारे साथी (उसामा रज़ि.) जंगे जमल व सिफ़्फ़ीन से क्यूँ पीछे रह गये थे तो उनसे कहना कि उन्होंने आपसे कहा है कि अगर आप शेर के मुँह में हों तब भी मैं उसमें भी आपके साथ रहू लेकिन ये मामला ही ऐसा है या'नी मुसलमानों की आपस की जंग तो (उसमें शिर्कत सहीह) नहीं मा'लूम हुई (हरमला कहते हैं कि) चुनाँचे उन्होंने कोई चीज़ नहीं दी। फिर मैं, हसन, हुसैन और अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र (रज़ि.) के पास गया तो उन्होंने मेरी सवारी पर इतना माल लदवा दिया जितना कि ऊँट उठा न सकता था।

तश्रीह: हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) हज़रत उम्मे ऐमन के बत़न से पैदा हुए जो आप (ﷺ) के वालिद जनाब अ़ब्दुल्लाह की आज़ादकर्दा लौण्डी थी जिसने आँहज़रत (ﷺ) की परवरिश की थी। हज़रत उसामा आँहज़रत (ﷺ) के महबूबतरीन ख़ादिम थे। वफ़ाते नबवी के वक़्त उनकी उ़म्र बीस साल की थी। वादियुल क़ुरा में सन 54 हिजरी में शहीद हुए, रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहू।

बाब 21 : कोई शख़्स लोगों के सामने एक बात कहे फिर उसके पास से निकलकर दूसरी बात कहने लगे तो ये दग़ाबाज़ी है।

٢١- باب إِذَا قَالَ عِنْدَ قَوْمٍ شَيْئًا ثُمَّ خَرَجَ فَقَالَ بِخِلاَفِهِ

٧١١١- حدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ قَالَ: لَمَّا خَلَعَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَزِيدَ بْنَ مُعَاوِيَةَ جَمَعَ ابْنُ عُمَرَ حَشَمَهُ وَوَلَدَهُ فَقَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((يُنْصَبُ لِكُلِّ غَادِرٍ لِوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ،

7111. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने कि जब अहले मदीना ने यज़ीद बिन मुआविया की बेअ़त से इंकार किया तो अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने अपने ख़ादिमों और लड़कों को जमा किया और कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है। आपने फ़र्माया कि हर बहाना करने वाले के लिये क़यामत के दिन एक झण्डा खड़ा किया जाएगा

وَإِنَّا قَدْ بَايَعْنَا هَذَا الرَّجُلَ عَلَى بَيْعِ اللهِ وَرَسُولِهِ، وَإِنِّي لاَ أَعْلَمُ غَدْرًا أَعْظَمَ مِنْ أَنْ يُبَايَعَ رَجُلٌ عَلَى بَيْعِ اللهِ وَرَسُولِهِ، ثُمَّ يُنْصَبُ لَهُ الْقِتَالُ وَإِنِّي لاَ أَعْلَمُ أَحَدًا مِنْكُمْ خَلَعَهُ وَلاَ بَايَعَ فِي هَذَا الأَمْرِ إِلاَّ كَانَتِ الْفَيْصَلَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ)).

[راجع: ٣١٨٨]

और हमने उस शख़्स (यज़ीद) की बेअत अल्लाह और उसके रसूल के नाम पर की है और मेरे इल्म में कोई बहाना इससे बढ़कर नहीं है कि किसी शख़्स से अल्लाह और उसके रसूल के नाम पर बेअत की जाए और फिर उससे जंग की जाए और देखो मदीनावालों! तुममें से जो कोई यज़ीद की बेअत को तोड़े और दूसरे किसी से बेअत करे तो मुझमें और उसमें कोई रिश्ता नहीं रहा, मैं उससे अलग हूँ। (राजेअ : 3188)

तश्रीह : हुआ ये था कि पहले पहल मदीना वालों ने यज़ीद का अच्छा समझा तो उससे बेअत कर ली थी फिर लोगों को उसके हाल पूछने के बाद यज़ीद के नाइब उस्मान बिन मुहम्मद इब्ने अबी सुफ़यान को मदीना से निकाल दिया और यज़ीद की बेअत तोड़ दी।

٧١١٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا أَبُو شِهَابٍ، عَنْ عَوْفٍ عَنْ أَبِي الْمِنْهَالِ قَالَ: لَمَّا كَانَ ابْنُ زِيَادٍ وَمَرْوَانُ بِالشَّأْمِ وَوَثَبَ ابْنُ الزُّبَيْرِ بِمَكَّةَ وَوَثَبَ الْقُرَّاءُ بِالْبَصْرَةِ، فَانْطَلَقْتُ مَعَ أَبِي إِلَى أَبِي بَرْزَةَ الأَسْلَمِيِّ حَتَّى دَخَلْنَا عَلَيْهِ فِي دَارِهِ وَهُوَ جَالِسٌ فِي ظِلِّ عُلِّيَّةٍ لَهُ مِنْ قَصَبٍ، فَجَلَسْنَا إِلَيْهِ فَأَنْشَأَ أَبِي يَسْتَطْعِمُهُ الْحَدِيثَ فَقَالَ: يَا أَبَا بَرْزَةَ أَلاَ تَرَى مَا وَقَعَ فِيهِ النَّاسُ؟ فَأَوَّلُ شَيْءٍ سَمِعْتُهُ تَكَلَّمَ بِهِ إِنِّي احْتَسَبْتُ عِنْدَ اللهِ أَنِّي أَصْبَحْتُ سَاخِطًا عَلَى أَحْيَاءِ قُرَيْشٍ إِنَّكُمْ يَا مَعْشَرَ الْعَرَبِ كُنْتُمْ عَلَى الْحَالِ الَّذِي عَلِمْتُمْ مِنَ الذِّلَّةِ وَالْقِلَّةِ وَالضَّلاَلَةِ، وَإِنَّ اللهَ أَنْقَذَكُمْ بِالإِسْلاَمِ وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ حَتَّى بَلَغَ بِكُمْ مَا تَرَوْنَ وَهَذِهِ الدُّنْيَا الَّتِي أَفْسَدَتْ بَيْنَكُمْ إِنَّ ذَاكَ الَّذِي بِالشَّأْمِ وَاللهِ إِنْ يُقَاتِلُ إِلاَّ عَلَى الدُّنْيَا، وَإِنَّ هَؤُلاَءِ الَّذِينَ بَيْنَ أَظْهُرِكُمْ

7112. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे शिहाब ने, बयान किया उनसे औफ़ ने बयान किया, उनसे अबी मिन्हाल ने बयान किया कि जब अब्दुल्लाह बिन ज़ियाद और मरवान शाम में थे और इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) ने मक्का में और ख़वारिज ने बसरा में क़ब्ज़ा कर लिया था तो मैं अपने वालिद के साथ हज़रत अबू बर्ज़ा असलमी (रज़ि.) के पास गया। जब हम उनके घर में एक कमरे के साये में बैठे हुए थे जो बांस का बना हुआ था, हम उनके पास बैठ गये और मेरे वालिद उनसे बात करने लगे और कहा ऐ अबू बर्ज़ा! आप नहीं देखते लोग किन बातों में आफ़त और इख़्तिलाफ़ में उलझ गये हैं। मैंने उनकी ज़ुबान से सबसे पहली बात ये सुनी कि मैं जो उन क़ुरैश के लोगों से नाराज़ हूँ तो महज़ अल्लाह की रज़ामन्दी के लिये, अल्लाह मेरा अज्र देने वाला है। अरब के लोगों! तुम जानते हो पहले तुम्हारा क्या हाल था तुम गुमराही में गिरफ़्तार थे, अल्लाह ने इस्लाम के ज़रिये और हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के ज़रिये तुमको उस बुरी हालत से नजात दी। यहाँ तक कि तुम इस रुत्बे को पहुँचे। (दुनिया के हाकिम और सरदार बन गये) फिर इसी दुनिया ने तुमको ख़राब कर दिया। देखो! ये शख़्स जो शाम में हाकिम बन बैठा है या'नी मरवान दुनिया के लिये लड़ रहा है। ये लोग जो तुम्हारे सामने हैं (ख़वारिज) वल्लाह! ये लोग सिर्फ़ दुनिया के लिये लड़ रहे हैं और वो जो मक्का में है अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) वल्लाह! वो भी सिर्फ़ दुनिया के

बदलना और अ़रब में फिर बुतपरस्ती का शुरू होना

الأَوْثَان

7116. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बरदी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यब ने बयान किया और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत क़ायम नहीं होगी यहाँ तक कि क़बीला दौस की औरतों का ज़ुल ख़ल्सा का (त़वाफ़ करते हुए) खोए से खूब उछलेगा और ज़ुल ख़ल्सा क़बीला दौस का बुत था जिसको वो ज़माना जाहिलियत में पूजा करते थे।

٧١١٦- حدَّثَنَا أبُو الْيَمَانِ، أخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : قَالَ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أخْبَرَنِي أبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَضْطَرِبَ أَلْيَاتُ نِسَاءِ دَوْسٍ عَلَى ذِي الْخَلَصَةِ، وَذُو الْخَلَصَةِ طَاغِيَةُ دَوْسٍ الَّتِي كَانُوا يَعْبُدُونَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ)).

तश्रीह़ : कूल्हे मटकाने से मुराद ये है कि उसके गिर्द त़वाफ़ करेंगी मा'लूम हुआ कि का'बा के सिवा और किसी क़ब्र या झण्डे या शद्दे या बुत का त़वाफ़ करना शिर्क है। इस ह़दीष़ से ये भी निकला कि पहले शिर्क और बुतपरस्ती औरतों से निकलेगी क्योंकि औरतें ज़ईफ़ुल ए'तिक़ाद होती हैं, जल्दी से कुफ़्र की बातें इख़्तियार कर लेती हैं, ह़दीष़ से ये भी निकला कि क़यामत तक कुछ न कुछ इस्लाम बाक़ी रहेगा मगर ज़ईफ़ हो जाएगा। जैसे दूसरी ह़दीष़ में है, **बदअल इस्लामु ग़रीबन व सयऊ़दु कमा बदअ।** अ़रब ही के मुल्क से सारे जहान में तौह़ीद फैली है। क़यामत के क़रीब वहाँ भी शिर्क होने लगेगा। दूसरे मुल्कों का क्या कहना वो तो अब भी शिर्क और मुश्रिकों से पटे पड़े हैं। दूसरी रिवायत मे यूँ है कि क़यामत क़ायम न होगी जब तक लात और उ़ज़्ज़ा की फिर से पूजा न शुरू होगी। तीसरी रिवायत में यूँ है यहाँ तक कि मेरी उम्मत के कई क़बीले बुत परस्ती शुरू न कर देंगे। ह़ाकिम की रिवायत में यूँ है यहाँ तक कि बनी आ़मिर की औरतों के मूँढ़े ज़ुल ख़ल्सा के पास न लड़ें और और टक्कर न खाएँ। एक रिवायत में यूँ है यहाँ तक कि मेरी उम्मत के कई क़बीले मुश्रिकों से न मिल जाएँ। मआ़ज़ल्लाह! हमारे पैग़म्बर स़ाह़ब दुनिया में इसीलिये तशरीफ़ लाए थ कि अल्लाह की तौह़ीद जारी करें शिर्क और कुफ़्र और बुतपरस्ती की कमर तोड़ें। बस जो शख़्स शिर्क और शिर्क के मक़ामात को मिटाए, बुतों और थानों और झण्डों और क़ब्रों और गुम्बदों को जहाँ पर शिर्क किया जाता है, उनसे दिली नफ़रत करे वही दरह़क़ीक़त पैग़म्बर स़ाह़ब का पैरोकार है और यूँ तो हर कोई दा'वा करता है मैं पैग़म्बर का आ़शिक़ हूँ, पर ए'लानिया शिर्क होते देखता है और मुँह से एक ह़र्फ़ नहीं निकालता ऐसा ज़ुबानी दा'वा कुछ काम नहीं आएगा।

7117. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे अबुल ग़ैष़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से फ़र्माया क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी यहाँ तक कि क़ह़तान का एक शख़्स (बादशाह बनकर) निकलेगा और लोगों को अपने डंडे से हाँकेगा। (राजेअ़ : 3517)

٧١١٧- حدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ، عَنْ ثَوْرٍ، عَنْ أَبِي الْغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَخْرُجَ رَجُلٌ مِنْ قَحْطَانَ يَسُوقُ النَّاسَ بِعَصَاهُ)).

[راجع: ٣٥١٧]

तश्रीह : ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का नाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन स़ख़र है। जंगे ख़ैबर में मुसलमान होकर अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा में दाख़िल हुए और सुह़बते नबवी में हमेशा ह़ाज़िर रहे। 78 साल की उ़म्र में 58 हिजरी में इंतिक़ाल फ़र्माया। एक छोटी सी बिल्ली पाल रखी थी, उसी से अबू हुरैरह (रज़ि .) मशहूर हुए रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहू। क़यामत के क़रीब

याजूज माजूज के किसी शख़्स का न मरना जब तक वो हज़ार आदमी अपनी नस्ल से न देख ले। ये भी मुम्किन है कि उसी वक़्त तक का बयान हो जब तक आदमी की उम्र हज़ार दो हज़ार साल तक हुआ करती थी न कि हमारे ज़माने का जब उम्रे इंसानी की मिक़्दार सौ बरस या एक सौ बीस बरस रह गई है। आख़िर याजूज माजूज भी इंसान हैं हमारी उम्रों की तरह उनकी उम्रें भी घटी होंगी अब ये जो आषार स़हाबा और ताबेईन से मन्क़ूल हैं कि उनके क़द व क़ामत और कान ऐसे हैं, उनकी सनदें स़हीह़ और क़ाबिले ए'तिमाद नहीं हैं और भूगोल वालों ने जिन क़ौमों को देखा है उन्हीं में से दो बड़ी क़ौमें याजूज माजूज हैं।

94. किताबुल अहकाम

किताब हुकूमत और क़ज़ा के बयान में

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तश्रीह: किताबुल अह़काम के ज़ैल में ह़ज़रत ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रज़ि.) फ़र्माते हैं, **वल अहकामु जम्उ हुक्मिन वल्मुरादु बयानु आदाबिही व शुरूतिही व कजल हाकिम व यतवानलु लफ़्ज़ुल ह़ाकिम अल्ख़लीफ़त वल क़ाज़ी फ़जिक्रूहा यतअल्लकु बिकुल्लिम मिन्हा वलहुक्मुश्शरइय्यु इन्दल उसूलिय्यिन ख़िताबुल्लाहि तआला अल्मुतअल्लिकु बिअफ़्आलिल मुकल्लफ़ीन बिल इक़्तिज़ाइ वत्तख़ईरि व माद्दतुल हुक्मि मिनल अह़कामि व हुवल इत्कानु लिश्शैइ व मनअहू मिनल ऐबि बाबु क़ौलिल्लाहि तआला अतीउल्लाह व अतीउर्रसूल व उलिल अम्रि मिन्कुम फ़ी हाज़ा इशारतुन मिनल मुस़न्निफ़ि इला तर्जीहिल क़ौलिस़्साइरि इला अन्नल आयत नज़लत फ़ी ताअतिल उमराइ ख़िलाल लिमन क़ाल नज़लत फ़िल उलमाइ व क़द रज्ह ज़ालिक अयज़न अत्तब्री** (फ़त्हुल बारी) ख़ुलास़ा ये है कि लफ़्ज़ अह़काम हुक्म की जमा है मुराद हुकूमत के आदाब और शराइत़ हैं जो इस किताब में बयान होंगे ऐसा ही लफ़्ज़ ह़ाकिम है जो ख़लीफ़ा और क़ाज़ी दोनों पर मुश्तमिल है। पस उनके बारे में ज़रूरी उमूर यहाँ ज़िक्र किये जाएंगे और हुक्मे शरई उसूलियों के नज़दीक मुकल्लिफ़ीन के लिये उमूरे ख़ुदावन्दी हैं जो ज़रूरी हों या मुस्तह़ब और लफ़्ज़ अह़काम का माद्दा लफ़्ज़ हुक्म है और वो किसी कारे पसंदीदा को बजा लाना या मम्नूआते शरइया से रुक जाना दोनों पर बोला जाता है।

बाब 1 : अल्लाह तआला ने सूरह निसा में फ़र्माया कि अल्लाह तआला और उसके रसूल की इत़ाअत करो और अपने सरदारों का हुक्म मानो. (सूरह : 59)

١ – باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:
﴿أَطِيعُوا اللهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الأَمْرِ مِنْكُمْ﴾ [النساء : ٥٩].

तश्रीह: इस्लाम का आख़िरी नस़बुल ऐन एक ख़ालिस़ अ़द्ल (न्याय), मसावात (बराबरी) व आज़ादी पर मब्नी हुकूमत का क़याम भी है जैसा कि बहुत सी आयाते कुर्आनी से ये अम्र साबित है। चुनाँचे यही हुआ कि रसूले करीम (ﷺ) अपने अ़हदे आख़िर में अ़रब मे एक आज़ाद इस्लामी हुकूमत क़ायम फ़र्माकर दुनिया से रुख़्सत हुए और बाद में ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन से उसका दायरा अ़रब व अ़जम में दूर दूर तक वसीअ होता गया। रसूले करीम (ﷺ) ने इस

सिलसिले की भी बेशतर हिदायात फ़र्माईं। ऐसी ही अहादीष को हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस किताबुल अहकाम में जमा फ़र्माया है जिसे आयते कुर्आनी, **या अय्युहल्लज़ीन आमनू अतीउल्लाह व अतीउर्रसूल व उलिल अम्रि मिन्कुम** (सूरह निसा : 59) से शुरू फ़र्माया। अल्लाह और रसूल की इताअत के बाद ख़ुलफ़ा-ए-इस्लाम की इताअत भी ज़रूरी क़रार दी थी जो क़ौमी व मिल्ली नज़्म व नस्क़ को क़ायम रखने के लिये बेहद ज़रूरी है साथ ही ये उसूल भी क़रार पाया कि **ला त़ाअत लिल मख़्लूक़ि फ़ी मअ़सियतिल ख़ालिक़ि** ख़ुलफ़ा-ए-इस्लाम या दीगर अइम्मा-ए-इस्लाम की इताअत किताब व सुन्नत की हद तक है अगर किसी जगह उसकी इताअत में किताबो सुन्नत से टकराव होता हो तो वहाँ बहरहाल उनकी फ़र्माँबरदारी को छोड़ना और किताब व सुन्नत को लाज़िम पकड़ना ज़रूरी होगा। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) का इर्शादे गिरामी बिलकुल बजा है कि जब मेरा कोई मसला कोई फ़त्वा कुर्आन व हदीष के ख़िलाफ़ हो तो मेरी बात को छोड़कर कुर्आन व हदीष को लाज़िम पकड़ो। दीगर अइम्मा-ए-किराम के भी ऐसे ही इर्शादात हैं जो किताब हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा और रिसाला इंसाफ़ व अक़दुल जय्यिद मुअल्लफ़ात हज़रत हुज्जतुल हिन्द शाह वली उल्लाह मुहद्दिष देहलवी में देखे जा सकते हैं, वबिल्लाहित्तौफ़ीक़।

٧١٣٧- حدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَطَاعَنِي فَقَدْ أَطَاعَ اللهَ، وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ عَصَى اللهَ، وَمَنْ أَطَاعَ أَمِيرِي، فَقَدْ أَطَاعَنِي، وَمَنْ عَصَى أَمِيرِي فَقَدْ عَصَانِي)). [راجع: ٢٩٥٧]

7137. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें अबू सलमा इब्ने अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) को बयान करते हुए सुना कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने मेरी इताअ़त की उसने अल्लाह की इताअ़त की और जिसने मेरी नाफ़र्मानी की उसने अल्लाह की नाफ़र्मानी की और जिसने मेरे (मुक़र्रर किये हुए) अमीर की इताअ़त की उसने मेरी इताअ़त की और जिसने मेरे अमीर की नाफ़र्मानी की उसने मेरी नाफ़र्मानी की। (राजेअ़ : 2957)

लेकिन अगर अमीर का हुक्म कुर्आन व हदीष के ख़िलाफ़ हो तो उसे छोड़कर कुर्आन व हदीष पर अ़मल करना होगा।

٧١٣٨- حدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((أَلاَ كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، فَالإِمَامُ الَّذِي عَلَى النَّاسِ رَاعٍ وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ عَلَى أَهْلِ بَيْتِهِ وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ عَلَى أَهْلِ بَيْتِ زَوْجِهَا وَوَلَدِهِ وَهِيَ مَسْؤُولَةٌ عَنْهُمْ، وَعَبْدُ الرَّجُلِ رَاعٍ عَلَى مَالِ سَيِّدِهِ وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْهُ أَلاَ فَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْؤُولٌ عَنْ

7138. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, आगाह हो जाओ, तुममें से हर एक निगहबान है और हर एक से उसकी रिआया के बारे में सवाल किया जाएगा। पस इमाम (अमीरुल मोमिनीन) लोगों पर निगहबान है और उससे उनके बारे में सवाल होगा और किसी शख़्स का ग़ुलाम अपने सरदार के माल का निगहबान है और उससे उसके बारे में सवाल होगा। आगाह हो जाओ कि तुममें से हर एक निगहबान है और हर एक से उसकी रिआया के बारे में पुरसिश होगी। (राजेअ़ : 893)

को अल्लाह तआ़ला ने दीन का इल्म भी दिया था और दौलत भी इनायत फ़र्माई थी। उन्होंने अपनी दौलत बहुत से नेक कामों में जैसे इशाअ़त कुतुबे हदीष़ वग़ैरह में स़र्फ़ की अल्लाह तआ़ला उनके दर्जे बुलन्द करे और उनकी नेकियाँ क़ुबूल फ़र्माएँ, आमीन।

٤- باب - السَّمْعِ وَالطَّاعَةِ لِلإِمَامِ مَا لَمْ تَكُنْ مَعْصِيَةً

बाब 4 : इमाम और बादशाह इस्लाम की बात सुनन और मानना वाजिब है जब तक वह ख़िलाफ़ शरअ़ और गुनाह की बात का हुक्म न दे

हदीष़ का मतलब ये है कि बादशाहे इस्लाम अगर किसी हब्शी गुलाम को भी आ़मिल मुक़र्रर करे तो उसकी इताअ़त वाजिब होगी। हब्शी गुलाम का ख़लीफ़ा होना मुराद नहीं है।

٧١٤٢- حدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اسْمَعُوا وَأَطِيعُوا وَإِنِ اسْتُعْمِلَ عَلَيْكُمْ عَبْدٌ حَبَشِيٌّ كَأَنَّ رَأْسَهُ زَبِيبَةٌ)).

[راجع: ٦٩٣]

7142. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया सुनो और इताअ़त करो, ख़्वाह तुम पर किसी ऐसे हब्शी गुलाम को ही आ़मिल बनाया जाए जिसका सर मुनक़्क़ा की तरह छोटा हो। (राजेअ़ : 693)

या'नी अदना से अदना हाकिम की भी इताअ़त ज़रूरी है बशर्ते कि मआ़सियते इलाही का हुक्म न दे।

٧١٤٣- حدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنِ الْجَعْدِ، عَنْ أَبِي رَجَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ يَرْوِيهِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((مَنْ رَأَى مِنْ أَمِيرِهِ شَيْئًا فَكَرِهَهُ فَلْيَصْبِرْ، فَإِنَّهُ لَيْسَ أَحَدٌ يُفَارِقُ الْجَمَاعَةَ شِبْرًا فَيَمُوتُ إِلاَّ مَاتَ مِيتَةً جَاهِلِيَّةً)).

[راجع: ٧٠٥٣]

7143. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे जअ़द ने बयान किया और उनसे अबू रजाअ ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने अपने अमीर में कोई बुरा काम देखा तो उसे स़ब्र करना चाहिये क्योंकि कोई अगर जमाअ़त से एक बालिश्त भी जुदा हो तो वो जाहिलियत की मौत मरेगा। (राजेअ़ : 7053)

तश्रीह : जमाअ़त से अलग होना इससे ये मुराद है कि हाकिमे इस्लाम से बाग़ी होकर उसकी इताअ़त से निकल जाए जैसा अ़ली (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में ख़ारजियों ने किया था ऐसा करना मिल्ली निज़ाम को तोड़ना और अ़हदे जाहिलियत की सी ख़ुदसरी में गिरफ़्तार होना है जो अहले जाहिलियत का शैवा है। मुसलमान को ऐसी ख़ुदसरी की हालत में मरना अ़हदे जाहिलियत वालों की सी मौत मरना है जो मुसलमान के लिये किसी तरह ज़ैबा नहीं देता।

٧١٤٤- حدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ حَدَّثَنِي نَافِعٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ عَلَى الْمَرْءِ الْمُسْلِمِ فِيمَا أَحَبَّ وَكَرِهَ، مَا لَمْ يُؤْمَرْ

7144. हमसे मुसद्दद बिन मुसर्हिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने, और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मुसलमान के लिये अमीर की बात सुनना और उसकी इताअ़त करना ज़रूरी है। उन चीज़ों में भी जिन्हें वो पसंद करे और उनमें भी जिन्हें वो नापसंद करे,

بِمَعْصِيَةٍ، فَإِذَا أُمِرَ بِمَعْصِيَةٍ فَلاَ سَمْعَ وَلاَ طَاعَةَ)). [راجع: ٢٩٥٥]

जब तक उसे मआ़सियत का हुक्म न दिया जाए। फिर जब उसे मआ़सियत का हुक्म दिया जाए तो न सुनना बाक़ी रहता है न इताआ़त करना। (राजेअ़ : 2955)

अमीर हो या इमाम मुज्तहिद ग़लती होने का इम्कान सबसे है, इसलिये ग़लती में उनकी इताआ़त करना जाइज़ नहीं है। इसी से अंधी तक़्लीद की जड़ कटती है। आजकल किसी इमाम मस्जिद का इमाम व ख़लीफ़ा बन बैठना और अपने न मानने वालों को इस हदीष का मिस्दाक़ ठहराना इस हदीष का मज़ाक़ उड़ाना है और लिखे न पढ़े नाम मुहम्मद फ़ाज़िल का मिस्दाक़ बनना है जबकि ऐसे इमाम अग़यार की ग़ुलामी में रहकर ख़लीफ़ा कहलाकर ख़िलाफ़ते इस्लामी का मज़ाक़ उड़ाते हैं।

٧١٤٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا سَعْدُ بْنُ عُبَيْدَةَ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ سَرِيَّةً وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ وَأَمَرَهُمْ أَنْ يُطِيعُوهُ، فَغَضِبَ عَلَيْهِمْ وَقَالَ: أَلَيْسَ قَدْ أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ تُطِيعُونِي؟ قَالُوا: بَلَى. قَالَ: عَزَمْتُ عَلَيْكُمْ لَمَا جَمَعْتُمْ حَطَبًا وَأَوْقَدْتُمْ نَارًا ثُمَّ دَخَلْتُمْ فِيهَا، فَجَمَعُوا حَطَبًا فَأَوْقَدُوا فَلَمَّا هَمُّوا بِالدُّخُولِ فَقَامَ يَنْظُرُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّمَا تَبِعْنَا النَّبِيَّ ﷺ فِرَارًا مِنَ النَّارِ أَفَنَدْخُلُهَا؟ فَبَيْنَمَا هُمْ كَذَلِكَ إِذْ خَمَدَتِ النَّارُ وَسَكَنَ غَضَبُهُ فَذُكِرَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((لَوْ دَخَلُوهَا مَا خَرَجُوا مِنْهَا أَبَدًا، إِنَّمَا الطَّاعَةُ فِي الْمَعْرُوفِ)). [راجع: ٣٣٤٠]

7145. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़यास़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन उ़बैदह ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक दस्ता भेजा और उस पर अंस़ार के एक श़ख़्स़ को अमीर बनाया और लोगों को हुक्म दिया कि इनकी इताआ़त करें। फिर अमीर फ़ौज के लोगों पर ग़ुस़्स़ा हुए और कहा कि क्या आँह़ज़रत (ﷺ) ने तुम्हें मेरी इताआ़त का हुक्म नहीं दिया है? लोगों ने कहा कि ज़रूर दिया है। इस पर उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि लकड़ी जमा करो और उससे आग लगाओ और उसमें कूद पड़ो। लोगो ने लकड़ी जमा की और आग जलाई, जब कूदना चाहा तो एक दूसरे को लोग देखने लगे और उनमें से कुछ ने कहा कि हमने आँह़ज़रत (ﷺ) की फ़र्मांबरदारी आग से बचने के लिये की थी, क्या फिर हम इसमें ख़ुद ही दाख़िल हो जाएँ। इसी दौरान में आग ठण्डी हो गई और अमीर को ग़ुस़्स़ा भी जाता रहा। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया तो आपने फ़र्माया कि अगर ये लोग उसमे कूद पड़ते तो फिर उसमें से न निकल सकते। इताआ़त सिर्फ़ अच्छी बातों में है। (राजेअ़ : 3340)

ग़लत बातों में इताआ़त जाइज़ नहीं है। ये अमीरे लश्कर ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ुज़ाफ़ा सह्मी अंस़ारी (रज़ि.) थे ग़ुस़्से में उनसे ये बात हुई ग़ुस़्सा ठण्डा होने तक वो आग भी ठण्डी हो गई।

٥- باب مَنْ لَمْ يَسْأَلِ الإِمَارَةَ أَعَانَهُ اللهُ

बाब 5 : जिसे बिन मांगे सरदारी मिले तो अल्लाह उसकी मदद करेगा

रिवायत यूनुस, मअ़मर और इब्ने जुरैज ने ज़ुह्री से की, उनसे अबू सलमा ने, उनसे जाबिर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रजम के सिलसिले में यही हदीष़ ज़िक्र की। (राजेअ़ : 5270)

وَابْنُ جُرَيْجٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الرَّجْمِ.

[راجع: ٥٢٧٠]

ईदगाह के क़रीब उनको रजम किया गया। ये शख़्स माइ़ज़ बिन मालिक असलमी मदनी है जो बहुक्मे नबवी संगसार किये गये। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहू।

बाब 20 : फ़रीक़ैन को इमाम का नसीहत करना

٢٠- باب مَوْعِظَةِ الإِمَامِ لِلْخُصُومِ

7169. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे हिशाम ने,उनसे उनके वालिद ने, उनसे ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा ने और उनसे उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बिलाशुब्हा मैं एक इंसान हूँ, तुम मेरे पास अपने झगड़े लाते हो। मुम्किन है तुममें से कुछ अपने मुक़द्दमे पेश करने में फ़रीक़े ष़ानी के मुक़ाबले में ज़्यादा चर्ब ज़ुबान हो और मैं तुम्हारी बात सुनकर फ़ैस़ला कर दूँ तो जिस शख़्स के लिये मैं उसके भाई (फ़रीक़े ष़ानी) का कोई हक़ दिला दूँ। चाहिये कि वो उसे न ले क्योंकि ये आग का एक टुकड़ा है जो मैं उसे देता हूँ। (राजेअ़ : 2458)

٧١٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ، وَإِنَّكُمْ تَخْتَصِمُونَ إِلَيَّ، وَلَعَلَّ بَعْضَكُمْ أَنْ يَكُونَ أَلْحَنَ بِحُجَّتِهِ مِنْ بَعْضٍ فَأَقْضِي نَحْوَ مَا أَسْمَعُ، فَمَنْ قَضَيْتُ لَهُ بِحَقِّ أَخِيهِ شَيْئًا فَلاَ يَأْخُذْهُ فَإِنَّمَا أَقْطَعُ لَهُ قِطْعَةً مِنَ النَّارِ)). [راجع: ٢٤٥٨]

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि किसी भी क़ाज़ी का ग़लत फ़ैस़ला अल्लाह के नज़दीक स़हीह नहीं हो सकता गो वो नाफ़िज़ कर दिया जाए, ग़लत ग़लत ही रहेगा। इस हदीष़ से इमाम मालिक और शाफ़िई और अह्मद और अहले हदीष़ और जुम्हूर उ़लमा का मज़हब प़ाबित हुआ कि क़ाज़ी का फ़ैस़ला ज़ाहिर में नाफ़िज़ होता है लेकिन उसके फ़ैस़ले से जो चीज़ ह़राम है वो ह़लाल नहीं हो सकती न ह़लाल ह़राम होती है और इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) का क़ौल रद्द हो गया कि क़ाज़ी का फ़ैस़ला ज़ाहिरन और बातिनन दोनों त़रह़ नाफ़िज़ हो जाता है और इस मसले का ज़िक्र ऊपर हो चुका है। हदीष़ से ये भी निकला कि आँह़ज़रत (ﷺ) को ग़ैब का इ़ल्म नहीं था। अल्बत्ता अल्लाह तआ़ला अगर आपको बतला देता तो मा'लूम हो जाता।

बाब 21 : अगर क़ाज़ी ख़ुद ओहद-ए-क़ज़ा ह़ासिल होने के बाद या उससे पहले एक अम्र का गवाह हो तो क्या उसकी बिना पर फ़ैस़ला कर सकता है?

٢١- باب الشَّهَادَةِ تَكُونُ عِنْدَ الْحَاكِمِ فِي وِلاَيَتِهِ الْقَضَاءَ أَوْ قَبْلَ ذَلِكَ لِلْخَصْمِ

और शुरैह (मक्का के क़ाज़ी) से एक आदमी (नाम नामा'लूम) ने कहा तुम इस मुक़द्दमे में गवाही दो। उन्होंने कहा तू बादशाह के पास जाकर कहना तो मैं वहाँ दूँगा। और इक्रिमा कहते हैं उ़मर (रज़ि.) ने अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) से पूछा अगर तू ख़ुद अपनी आँख से किसी को ज़िना या चोरी का जुर्म करते देखे और तू अमीर हो तो क्या उसको ह़द लगा देगा। अ़ब्दुर्रहमान ने कहा

وَقَالَ شُرَيْحٌ الْقَاضِي: وَسَأَلَهُ إِنْسَانٌ الشَّهَادَةَ فَقَالَ: ائْتِ الأَمِيرَ حَتَّى أَشْهَدَ لَكَ وَقَالَ عِكْرِمَةُ: قَالَ عُمَرُ لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ لَوْ رَأَيْتَ رَجُلاً عَلَى حَدِّ زِنًا أَوْ سَرِقَةٍ وَأَنْتَ أَمِيرٌ فَقَالَ:

तश्रीह : सुब्हानल्लाह! ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की एह़तियात़ उन्होंने जब देखा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने तो किसी को ख़लीफ़ा नहीं किया, मुसलमानों की राय पर छोड़ा और अबूबक्र सि़द्दीक़ (रज़ि.) ख़लीफ़ा कर गये तो वो ऐसे रास्ते चले जिसमें दोनो की पैरवी हो जाती है या'नी कुछ मश्विरा पर छोड़ा कुछ मुक़र्रर कर दिया। उन्होंने छः आदमियों को जो उस वक़्त अफ़ज़ल और आ़ला थे, मुअ़य्यन किया फिर उन छः में से किसी की तअ़य्युन मुसलमानों की राय पर छोड़ दी। गोया दोनों सुन्नतों पर अ़मल किया। दूसरे तक़्वा शिआ़री देखिए कि अ़शरा मुबश्शरा में से सई़द बिन ज़ैद भी ज़िन्दा थे मगर उनका नाम तक न लिया, इस ख़्याल से कि वो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से कुछ रिश्ता रखते थे। हाय! ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की त़रह़ मुसलमानों में कौन बेनफ़्स और आ़दिल और मुंसि़फ़ पैदा हुआ है। उनका एक एक काम ऐसा है जो उनकी फ़ज़ीलत पहचानने के लिये काफ़ी है और अफ़सोस है इन अ़क़्ल के अँधों पर जो ऐसे फ़र्दे फ़रीद को जिसका नज़ीर इस्लाम में नहीं हुआ बुरा जानते हैं।

7219. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने उ़मर (रज़ि.) का दूसरा ख़ुत्बा सुना जब आप मिम्बर पर बैठे हुए थे, ये वाक़िया रसूलल्लाह (ﷺ) की वफ़ात के दूसरे दिन का है। उन्होंने कलिमा-ए-शहादत पढ़ा, ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ख़ामोश थे और कुछ नहीं बोल रहे थे, फिर कहा मुझे उम्मीद थी कि आँह़ज़रत (ﷺ) ज़िन्दा रहेंगे और हमारे कामों की तदबीर व इंतिज़ाम करते रहेंगे। उनका मंशा ये था कि आँह़ज़रत (ﷺ) उन सब लोगों के बाद तक ज़िन्दा रहेंगे तो अगर आज मुह़म्मद (ﷺ) वफ़ात पा गये हैं तो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे सामने नूर (क़ुर्आन) को बाक़ी रखा है जिसके ज़रिये तुम हिदायत ह़ासि़ल करते रहोगे और अल्लाह ने ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) को इससे हिदायत की और ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आँह़ज़रत (ﷺ) के साथी (जो ग़ारे स़ौर में) दो में से दूसरे हैं, बिला शक वो तुम्हारे उमूरे ख़िलाफ़त के लिये तमाम मुसलमानों में सबसे बेहतर हैं, पस उठो और उनसे बेअ़त करो। एक जमाअ़त उनसे पहले ही सक़ीफ़ा बनी साएदा में बेअ़त कर चुकी थी, फिर आ़म लोगों ने मिम्बर पर बेअ़त की। ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने, उन्होंने उ़मर (रज़ि.) से सुना कि वो ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से, उस दिन कह रहे थे, मिम्बर पर चढ़ आइये। चुनाँचे वो इसका बराबर इ़सरार करते रहे, यहाँ तक कि अबूबक्र (रज़ि.) मिम्बर पर चढ़ गये और सब लोगों ने आपसे बेअ़त की।

(दीगर मक़ाम : 7269)

٧٢١٩- حدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ خُطبة عُمَرَ الآخِرَةَ حِينَ جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ وَذَلِكَ الْغَدَ مِنْ يَوْمٍ تُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ فَتَشَهَّدَ وَأَبُو بَكْرٍ صَامِتٌ لاَ يَتَكَلَّمُ قَالَ: كُنْتُ أَرْجُو أَنْ يَعِيشَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى يَدَّبِرُنَا، يُرِيدُ بِذَلِكَ أَنْ يَكُونَ آخِرَهُمْ فَإِنْ يَكُ مُحَمَّدٌ ﷺ قَدْ مَاتَ فَإِنَّ اللهَ تَعَالَى قَدْ جَعَلَ بَيْنَ أَظْهُرِكُمْ نُورًا تَهْتَدُونَ بِهِ، هَدَى اللهُ مُحَمَّدًا ﷺ وَإِنَّ أَبَا بَكْرٍ صَاحِبُ رَسُولِ اللهِ ﷺ ثَانِي اثْنَيْنِ، فَإِنَّهُ أَوْلَى الْمُسْلِمِينَ بِأُمُورِكُمْ فَقُومُوا فَبَايِعُوهُ، وَكَانَ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ قَدْ بَايَعُوهُ قَبْلَ ذَلِكَ فِي سَقِيفَةِ بَنِي سَاعِدَةَ، وَكَانَتْ بَيْعَةُ الْعَامَّةِ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ الزُّهْرِيُّ: عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ سَمِعْتُ عُمَرَ يَقُولُ لأَبِي بَكْرٍ يَوْمَئِذٍ: اصْعَدِ الْمِنْبَرَ فَلَمْ يَزَلْ بِهِ حَتَّى صَعِدَ الْمِنْبَرَ فَبَايَعَهُ النَّاسُ عَامَّةً. [طرفه في : ٧٢٦٩].

तश्रीह : सक़ीफ़ा का तर्जुमा मौलाना वहीदुज़्ज़माँ (रह़.) ने मँडवे से किया है। उ़र्फ़े आ़म में बनू साएदा की चौपाली ठीक है। **कानत मकानु इज्तिमाइहिम लिल्हुकूमाति** या'नी वो पंचायत घर था। इब्ने मुईन ने कहा कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का इ़सरार ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को मिम्बर पर चढ़ाने का दुरुस्त था ताकि आपका सबसे तआ़रुफ़ हो जाए और ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) तवाज़ोअ़ की बिना पर चढ़ने से इंकार कर रहे थे। आख़िर चढ़ गये और अब बेअ़ते उ़मूमी हुई जबकि सक़ीफ़ा बनू साएदा की बेअ़त ख़ुसूसी थी। बाब की मुनासबत इससे निकली कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अबूबक्र सि़द्दीक़ (रज़ि.) की निस्बत फ़र्माया वो तुम सब में ख़िलाफ़त के ज़्यादा मुस्तह़िक़ और ज़्यादा लायक़ हैं। शिया कहते हैं कि ह़ज़रत सि़द्दीक़ (रज़ि.) की ख़िलाफ़त ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ही के ज़ोर और इ़सरार से हुई वरना ह़ज़रत सि़द्दीक़ (रज़ि.) बिलकुल दुर्वेश सि़फ़त और मुंकसिरुल मिज़ाज और ख़िलाफ़त से मुतनफ़्फ़िर थे। हम कहते हैं अगर ऐसा ही हो जब भी क्या क़बाह़त है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपने नज़दीक जिसको ख़िलाफ़त के लायक़ समझा इसके लिये ज़ोर दिया और ह़क़पसंद लोगों का यही क़ायदा होता है। अगर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की ये राय ग़लत़ होती तो दूसरे हज़ारों स़ह़ाबा जो वहाँ मौजूद थे वो क्यूँ इत्तिफ़ाक़ करते? ग़र्ज़ बइज्माअ़ स़ह़ाबा अबूबक्र सि़द्दीक़ (रज़ि.) ख़िलाफ़त के अहल और क़ाबिल ठहरे।

7220. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे मुह़म्मद बिन जुबैर बिन मुत़्इम ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास एक ख़ातून आईं और किसी मामले में आपसे बातचीत की, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे कहा कि वो दोबारा आपके पास आएँ। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अगर मैं आऊँ और आपको न पाऊँ तो फिर आप क्या फ़र्माते हैं? जैसे उनका इशारा वफ़ात की त़रफ़ हो। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर मुझे न पाओ तो अबूबक्र (रज़ि.) के पास आइयो। (राजेअ़ : 3659)

٧٢٢٠- حدَّثنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدُ الله، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: أَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ امْرَأَةٌ فَكَلَّمَتْهُ فِي شَيْءٍ فَأَمَرَهَا أَنْ تَرْجِعَ إِلَيْهِ قَالَتْ: يَا رَسُولَ الله أَرَأَيْتَ إِنْ جِئْتُ وَلَمْ أَجِدْكَ كَأَنَّهَا تُرِيدُ الْمَوْتَ قَالَ: ((إِنْ لَمْ تَجِدِينِي فَأْتِي أَبَا بَكْرٍ)). [راجع: ٣٦٥٩]

तश्रीह : ये ह़दीष़ स़ाफ़ दलील है इस बात की कि आँह़ज़रत (ﷺ) को मा'लूम था कि आपके बाद ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ख़लीफ़ा होंगे। दूसरी रिवायत में जिसे त़बरानी और इस्माईली ने निकाला यूँ है कि आँह़ज़रत (ﷺ) से एक गंवार ने बेअ़त की, पूछा अगर आपकी वफ़ात हो जाए तो किसके पास आऊँ? आपने फ़र्माया कि अबूबक्र (रज़ि.) के पास आना। पूछा अगर वो भी गुज़र जाएँ? फ़र्माया कि फिर उ़मर (रज़ि.) के पास। तर्तीब ख़िलाफ़त का ये खुला हुआ षुबूत है।

7221. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे क़ैस बिन मुस्लिम ने, उनसे त़ारिक़ बिन शिहाब ने कि अबूबक्र (रज़ि.) ने क़बाइल बुज़ाख़ा के वफ़द से (जो आँह़ज़रत ﷺ की वफ़ात के बाद मुर्तद हो गया था और अब मुआ़फ़ी केलिये आया था) फ़र्माया कि ऊँटों की दुमों के पीछे पीछे जंगलों मे घूमते रहो, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपने नबी (ﷺ) के ख़लीफ़ा और मुहाजिरीन को कोई अम्र बतला दे जिसकी वजह से वो तुम्हारा क़ुसूर माफ़ कर दे।

٧٢٢١- حدَّثنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنِي قَيْسُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ الله عَنْهُ قَالَ لِوَفْدِ بُزَاخَةَ: تَتْبَعُونَ أَذْنَابَ الإِبِلِ حَتَّى يُرِيَ الله خَلِيفَةَ نَبِيِّهِ ﷺ وَالْمُهَاجِرِينَ أَمْرًا يَعْذِرُونَكُمْ بِهِ.

[راجع: ٢٧٥٧]

तश्रीह : ह़ज़रत कअ़ब बिन मालिक ने ग़ज़्व-ए-तबूक़ से बिला इजाज़त ग़ैर ह़ाज़िरी की थी और ये बड़ा भारी मिल्ली जुर्म था जो उनसे स़ादिर हुआ। रसूले करीम (ﷺ) ने उनसे और उनके साथियों से पूरा तर्के मवालात फ़र्माया यहाँ तक कि उनकी तौबा अल्लाह ने क़ुबूल की। अब ऐसे मामलात ख़लीफ़ा इस्लाम की स़वाब दीद पर मौक़ूफ़ किये जा सकते हैं।

95. किताबुत्तमन्ना

किताब नेकतरीन आरज़ुओं के जाइज़ होने में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(तमन्ना उ़र्फ़े आम में आदमी का यूँ कहना काश! ऐसा होता, तमन्ना और तरज्जी मे ये फ़र्क़ है कि तमन्ना उस बात में भी होती है जो मह़ाल हो जैसे कहना कि काश! जवानी फिर आ जाती और तरज्जो हमेशा उन ही बातों में होती है जो होने वाली हों)

बाब 1 : आरज़ू करने के बारे में और जिसने शहादत की आरज़ू की

١- باب مَا جَاءَ فِي التَّمَنِّي وَمَنْ تَمَنَّى الشَّهَادَةَ

7226. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने, कहा मुझसे अ़ब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा और सईद बिन मुसय्यब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। अगर उन लोगों का ख़्याल न होता जो मेरे साथ ग़ज़्वा में शरीक न हो सकने को बुरा जानते हैं मगर अस्बाब की कमी की वजह से वो शरीक नहीं हो सकते और कोई ऐसी चीज़ मेरे पास नहीं है जिस पर उन्हें सवार करूँ तो मैं कभी (ग़ज़्वात में शरीक होने से) पीछे न रहता। मेरी तो ख़्वाहिश है कि अल्लाह के रास्ते में क़त्ल किया जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ फिर क़त्ल किया जाऊँ, फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल किया जाऊँ और फिर ज़िंदा किया जाऊँ और फिर मारा जाऊँ। (राजेअ़ : 36)

٧٢٢٦- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، حَدَّثَنِي اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ وَ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ انَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ لاَ أَن رِجَالاً يَكْرَهُونَ أَنْ يَتَخَلَّفُوا بَعْدِي وَلاَ أَجِدُ مَا أَحْمِلُهُمْ، مَا تَخَلَّفْتُ لَوَدِدْتُ أَنِّي أُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللهِ ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ، ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ، ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ)).

[راجع: ٣٦]

ऐसी पाकीज़ा तमन्नाएँ करना बिला शुब्हा जाइज़ है। जैसा कि ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) से ये मन्क़ूल है।

7227. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुज़्ज़िनाद ने, उन्हें अ़अरज ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। मेरी आरज़ू है कि मैं अल्लाह के रास्ते में जंग करूँ और क़त्ल किया जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल किया जाऊँ, फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल किया जाऊँ, अबू हुरैरह (रज़ि.) इन अल्फ़ाज़ को तीन बार दोहराते थे कि मैं अल्लाह का गवाह करके कहता हूँ। (राजेअ़ : 36)

٧٢٢٧- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ وَدِدْتُ أَنِّي أُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللهِ، فَأُقْتَلُ ثُمَّ أَحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ، ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ ثُمَّ أُحْيَا)) فَكَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ يَقُولُهُنَّ ثَلاَثًا أَشْهَدُ بِاللهِ.

[راجع: ٣٦]

कि आँहज़रत (ﷺ) ने इसी तरह फ़र्माया। आख़िर में ख़त्म शहादत पर किया क्योंकि मक़्सूद वही थी जो आपको बतला दिया गया था कि अल्लाह आपकी जान की हिफ़ाज़त करेगा जैसा कि फ़र्माया, **वल्लाहु यअ़सिमुक मिनन्नासि** लेकिन ये आरज़ू महज़ फ़ज़ीलते जिहाद के ज़ाहिर करने के लिये आपने फ़र्माई।

बाब 2 : नेक काम जैसे ख़ैरात की आरज़ू करना

और नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद है, अगर मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना होता तो मैं उसे भी ख़ैरात कर देता।

7228. हमसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे म अ़मर ने, उनसे हम्माम बिन मुनब्बा ने, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना होता तो मैं पसंद करता कि अगर उनके लेने वाले मिल जाएँ तो तीन दिन गुज़रने से पहले ही मेरे पास उसमें से एक दीनार भी न बचे, सिवा उसके जिसे मैं अपने ऊपर क़र्ज़ की अदायगी के लिये रोक लूँ। (राजेअ़ : 2389)

٢- باب تَمَنِّي الْخَيْرِ

وَقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَوْ كَانَ لِي أُحُدٌ ذَهَبًا)).

٧٢٢٨- حدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ هَمَّامٍ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَوْ كَانَ عِنْدِي أُحُدٌ ذَهَبًا لأَحْبَبْتُ أَنْ لاَ يَأْتِيَ ثَلاَثٌ وَعِنْدِي مِنْهُ دِينَارٌ لَيْسَ شَيْءٌ أَرْصُدُهُ فِي دَيْنٍ عَلَيَّ أَجِدُ مَنْ يَقْبَلُهُ)).

[راجع: ٢٣٨٩]

तश्रीह: बस अस्ल दुर्वेशी ये है जो आँहज़रत (ﷺ) ने बयान फ़र्मा दी कि कल के लिये कुछ न रख छोड़े, जो रुपया या माल मताअ़ आए वो ग़ुरबा और मुस्तहिक़्क़ीन को फ़ौरन तक़्सीम कर दे। अगर कोई शख़्स ख़ज़ाना अपने लिये जमा करे और तीन दिन से ज़्यादा रुपया पैसा अपने पास रख छोड़े तो उसको दुर्वेश न कहेंगे बल्कि दुनियादार कहेंगे। एक बुज़ुर्ग के पास रुपया आया, उन्होंने पहले चालीसवाँ हिस्सा उसमें से ज़कात का निकाला फिर बाक़ी 39 हिस्से भी तक़्सीम कर दिये और कहने लगे मैंने ज़कात का स़वाब हासिल करने के लिये पहले चालीसवाँ हिस्सा निकाला अगर सब एक बारगी ख़ैरात कर देता तो उस फ़र्ज़ के स़वाब से महरूम रहता। हैदराबाद में बहुत से मशाइ़ख़ और दुर्वेश ऐसे नज़र आते हैं कि दुनियादार उनसे बमरातिब बेहतर हैं। अफ़सोस! उनको अपने तईं दुर्वेश कहते हुए शर्म नहीं आती वो तो साहूकारों की तरह माल व

मताअ़ दौलत इकट्ठा करते हैं उनको महाजन या साहूकार का लक़ब देना चाहिये न कि शाह और फ़क़ीर का। (वह़ीदी) इल्ला माशाअल्लाह।

बाब 3 : नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद

٣- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ:

कि अगर मुझे पहले से वो मा'लूम होता जो बाद को मा'लूम हुआ

((لَوِ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ)).

7229. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उ़क़ैल ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा (रज़ि.) ने कि आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर) फ़र्माया अगर मुझको अपना ह़ाल पहले से मा'लूम होता जो बाद में मा'लूम हुआ तो मैं अपने साथ क़ुर्बानी का जानवर न लाता और उ़मरह करके दूसरे लोगों की त़रह़ में भी एह़राम खोल डालता। (राजेअ़ : 294)

٧٢٢٩- حدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((لَوِ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ مَا سُقْتُ الْهَدْيَ وَلَحَلَلْتُ مَعَ النَّاسِ حِينَ حَلُّوا)). [راجع: ٢٩٤]

7230. हमसे ह़सन बिन उ़मर जुर्मी ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ बस़री ने, उनसे ह़बीब बिन अबी क़ुरैबा ने, उनसे अ़त़ा बिन अबी रिबाह़ ने, उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के (ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर) साथ थे, फिर हमने ह़ज्ज के लिये तल्बिया कहा और 4 ज़िलह़िज्ज को मक्का पहुँचे, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने हमे बैतुल्लाह और स़फ़ा और मरवा के त़वाफ़ का ह़ुक्म दिया और ये कि हम उसे उ़मर: बना लें और उसके बाद ह़लाल हो जाएँ (सिवा उनके जिनके साथ क़ुर्बानी का जानवर हो वो ह़लाल नहीं हो सकते) बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) और त़लह़ा (रज़ि.) के सिवा हममें से किसी के पास क़ुर्बानी का जानवर न था और अ़ली (रज़ि.) यमन से आए थे और उनके साथ भी हदी थी और कहा कि मैं भी उसका एह़राम बाँधकर आया हूँ जिसका रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एह़राम बाँधा है, फिर दूसरे लोग कहने लगे कि क्या हम अपनी औ़रतों के साथ सुह़बत करने के बाद मिना जा सकते हैं ? (इस ह़ाल में कि हमारे ज़कर मनी टपकाते हों?) आँह़ज़रत (ﷺ) ने इसपर फ़र्माया कि जो बात मुझे बाद में मा'लूम हुई अगर पहले ही मा'लूम होती तो मैं हदी साथ न लाता और अगर मेरे साथ हदी न होती तो मैं भी ह़लाल हो जाता। बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) से सुराक़ा बिन मालिक ने मुलाक़ात की। उस वक़्त आप बड़े शैत़ान पर रमी कर रहे थे और पूछा या रसूलल्लाह

٧٢٣٠- حدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، عَنْ حَبِيبٍ، عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَلَبَّيْنَا بِالْحَجِّ وَقَدِمْنَا مَكَّةَ لأَرْبَعٍ خَلَوْنَ مِنْ ذِي الْحِجَّةِ، فَأَمَرَنَا النَّبِيُّ ﷺ أَنْ نَطُوفَ بِالْبَيْتِ وَبِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، وَأَنْ نَجْعَلَهَا عُمْرَةً وَنَحِلَّ إِلاَّ مَنْ كَانَ مَعَهُ هَدْيٌ قَالَ: وَلَمْ يَكُنْ مَعَ أَحَدٍ مِنَّا هَدْيٌ غَيْرَ النَّبِيِّ ﷺ وَطَلْحَةَ وَجَاءَ عَلِيٌّ مِنَ الْيَمَنِ مَعَهُ الْهَدْيُ فَقَالَ: أَهْلَلْتُ بِمَا أَهَلَّ بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالُوا: نَنْطَلِقُ إِلَى مِنًى وَذَكَرُ أَحَدِنَا يَقْطُرُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنِّي لَوِ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ مَا أَهْدَيْتُ وَلَوْ لاَ أَنَّ مَعِيَ الْهَدْيَ لَحَلَلْتُ)) قَالَ: وَلَقِيَهُ سُرَاقَةُ وَهُوَ يَرْمِي جَمْرَةَ الْعَقَبَةِ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللهِ: أَلَنَا هَذِهِ خَاصَّةً؟ قَالَ: ((لاَ بَلْ لِلأَبَدِ)) قَالَ: وَكَانَتْ عَائِشَةُ قَدِمَتْ مَكَّةَ وَهِيَ

तश्रीह: कुर्आन व हदीष पर चंगुल मारना और उनके ख़िलाफ़ राय व क़यास से बचना बुनियादे ईमान है। सबसे पहले राय क़यास पर अमल करने और नस्से सरीह को रद्द करने वाला इब्लीस है। कुर्आन मजीद की सरीह आयात और रसूले करीम (ﷺ) की हदीष के मुंकिर की सज़ा यही है कि वो दोज़ख़ में अपना ठिकाना बना रहा है। एक औरत ज़ात ने गोश्त के बारे में बतलाया कि वो सांडे का गोश्त है। इसकी ख़बर को सबने तस्लीम किया। इसी से औरत की ख़बर भी कुबूल की जाएगी बशर्ते कि वो षिक़ह हो। इसी से ख़बरे वाहिद का हुज्जत होना षाबित हुआ जो लोग ख़बरे वाहिद को हुज्जत नहीं मानते उनका मसलक सहीह नहीं है तमाम अहादीष के नक़ल करने से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का यही मक़्सद है। **वल्हम्दु अव्वलन व आख़िरन** ये बाब ख़त्म हुआ।

97. किताबुल ए'तिसाम बिल किताब वस्सुन्नः

किताबुल्लाह व सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) को मज़बूती से थामे रहना

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तश्रीह: अल इअतिस़ामु इफ़्तिआलुम मिनल इस्मति वल्मुरादु इम्तिषालु क़ौलिही तआला वअतसिमू बिहब्लिल्लाहि जमीअन अल्आयः क़ालल किर्मानी हाज़िहित्तर्जुमतु मुन्तज़िअतुम मिन क़ौलिही तआला वअतसिमू बिहब्लिल्लाहि जमीअन लिअन्नल मुराद बिल्हब्लि अल्किताब वस्सुन्नह अला सबीलिल इस्तिआरति वल जामिउ कौनुहुमा सबबल लिल मक़्सूदि व हुवष़्षवाबु वन्नजातु मिनल ज़ज़ाबि कमा अन्नल हब्ल सबबुन लिहुसूलिल मक़्सूदि बिही मिनस्सुक़ा व ग़ैरूहू वल्मुरादु बिल किताबि अल्क़ुर्आन लित्तअब्बुदि बि तिलावतिही व बिस्सुन्नति मा जाअ अनिन्नबिय्यि (ﷺ) मिन अक़्वालिही व अफ़्वालिही व तक़्रीरातिही व मा हुम बिफ़िअलिही वस्सुन्नतु फ़ी अस्लिल लुग़ति अत्तरीक़तु व फ़ी इस्तिलाहिल उसूलिय्यीन वल मुहद्दिषीन मा तक़द्दम क़ाल इब्नु बत्ताल ला इस्मत लिअहदिन इल्ला फ़ी किताबिल्लाहि औ फ़ी सुन्नति रसूलिही औ फ़ी इज्माइन इलमाइ अला मअना फ़ी अहदिहिमा षुम्म तकल्लम अलस्सुन्नति बिइतिबारि मा जाअ अनिन्नबिय्यि (ﷺ). (फ़त्हुल बारी)

लफ़्ज़ ए'तिसाम बाब इफ़्तिआल का मसदर इस्मत से माख़ूज़ है। इससे मुराद अल्लाह के इर्शाद, **वअतसिमू बिहब्लिल्लाहि जमीअा** की ता'मील है। किर्मानी ने कहा कि ये तर्जुमा अल्लाह के क़ौल, **वअतसिमू बिहब्लिल्लाहि जमीअा** से माख़ूज़ है क्योंकि हब्ल से मुराद अल्लाह की किताब और उसके रसूल की सुन्नत है और मक़्सूद उनसे षवाबे आख़िरत पाना और अज़ाबे आख़िरत से नजात हासिल करना है जैसा कि रस्सी से खींचकर कुँए से पानी पिया जाता है और रस्सी में लटककर उसे मज़बूती से पकड़कर कुँए से बाहर आया जा सकता है। पस किताब से मुराद कुर्आन मजीद है जिसकी महज़ तिलावत करना भी इबादत है और सुन्नत से मुराद रसूले करीम (ﷺ) के अक़्वाल और अफ़्आल और आपका अपने सामने किसी काम को होते देखकर षाबित रखना है और लफ़्ज़ सुन्नत लुग़त में तरीक़े पर बोला जाता है और उसूलियों और मुहद्दिषीन की इस्तिलाह में रसूले करीम (ﷺ) के अक़्वाल व अफ़्आल और तक़रीर पर बोला जाता है। इब्ने बत्ताल ने कहा ग़लती से बचना सिर्फ़ किताबुल्लाह या फिर सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) ही में है या फिर इज्माअे उलमा में जो कुर्आन व हदीष के मुताबिक़ हो।

7268. हमसे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबेर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे मिस्अर

٧٢٦٨- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مِسْعَرٍ وَغَيْرِهِ عَنْ قَيْسِ بْنِ

हैं लेकिन किसी से क़ुर्आन की एक सूरत न बन सकी बावजूद ये कि हर ज़माने में क़ुर्आन के हजारों मुख़ालिफ़ और दुश्मन गुज़र चुके। अब कोई ये न कहे कि मर्दुम शुमारी की रू से नस़ारा की ता'दाद ब निस्बत मुसलमानों के ज़्यादा मा'लूम होती है तो मुसलमानों का शुमार आख़िरत में क्यूँकर ज़्यादा होगा। इसलिये कि नस़ारा जो ह़ज़रत ईसा (अ.) की उम्मत कहलाने के लायक़ हैं, वही हैं जो आँह़ज़रत (ﷺ) की बिअ़प्त तक गुज़र चुके, उनमें भी वो नस़ारा जो ह़ज़रत ईसा (अ.) की सच्ची शरीअ़त पर क़ायम रहे या'नी तौह़ीदे इलाही के क़ाइल और ह़ज़रत ईसा (अ.) को अल्लाह का बन्दा और पैग़म्बर समझते थे। उन नस़ारा से क़यामत के दिन मुसलमान ता'दाद में ज़्यादा होंगे। इस ज़माने के नस़ारा दरह़क़ीक़त ह़ज़रत ईसा (अ.) की उम्मत और सच्चे नस़ारा नहीं हैं, वो सिर्फ़ ह़ज़रत ईसा (अ.) के नामलेवा हैं उन्होंने अपना दीन बदल डाला और दीन के बड़े रुक्न या'नी तौह़ीद ही को ख़राब कर दिया। अफ़सोस इसी त़रह़ नाम के मुसलमानों ने भी अपना दीन बदल डाला और शिर्क करने लगे, इस क़िस्म के मुसलमान भी दरह़क़ीक़त मुसलमान नहीं हैं न उम्मते मुह़म्मदी में उनका शुमार हो सकता है।

बाब 2 : नबी करीम (ﷺ) की सुन्नतों की पैरवी करना

٢- باب الإِقْتِدَاءِ بِسُنَنِ رَسُولِ اللهِ ﷺ

और अल्लाह त'आला का सूरह फ़ुर्क़ान में फ़र्माना कि, ऐ परवरदिगार! हमको परहेज़गारों का पेशवा बना दे। मुजाहिद ने कहा या'नी इमाम बना दे कि हम लोग अगले लोगों स़ह़ाबा और ताबेईन की पैरवी करें और हमारे बाद जो लोग आएं वो हमारी पैरवी करें और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ौन ने कहा तीन बातें ऐसी हैं जिनको मैं ख़ास़ अपने लिये और दूसरे मुसलमान भाइयों के लिये पसंद करता हूँ, एक तो इ़ल्मे ह़दीष़; मुसलमानों को उसे ज़रूर ह़ासिल करना चाहिये। दूसरे क़ुर्आन मजीद, उसे समझकर पढ़ें और लोगो से क़ुर्आन के मत़ालिब की तह़क़ीक़ करते रहें। तीसरे ये कि मुसलमानों का ज़िक्र हमेशा ख़ैर व भलाई के साथ किया करें, किसी की बुराई का ज़िक्र न करें।

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا﴾ قَالَ: أَئِمَّةً نَقْتَدِي بِمَنْ قَبْلَنَا وَيَقْتَدِي بِنَا مَنْ بَعْدَنَا، وَقَالَ ابْنُ عَوْنٍ: ثَلَاثٌ أُحِبُّهُنَّ لِنَفْسِي وَلِإِخْوَانِي هَذِهِ السُّنَّةُ أَنْ يَتَعَلَّمُوهَا وَيَسْأَلُوا عَنْهَا، وَالْقُرْآنُ أَنْ يَتَفَهَّمُوهُ وَيَسْأَلُوا عَنْهُ وَيَدَعُوا النَّاسَ إِلَّا مِنْ خَيْرٍ.

7275. हमसे अ़म्र बिन अ़ब्बास ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन मह्दी ने, कहा हमसे सुफ़यान स़ौरी ने, उनसे वासिल ने, उनसे अबू वाइल ने बयान किया कि इस मस्जिद (ख़ाना का'बा) में, मैं शैबा बिन उ़स्मान ह़ज्बी (जो का'बा के कलीद बरदार थे) के पास बैठा तो उन्हों ने कहा कि जहाँ तुम बैठे हो, वहीं उ़मर(रज़ि.) भी मेरे पास बैठे थे और उन्होंने कहा था कि मेरा इरादा है कि का'बा में किसी त़रह़ का सोना चाँदी न छोड़ूँ और सब मुसलमानों में तक़्सीम कर दूँ जो नज़्रुल्लाह का'बा में जमा है। मैंने कहा कि आप ऐसा नहीं कर सकते। कहा क्यूँ? मैंने कहा कि आपके दोनों साथियों (रसूलुल्लाह ﷺ और अबूबक्र रज़ि.) ने ऐसा नहीं किया था। इस पर उन्होंने कहा कि वो दोनों बुज़ुर्ग ऐसे ही थे जिनकी इक़्तिदा करनी ही

٧٢٧٥- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ وَاصِلٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: جَلَسْتُ إِلَى شَيْبَةَ فِي هَذَا الْمَسْجِدِ قَالَ: جَلَسَ إِلَيَّ عُمَرُ فِي مَجْلِسِكَ هَذَا فَقَالَ: هَمَمْتُ أَنْ لَا أَدَعَ فِيهَا صَفْرَاءَ وَلَا بَيْضَاءَ، إِلَّا قَسَمْتُهَا بَيْنَ الْمُسْلِمِينَ قُلْتُ: مَا أَنْتَ بِفَاعِلٍ قَالَ: لِمَ قُلْتُ لَمْ يَفْعَلْهُ صَاحِبَاكَ؟ قَالَ: هُمَا الْمَرْآنِ يُقْتَدَى بِهِمَا.

[راجع: ١٥٩٤]

جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: جَاءَتْ مَلاَئِكَةٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ نَائِمٌ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّهُ نَائِمٌ وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ فَقَالُوا : إِنَّ لِصَاحِبِكُمْ هَذَا مَثَلاً، فَاضْرِبُوا لَهُ مَثَلاً، فَقَالَ بَعْضُهُمْ : إِنَّهُ نَائِمٌ وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ فَقَالُوا: مَثَلُهُ كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنَى دَارًا، وَجَعَلَ فِيهَا مَأْدُبَةً وَبَعَثَ دَاعِيًا فَمَنْ أَجَابَ الدَّاعِيَ دَخَلَ الدَّارَ. وَأَكَلَ مِنَ الْمَأْدُبَةِ، وَمَنْ لَمْ يُجِبِ الدَّاعِيَ لَمْ يَدْخُلِ الدَّارَ وَلَمْ يَأْكُلْ مِنَ الْمَأْدُبَةِ، فَقَالُوا : أَوِّلُوهَا لَهُ يَفْقَهْهَا فَقَالَ بَعْضُهُمْ : إِنَّهُ نَائِمٌ وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ، فَقَالُوا: فَالدَّارُ الْجَنَّةُ، وَالدَّاعِي مُحَمَّدٌ ﷺ، فَمَنْ أَطَاعَ مُحَمَّدًا، فَقَدْ أَطَاعَ اللهَ، وَمَنْ عَصَى مُحَمَّدًا ﷺ فَقَدْ عَصَى اللهَ، وَمُحَمَّدٌ فَرَّقَ بَيْنَ النَّاسِ. تَابَعَهُ قُتَيْبَةُ عَنْ لَيْثٍ، عَنْ خَالِدٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِلاَلٍ، عَنْ جَابِرٍ خَرَجَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

उन्होंने कहा कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि फ़रिश्ते नबी करीम (ﷺ) के पास आए, जिब्रईल (अ़.) व मीकाइल (अ़.) और आप सोये हुए थे। एक ने कहा कि ये सोये हुए हैं, दूसरे ने कहा कि इनकी आँखें सो रही हैं लेकिन इनका दिल बेदार है। उन्होंने कहा कि तुम्हारे इन स़ाहब (आँहज़रत ﷺ) की एक मिष़ाल है पस उनकी मिष़ाल बयान करो तो उनमें से एक ने कहा कि ये सो रहे हैं। दूसरे ने कहा कि आँख सो रही है और दिल बेदार है। उन्होंने कहा कि इनकी मिष़ाल उस श़ख़्स जैसी है जिसने एक घर बनाया और वहाँ खाने की दा'वत की और बुलाने वाले को भेजा, पस जिसने बुलाने वाले की दा'वत क़ुबूल कर ली वो घर में दाख़िल हो गया और दस्तरख़्वान से खाया और जिसने बुलाने वाले की दा'वत क़ुबूल नहीं की वो घर में दाख़िल नहीं हुआ और दस्तरख़्वान से खाना नहीं खाया, फिर उन्होंने कहा कि इसकी इनके लिये तफ़्सीर कर दो ताकि ये समझ जाएँ। कुछ ने कहा कि ये तो सोये हुए हैं लेकिन कुछ ने कहा कि आँखें भले ही सो रही हैं लेकिन दिल बेदार है। फिर उन्होंने कहा कि घर तो जन्नत है और बुलाने वाले मुह़म्मद (ﷺ) हैं। पस जो इनकी इत़ाअ़त करेगा वो अल्लाह की इत़ाअ़त करेगा और जो इनकी नाफ़र्मानी करेगा वो अल्लाह की नाफ़र्मानी करेगा और मुह़म्मद (ﷺ) अच्छे और बुरे लोगों के बीच फ़र्क़ करने वाले हैं। मुह़म्मद बिन ज़बादह के साथ इस ह़दीष़ को क़ुतैबा बिन सईद ने भी लैष़ से रिवायत किया, उन्होंने ख़ालिद बिन यज़ीद मिस्री से, उन्होंने सईद बिन अबी हिलाल से, उन्होंने जाबिर से कि आँहज़रत (ﷺ) हम पर बेदार हुए, फिर यही ह़दीष़ नक़ल की इसे तिर्मिज़ी ने वस़्ल किया।

तश्रीह़ : इस ह़दीष़ से वाज़ेह़ त़ौर पर मा'लूम हुआ कि क़ुर्आन व ह़दीष़ ही दीन के अस़लुल उस़ूल हैं और सुन्नते नबवी ही बहरह़ाल मुक़द्दम है। इमाम, उस्ताद, बुज़ुर्ग सबको छोड़ा जा सकता है मगर क़ुर्आन व ह़दीष़ को मुक़द्दम रखना होगा, यही नजात का रास्ता है।

मसलके सुन्नत पे ऐ सालिक चला जा बे धड़क
जन्नतुल फ़िरदौस को सीधी गई है ये सड़क

٧٢٨٢- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ

7282. हमसे अबू नुऐम फ़ज़्ल बिन दुकैन ने बयान किया,

عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ هَمَّامٍ عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ : يَا مَعْشَرَ الْقُرَّاءِ اسْتَقِيمُوا فَقَدْ سُبِقْتُمْ سَبْقًا بَعِيدًا، فَإِنْ أَخَذْتُمْ يَمِينًا وَشِمَالاً لَقَدْ ضَلَلْتُمْ ضَلاَلاً بَعِيدًا.

कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे हम्माम ने और उनसे हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने कहा कि ऐ क़ुर्आन व ह़दीष़ पढ़ने वालों! तुम अगर क़ुर्आन व ह़दीष़ पर न जमोगे, इधर उधर दाएँ बाएँ रास्ते लोगे तो गुमराह होओगे बहुत ही बड़े गुमराह।

तश्रीह़ : या'नी उन लोगों से कहीं अफ़ज़ल होगे जो तुम्हारे बाद आएँगे। ये तर्जुमा उस वक़्त है जब लफ़्ज़ ह़दीष़ **फ़क़द सबक़्तुम बिही** स़ैग़ा मा'रूफ़ हो अगर ब स़ैग़ा मज्हूल **सबिक़्तुम** हो तर्जुमा ये होगा कि तुम ह़दीष़ और क़ुर्आन पर जम जाओ क्योंकि दूसरे लोग ह़दीष़ और क़ुर्आन की पैरवी करते हैं। तुमसे बहुत आगे बढ़ गये हैं या'नी दूर निकल गये हैं।

٧٢٨٣- حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((إِنَّمَا مَثَلِي وَمَثَلُ مَا بَعَثَنِي اللهُ بِهِ، كَمَثَلِ رَجُلٍ أَتَى قَوْمًا فَقَالَ: يَا قَوْمِ إِنِّي رَأَيْتُ الْجَيْشَ بِعَيْنَيَّ وَإِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْعُرْيَانُ، فَالنَّجَاءَ، فَأَطَاعَهُ طَائِفَةٌ مِنْ قَوْمِهِ فَأَدْلَجُوا فَانْطَلَقُوا عَلَى مَهَلِهِمْ فَنَجَوْا، وَكَذَّبَتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ فَأَصْبَحُوا مَكَانَهُمْ، فَصَبَّحَهُمُ الْجَيْشُ فَأَهْلَكَهُمْ وَاجْتَاحَهُمْ فَذَلِكَ مَثَلُ مَنْ أَطَاعَنِي، فَاتَّبَعَ مَا جِئْتُ بِهِ، وَمَثَلُ مَنْ عَصَانِي وَكَذَّبَ بِمَا جِئْتُ بِهِ مِنَ الْحَقِّ)).

7283. हमसे अबू कुरैब मुह़म्मद बिन अ़ला ने बयान किया, कहा हमसे उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद ने, उनसे उनके दादा अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अश़्अरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरी और जिस दा'वत के साथ मुझे अल्लाह तआ़ला ने भेजा है उसकी मिष़ाल एक ऐसे शख़्स जैसी है जो किसी क़ौम के पास आए और कहे कि ऐ क़ौम! मैंने एक लश्कर अपनी आँखों से देखा है और मैं नंग धड़ंग तुमको डराने वाला हूँ, पस बचाव की स़ूरत करो तो उस क़ौम के एक गिरोह ने बात मान ली और रात के शुरू ही में निकल भागे और ह़िफ़ाज़त की जगह चले गये। इसलिये नजात पा गये लेकिन उनकी दूसरी जमाअ़त ने झुठलाया और अपनी जगह ही पर मौजूद रहे, फिर स़ुबह़ सवेरे ही दुश्मन के लश्कर ने उन्हें आ लिया और उन्हें मारा और उनको बर्बाद कर दिया। तो ये मिष़ाल है इसकी जो मेरी इत़ाअ़त करें और जो दा'वत मैं लाया हूँ उसकी पैरवी करें और उसकी मिष़ाल है जो मेरी नाफ़र्मानी करें और जो ह़क़ में लेकर आया हूँ उसे झुठलाएँ।

तश्रीह़ : अ़रब में क़ायदा था जब दुश्मन नज़दीक आन पहुँचता और कोई शख़्स उसको देख लेता उसको ये डर होता कि मेरे पहुँचने से पहले ये लश्कर मेरी क़ौम पर पहुँच जाएगा तो नंगा होकर जल्दी जल्दी चीख़ता चिल्लाता भागता कुछ कहते हैं अपने कपड़े उतारकर झण्डे की त़रह़ एक लकड़ी पर लगाता और चिल्लाता हुआ भागता।

٧٢٨٤، ٧٢٨٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ

7284, 7285. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे ज़ुह्री ने, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम

فَأَنَا أَكْفِيكَمَاهَا.

[راجع: ٢٩٠٤]

बाब का तर्जुमा की मुताबक़त इस तरह है कि हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) और उनके साथियो ने अ़ली और अ़ब्बास (रज़ि.) के झगड़े और इख़्तिलाफ़ को बुरा समझा। जब तो हज़रत उ़मर (रज़ि.) से कहा, इन दोनों का फ़ैसला करके इनको आराम दीजिए।

٦- باب إِثْمِ مَنْ آوَى مُحْدِثًا

बाब 6 : जो शख़्स बिदअ़ती को ठिकाना दे, उसको अपने पास ठहराए

وَرَوَاهُ عَلِيٌّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

उसका बयान इस बाब में हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से रिवायत की है।

٧٣٠٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَاحِدِ، حَدَّثَنَا عَاصِمٌ قَالَ: قُلْتُ لأَنَسٍ : أَحَرَّمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْمَدِينَةَ؟ قَالَ: نَعَمْ مَا بَيْنَ كَذَا إِلَى كَذَا لاَ يُقْطَعُ شَجَرُهَا، مَنْ أَحْدَثَ فِيهَا حَدَثًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ وَالْمَلاَئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ. قَالَ عَاصِمٌ: فَأَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ أَنَسٍ أَنَّهُ قَالَ : أَوْ آوَى مُحْدِثًا.

7306. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद ने बयान किया, कहा हमसे आ़सिम ने बयान किया, कहा कि मैंने अनस (रज़ि.) से पूछा क्या रसूलल्लाह (ﷺ) ने मदीना मुनव्वरह को हुर्मत वाला शहर क़रार दिया है? फ़र्माया कि हाँ फ़लाँ जगह (ऩौर) तक। इस इलाक़े का पेड़ नहीं काटा जाएगा जिसने इस हुदूद में कोई नई बात पैदा की, उस पर अल्लाह की, फ़रिश्तों की और तमाम इंसानों की ला'नत है। आ़सिम ने बयान किया कि फिर मुझे मूसा बिन अनस ने ख़बर दी कि अनस (रज़ि.) ने ये भी बयान किया था कि, या किसी ने दीन में बिदअ़त पैदा करने वाले को पनाह दी। (राजेअ़ : 1867)

[راجع: ١٨٦٧]

तश्रीह : मुआ़ज़ल्लाह बिदअ़त से आँहज़रत (ﷺ) को कितनी नफ़रत थी कि फ़र्माया जो कोई बिदअ़ती को अपने पास उतारे जगह दे, उस पर भी ला'नत। मुसलमानों! अपने पैग़म्बर साहब के फ़र्मान पर ग़ौर करो बिदअ़त से और बिदअ़तियों की सुहबत से बचते रहो और हर वक़्त सुन्नते नबवी और सुन्नत पर चलने वालों के आ़शिक़ रहो। अगर किसी काम के बिदअ़ते हसना या सय्यिआ होने में इख़्तिलाफ़ हो जैसे मज्लिसे मीलाद या क़याम वग़ैरह तो इससे भी बचना ही अफ़ज़ल होगा, इसलिये कि इसका करना कुछ फ़र्ज़ नहीं है और न करने में एह्तियात है। मुसलमानों! तुम जो बिदअ़त की त़रफ़ जाते हो ये तुम्हारी नादानी है अगर आख़िरत का प़वाब चाहते हो तो आँहज़रत (ﷺ) की एक अदना सुन्नत पर अ़मल कर लो जैसे फ़ज्र की सुन्नत के बाद ज़रा सा लेट जाना इसमें हज़ार मौलूद से ज़्यादा तुमको प़वाब मिलेगा।

٧- باب مَا يُذْكَرُ مِنْ ذَمِّ الرَّأْيِ وَتَكَلُّفِ الْقِيَاسِ

बाब 7 : दीन के मसाइल में राय पर अ़म्ल करने की मज़म्मत, इसी त़रह बेज़रूरत क़यास करने की बुराई

﴿وَلاَ تَقْفُ﴾ ﴿مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ﴾ [الأسراء: ٣٦].

जैसा कि इर्शादे बारी है सूरह बनी इस्राईल में वला तक़्फ़ु ला तकुल मा लैस लक बिही इल्म या'नी न कहो वो बात जिसका तुमको इल्म न हो।

तश्रीह : या तकल्लुफ़ के साथ क़यास करने की जैसे हनफ़िया ने इस्तिह़सान निकाला है या'नी क़यासे जली के ख़िलाफ़ एक

बारीक इल्लत को लेना हमारी शरअ में उन बातों को किसी सहाबी ने पसंद नहीं किया बल्कि हमेशा किताब व सुन्नत पर अमल करते रहे जिस मसले में किताब व सुन्नत का हुक्म न मिला इसमें अपनी राय को दख़ल दिया वो भी सीधे साधे तौर से और पेचदार वजहों से हमेशा परहेज़ किया। बाब का तर्जुमा में राय की मज़म्मत से वही राय मुराद है जो नस होने के बावजूद राय को तर्जीह दी जाए।

7307. हमसे सईद बिन तलीद ने बयान किया, कहा मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने, कहा मुझसे अब्दुर्रहमान बिन शुरैह और उनके अलावा इब्ने लहया ने बयान किया, उनसे अबुल अस्वद ने और उनसे उर्वा ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि.) ने हमें साथ लेकर हज्ज किया तो मैंने उन्हें ये कहते सुना कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआला इल्म को, उसके बाद कि तुम्हें दिया है एकदम से नहीं उठा लेगा बल्कि उसे इस तरह ख़त्म करेगा कि उलमा को उनके इल्म के साथ उठा लेगा फिर कुछ जाहिल लोग बाक़ी रह जाएँगे, उनसे फ़त्वा पूछा जाएगा और वो फ़त्वा अपनी राय के मुताबिक़ देंगे। पस वो लोगों को गुमराह करेंगे और वो ख़ुद भी गुमराह होंगे। फिर मैंने ये हदीष आँहज़रत (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा आइशा (रज़ि.) से बयान की। उनके बाद अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने दोबारा हज्ज किया तो उम्मुल मोमिनीन ने मुझसे कहा कि भांजे अब्दुल्लाह के पास जाओ और मेरे लिये इस हदीष को सुनकर ख़ूब मज़बूत कर लो जो हदीष तुमने मुझसे उनके वास्ते से बयान की थी। चुनाँचे मैं उनके पास आया और मैंने उनसे पूछा तो उन्होंने मुझसे वो हदीष बयान की, इसी तरह जैसा कि वो पहले मुझसे बयान कर चुके थे, फिर मैं आइशा (रज़ि.) के पास आया और उन्हें उसकी ख़बर दी तो उन्हें तअज्जुब हुआ और बोलीं कि वल्लाह! अब्दुल्लाह बिन अम्र ने ख़ूब याद रखा। (राजेअ : 100)

٧٣٠٧- حدَّثنا سَعيدُ بْنُ تَليدٍ، حَدَّثَني ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَني عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ شُرَيْحٍ وَغَيْرُهُ عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ، عَنْ عُرْوَةَ قَالَ: حَجَّ عَلَيْنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ اللهَ لاَ يَنْزِعُ الْعِلْمَ بَعْدَ انْ أَعْطَاهُمُوهُ انْتِزَاعًا، وَلَكِنْ يَنْتَزِعُهُ مِنْهُمْ مَعَ قَبْضِ الْعُلَمَاءِ بِعِلْمِهِمْ، فَيَبْقَى نَاسٌ جُهَّالٌ يُسْتَفْتَوْنَ فَيُفْتُونَ بِرَأْيِهِمْ فَيُضِلُّونَ وَيَضِلُّونَ)) فَحَدَّثْتُ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ إِنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو حَجَّ بَعْدُ فَقَالَتْ: يَا ابْنَ أُخْتِي انْطَلِقْ إِلَى عَبْدِ اللهِ فَاسْتَثْبِتْ لِي مِنْهُ الَّذِي حَدَّثَنِي عَنْهُ، فَجِئْتُهُ فَسَأَلْتُهُ فَحَدَّثَنِي بِهِ كَنَحْوِ مَا حَدَّثَنِي فَأَتَيْتُ عَائِشَةَ فَأَخْبَرْتُهَا، فَعَجِبَتْ فَقَالَتْ: وَاللهِ لَقَدْ حَفِظَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو.

[راجع: ١٠٠]

कि इतनी मुद्दत के बाद भी हदीष में एक लफ़्ज़ का भी फ़र्क़ नहीं किया।

7308. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अबू हम्ज़ा ने ख़बर दी, कहा मैंने आ'मश से सुना, कहा कि मैंने अबू वाइल से पूछा तुम सिफ़्फ़ीन की लड़ाई में शरीक थे? कहा कि हाँ, फिर मैंने सहल बिन हनीफ़ को कहते सुना (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा और हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने बयान किया कि सहल

٧٣٠٨- حدَّثنا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا أَبُو حَمْزَةَ سَمِعْتُ الأَعْمَشَ قَالَ: سَأَلْتُ أَبَا وَائِلٍ هَلْ شَهِدْتَ صِفِّينَ؟ قَالَ: نَعَمْ. فَسَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ حُنَيْفٍ يَقُولُ ح.
وحدَّثنا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو

عَوَانَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: قَالَ سَهْلُ بْنُ حُنَيْفٍ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّهِمُوا رَأْيَكُمْ عَلَى دِينِكُمْ، لَقَدْ رَأَيْتُنِي يَوْمَ أَبِي جَنْدَلٍ، وَلَوْ أَسْتَطِيعُ أَنْ أَرُدَّ أَمْرَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَرَدَدْتُهُ، وَمَا وَضَعْنَا سُيُوفَنَا عَلَى عَوَاتِقِنَا إِلَى أَمْرٍ يُفْظِعُنَا إِلاَّ أَسْهَلْنَ بِنَا إِلَى أَمْرٍ نَعْرِفُهُ، غَيْرَ هَذَا الأَمْرِ قَالَ: وَقَالَ أَبُو وَائِلٍ شَهِدْتُ صِفِّينَ وَبِئْسَتْ صِفِّينَ.

[راجع: ٣١٨١]

बिन हनीफ़ (रज़ि.)ने (जंगे सिफ़्फ़ीन के मौक़े पर) कहा कि लोगों! अपने दीन के मुक़ाबले मे अपनी राय को बेहक़ीक़त समझो। मैंने अपने आपको अबू जन्दल (रज़ि.) के वाक़िये के दिन (सुलह हुदैबिया के मौक़े पर) देखा कि अगर मेरे अंदर रसूलुल्लाह (ﷺ) के हुक्म से हटने की ताक़त होती तो मैं उस दिन आपसे इंहिराफ़ करता (और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के साथ उन शराइत को क़ुबूल न करता) और हमने जब किसी मुहिम पर अपनी तलवारें काँधों पर रखीं (लड़ाई शुरू की) तो उन तलवारों की बदौलत हमको एक आसानी मिल गई जिसे हम पहचानते थे मगर इस मुहिम में (या'नी जंगे सिफ़्फ़ीन में हम मुश्किल में गिरफ़्तार हैं दोनों तरफ़ वाले अपने अपने दलाइल पेश करते हैं) अबू आ'मश ने कहा कि अबू वाइल ने बताया कि मैं सिफ़्फ़ीन में मौजूद था और सिफ़्फ़ीन की लड़ाई भी क्या बुरी लड़ाई थी जिसमें मुसलमान आपस में कट मरे। (राजेअ : 3181)

तश्रीह : कुछ नुस्ख़ों में यहाँ इतनी इबारत ज़्यादा है, **क़ाल अबू अब्दुल्लाहि इत्तहमू रायकुम यक़ूलु मालम यकुन फ़ीहि किताबुन व ला सुन्नतुन व ला यम्बी लहू अंय्युफ़्तिय** इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा **इत्तहमू रायकुम** जो सहल की कलाम में है इसका ये मतलब है कि हर मसले में जब तक किताब और सुन्नत से कोई दलील न हो तो अपनी राय को सहीह न समझो और राय पर फ़त्वा न दो बल्कि किताबो सुन्नत में ग़ौर करके उसमें से उसका हुक्म निकालो। इब्ने अब्दुल बर्र ने कहा राय मज़्मूम से वही राय मुराद है कि किताबो सुन्नत को छोड़कर आदमी क़यास पर अमल करे।

٨- باب مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُسْأَلُ مِمَّا لَمْ يُنْزَلْ عَلَيْهِ الْوَحْيُ

बाब 8 : आँहज़रत (ﷺ) ने कोई मसला राय या क़यास से नहीं बतलाया

فَيَقُولُ : ((لاَ أدْرِي)) أوْ لَمْ يُجِبْ حَتَّى يُنْزَلَ عَلَيْهِ الوَحْيُ وَلَمْ يَقُلْ بِرَأْيِي وَلاَ بِقِيَاسٍ لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿بِمَا أَرَاكَ اللهُ﴾ [النساء : ١٠٥]

बल्कि जब आपसे कोई ऐसी बात पूछी जाती जिस बाब में वह्य न उतरी होती तो आप फ़र्माते मैं नहीं जानता या वह्य उतरने तक ख़ामोश रहते कुछ जवाब न देते क्योंकि अल्लाह पाक ने सूरह निसा में फ़र्माया ताकि अल्लाह जैसा तुझको बतलाये उसके मुवाफ़िक़ तू हुक्म दे। (सूरह निसा : 105)

وَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ : سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الرُّوحِ فَسَكَتَ حَتَّى نَزَلَتِ الآيَةُ.

और अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा आँहज़रत (ﷺ) से पूछा गया रूह क्या चीज़ है? आप ख़ामोश हो रहे यहाँ तक कि ये आयत उतरी।

٧٣٠٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ الْمُنْكَدِرِ يَقُولُ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: مَرِضْتُ

7309. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा मैं ने मुहम्मद बिन मुंकदिर से सुना, बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह

(रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं बीमार पड़ा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) अयादत के लिये तशरीफ़ लाए। ये दोनों बुज़ुर्ग पैदल चलकर आए थे, फिर आँहज़रत (ﷺ) पहुँचे तो मुझ पर बेहोशी तारी थी। आँहज़रत (ﷺ) ने वुज़ू किया और वुज़ू का पानी मुझ छिड़का, उससे मुझे अफ़ाक़ा हुआ तो मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! और कुछ औक़ात सुफ़यान ने ये अल्फ़ाज़ बयान किये कि मैंने कहा। अय रसूलुल्लाह! मैं अपने माल के बारे में किस तरह फ़ैसला करूँ, मैं अपने माल का क्या करूँ? बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने कोई जवाब नहीं दिया। यहाँ तक कि मीराष की आयत नाज़िल हुई। (राजेअ : 194)

فَجَاءَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ يَعُودُنِي وَأَبُو بَكْرٍ وَهُمَا مَاشِيَانِ، فَأَتَانِي وَقَدْ أُغْمِيَ عَلَيَّ، فَتَوَضَّأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ثُمَّ صَبَّ وَضُوءَهُ عَلَيَّ فَأَفَقْتُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ وَرُبَّمَا قَالَ: سُفْيَانُ فَقُلْتُ: أَيْ رَسُولَ اللهِ كَيْفَ أَقْضِي فِي مَالِي كَيْفَ أَصْنَعُ فِي مَالِي؟ قَالَ: فَمَا أَجَابَنِي بِشَيْءٍ حَتَّى نَزَلَتْ آيَةُ الْمِيرَاثِ. [راجع: ١٩٤]

तशरीह : हदीष से आपका सुकूत निकला, वह्य उतरने तक लेकिन ये फ़र्माना कि मैं नहीं जानता इब्ने हिब्बान की रिवायत में है, एक शख़्स ने आप (ﷺ) से पूछा कौनसी जगह अफ़ज़ल है? आपने फ़र्माया नहीं जानता। दारे क़ुत्नी और हाकिम की रिवायत में है आपने फ़र्माया मैं नहीं जानता हुदूदे गुनाह करने वालों का कफ़्फ़ारा है या नहीं। मिह्लब ने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने कुछ मुश्किल मुक़ामात में सुकूत फ़र्माया लेकिन आप ही ने अपनी उम्मत को क़यास की ता'लीम फ़र्माई। एक औरत से फ़र्माया अगर तेरे बाप पर क़र्ज़ होता तो तू अदा करती या नहीं? तो अल्लाह का हक़ ज़रूर अदा करना होगा। ये ऐने क़यास है और इमाम बुख़ारी (रह.) का मतलब ये नहीं है कि बिलकुल क़यास न करना चाहिये बल्कि उनका मतलब ये है कि ऐसा क़यास जो उसूले शरइया के ख़िलाफ़ हो या किसी दलीले शरई पर मबनी न हो सिर्फ़ एक ख़्याली बात हो न करना चाहिये और ये मसला तो उलमा का इज्मा है कि नस मौजूद होते हुए क़यास जाइज़ नहीं और जो शख़्स हदीष का ख़िलाफ़ करता है हालाँकि वो दूसरी हदीष से उसका मुआरिज़ा न करता हो न उसके नस्ख़ का दा'वा करे न उसकी सनद में क़दह करे तो उसकी अदालत जाती रहेगी वो लोगों का इमाम कहाँ हो सकता है और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने फ़र्माया जो आँहज़रत (ﷺ) से साबित हो वो तो सर और आँखों पर है और सह्राबा के मुख़्तलिफ़ क़ौलों में से हम कोई क़ौल चुन लेंगे। मैं कहता हूँ बस हनफ़िया को अपने इमाम के क़ौल पर तो कम अज़्कम चलना चाहिये।

बाब 9 : रसूलुल्लाह (ﷺ) का अपनी उम्मत के मर्दों और औरतों को वही बातें सिखाना जो अल्लाह ने आपको सिखाई थीं बाक़ी राय और तम्षील आपने नहीं सिखाई

٩- باب تَعْلِيمِ النَّبِيِّ ﷺ أُمَّتَهُ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ مِمَّا عَلَّمَهُ اللهُ لَيْسَ بِرَأْيٍ وَلَا تَمْثِيلٍ

तम्षील या'नी एक चीज़ का हुक्म दूसरी चीज़ के मिष्ल क़रार देना बवजह इल्लत जामेआ के जिसको क़यास कहते हैं।

7310. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अस्बहानी ने, उनसे अबू सालेह ज़क्वान ने और उनसे अबू सईद (रज़ि.) ने कि एक ख़ातून नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और कहा या रसूलल्लाह! आपकी तमाम अहादीष मर्द ले गये, हमारे लिये भी आप कोई दिन अपनी तरफ़ से मख़्सूस कर दें जिसमें हम आपके पास आएँ और आप हमें वो ता'लीमात दें जो

٧٣١٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الأَصْبَهَانِيِّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ ذَكْوَانَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ: فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللهِ ذَهَبَ الرِّجَالُ بِحَدِيثِكَ فَاجْعَلْ لَنَا مِنْ نَفْسِكَ يَوْمًا نَأْتِيكَ فِيهِ

अल्लाह ने आपको सिखाई है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर फ़लाँ फ़लाँ दिन फ़लाँ फ़लाँ जगह जमा हो जाओ। चुनाँचे औरतें जमा हुईं और आँहज़रत (ﷺ) उनके पास आये और उन्हें उसकी ता'लीम दी जो अल्लाह ने आपको सिखाया था। फिर आपने फ़र्माया, तुममें से जो औरत भी अपनी ज़िंदगी में अपने तीन बच्चे आगे भेज देगी (या'नी उनकी वफ़ात हो जाएगी) तो वो उसके लिये दोज़ख़ से रुकावट बन जाएँगे। इस पर उनमें से एक ख़ातून ने कहा, या रसूलल्लाह! दो? उन्होंने इस कलिमे को दो मर्तबा दोहराया, फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ दो, दो, दो भी यही दर्जा रखते हैं। (राजेअ : 101)

تُعَلِّمُنَا مِمَّا عَلَّمَكَ اللهُ فَقَالَ : اجْتَمِعْنَ فِي يَوْمِ كَذَا وَكَذَا فِي مَكَانِ كَذَا وَكَذَا فَاجْتَمَعْنَ فَأَتَاهُنَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَعَلَّمَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَهُ اللهُ، ثُمَّ قَالَ: ((مَا مِنْكُنَّ امْرَأَةٌ تُقَدِّمُ بَيْنَ يَدَيْهَا مِنْ وَلَدِهَا ثَلاَثَةً، إِلاَّ كَانَ لَهَا حِجَابًا مِنَ النَّارِ)) فَقَالَتِ: امْرَأَةٌ مِنْهُنَّ يَا رَسُولَ اللهِ وَاثْنَيْنِ قَالَ : فَأَعَادَتْهَا مَرَّتَيْنِ ثُمَّ قَالَ: ((وَاثْنَيْنِ وَاثْنَيْنِ وَاثْنَيْنِ)).

[راجع: ١٠١]

बाब का मतलब यहीं से निकलता है। किरमानी ने कहा इस क़ौल से कि वो उसके लिये दोज़ख़ से आड़ होंगे क्योंकि ये अम्र बग़ैर अल्लाह के बतलाए क़यास और राय से मा'लूम नहीं हो सकता।

बाब 10 : नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद, मेरी उम्मत की एक जमाअत हक़ पर ग़ालिब रहेगी

और जंग करती रहेगी और इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि उस गिरोह से दीन के आलिमों का गिरोह मुराद है।

١٠- باب قَوْلِ النَّبِيِّ : ((لاَ تَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي ظَاهِرِينَ عَلَى الْحَقِّ، يُقَاتِلُونَ وَهُمْ أَهْلُ الْعِلْمِ)).

अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी उस्ताद इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि इससे जमाअत अहले हदीष मुराद है।

7311. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस ने, उनसे मुग़ीरह बिन शुअबा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरी उम्मत का एक गिरोह हमेशा ग़ालिब रहेगा (उसमें इल्मी व दीनी ग़ल्बा भी दाख़िल है) यहाँ तक कि क़यामत आ जाएगी और वो ग़ालिब ही रहेंगे। (राजेअ : 3640)

٧٣١١- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ قَيْسٍ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي ظَاهِرِينَ حَتَّى يَأْتِيَهُمْ أَمْرُ اللهِ وَهُمْ ظَاهِرُونَ)). [راجع: ٣٦٤٠]

नश्रीह : ये दूसरी हदीष के ख़िलाफ़ नहीं है जिसमें ये है कि क़यामत बदतरीन ख़ल्क़ुल्लाह पर क़ायम होगी क्योंकि ये बदतरीन लोग एक मुक़ाम में होंगे और वो गिरोह दूसरे मुक़ाम में होगा या इस हदीष में अम्रुल्लाह से ये मुराद है यहाँ तक कि क़यामत क़रीब आन पहुँचे तो क़यामत से कुछ पहले ये फ़िर्क़ा वाले मर जाएँगे और निरे बुरे लोग रह जाएँगे दूसरी हदीष में है कि क़यामत के क़रीब एक हवा चलेगी जिससे हर मोमिन की रूह क़ब्ज़ हो जाएगी।

7312. हमसेइस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें हुमैद ने ख़बर दी, कहा कि मैंने मुआविया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) से सुना, वो ख़ुत्बा दे

٧٣١٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي حُمَيْدٌ قَالَ: سَمِعْتُ مُعَاوِيَةَ بْنَ

أَبِي سُفْيَانُ يَخْطُبُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ يُرِدِ اللهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّينِ، وَإِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ وَيُعْطِي اللهُ وَلَنْ يَزَالَ أَمْرُ هٰذِهِ الأُمَّةِ مُسْتَقِيمًا حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ، أَوْ حَتَّى يَأْتِيَ أَمْرُ اللهِ)).

[راجع: ٧١]

रहे थे, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह जिसके साथ ख़ैर का इरादा करता है उसे दीन की समझ फ़र्मा देता है और मैं तो सिर्फ़ तक़्सीम करने वाला हूँ और देता अल्लाह है और इस उम्मत का मामला हमेशा दुरुस्त रहेगा, यहाँ तक कि क़यामत क़ायम हो जाए या (आपने यूँ फ़र्माया कि) यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ पहुँचे। (राजेअ : 71)

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि अल्लाह का दीन इस्लाम क़यामत तक क़ायम रहेगा मुआनिदीने इस्लाम लाख कोशिश करें मगर, फूँकों से ये चराग़ बुझाया न जाएगा

١١- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

बाब 11 : अल्लाह तआला का सूरह अन्आम में यूँ फ़र्माना कि या वो तुम्हारे कई फ़िर्क़े कर दे

﴿أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا﴾ [الأنعام : ٦٥]

٧٣١٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرٌو: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: لَمَّا نَزَلَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ ﴿قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَى أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ﴾ [الانعام : ٦٥] قَالَ أَعُوذُ بِوَجْهِكَ ﴿أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ﴾ [الانعام : ٦٥] قَالَ أَعُوذُ بِوَجْهِكَ فَلَمَّا نَزَلَتْ: ﴿أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ﴾ قَالَ هَاتَانِ أَهْوَنُ أَوْ أَيْسَرُ. [راجع: ٤٦٢٨]

7313. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) पर ये आयत नाज़िल हुई कि, कहो कि वो इस पर क़ादिर है कि तुम पर तुम्हारे ऊपर से अ़ज़ाब भेजे। तो आँहज़रत (ﷺ) ने कहा कि मैं तेरे बाअ़ज़मत व बुज़ुर्ग मुँह की पनाह मांगता हूँ, या तुम्हारे पैरों के नीचे से (अ़ज़ाब भेजे) तो उस पर फिर आँहज़रत (ﷺ) ने कहा कि मैं तेरे मुबारक मुँह की पनाह मांगता हूँ, फिर जब ये आयत नाज़िल हुई कि, या तुम्हें फ़िर्क़ों में बांट दे और तुममें से कुछ को कुछ का डर चखाए, तो आपने फ़र्माया कि ये दोनों आसान व सहल हैं। (राजेअ : 4628)

ऊपर से पत्थरों या बारिश का अ़ज़ाब मुराद है। नीचे से ज़लज़ला और ज़मीन में धंस जाना मुराद है।

١٢- باب مَنْ شَبَّهَ أَصْلاً مَعْلُومًا بِأَصْلٍ مُبَيَّنٍ،

बाब 12 : एक अम्रे मा'लूम को दूसरे अम्रे वाज़ेह से तश्बीह देना जिसका हुक्म अल्लाह ने बयान कर दिया है ताकि पूछने वाला समझ जाए

قَدْ بَيَّنَ اللهُ حُكْمَهُمَا لِيَفْهَمَ السَّائِلُ.

तश्रीह : इसी को क़यास कहते हैं। बाब की दोनों अह़ादीष़ से क़यास का जवाज़ निकलता है लेकिन इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने स़हाबा में से और आमिर शअ़बी और इब्ने सीरीन ने फ़ुक़हा में से क़यास का इंकार किया है। बाक़ी तमाम फ़ुक़हा ने क़यास के जवाज़ पर इत्तिफ़ाक़ किया है। जब इसकी ज़रूरत हो और जुम्हूरे स़हाबा और ताबेईन से क़यास मन्क़ूल

है और ऊपर जो इमाम बुख़ारी (रह.) ने राय और क़यास की मज़म्मत बयान की है, इससे मुराद वही क़यास और राय है जो फ़ासिद हो लेकिन क़यास सहीह शराइत के साथ वो भी जब हदीष और कुर्आन में वो मसला सराहत के साथ न मिले। अकषर उलमा ने जाइज़ रखा है और बग़ैर उसके काम चलना दुश्वार है।

7314. हमसे अस्बग़ बिन फ़रज ने बयान किया, कहा मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि एक अअराबी नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत मे हाज़िर हुआ और कहा कि मेरी बीवी के यहाँ काला लड़का पैदा हुआ है जिसको मैं अपना नहीं समझता। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि तुम्हारे पास ऊँट हैं? उन्होंने कहा कि है। पूछा कि उनके रंग कैसे हैं? कहा कि सुर्ख़ हैं। पूछा कि उनमें कोई ख़ाकी भी है? उन्होंने कहा कि हाँ उनमें ख़ाकी भी है। उस पर आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि फिर किस तरह तुम समझते हो कि उस रंग का पैदा हुआ? उन्होंने कहा कि या रसूलल्लाह! किसी रग ने ये रंग खींच लिया होगा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुम्किन है उस बच्चे का रंग भी किसी रग ने खींच लिया हो? और आँहज़रत (ﷺ) ने उनको बच्चे के इंकार करने की इजाज़त नहीं दी। (राजेअ : 5305)

٧٣١٤- حدَّثَنَا اصْبَغُ بْنُ الْفَرَجِ، حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ أَعْرَابِيًّا أَتَى رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: إِنَّ امْرَأَتِي وَلَدَتْ غُلَامًا أَسْوَدَ وَإِنِّي أَنْكَرْتُهُ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَلْ لَكَ مِنْ إِبِلٍ))؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَمَا أَلْوَانُهَا؟)) قَالَ: حُمْرٌ قَالَ: ((هَلْ فِيهَا مِنْ أَوْرَقَ؟)) قَالَ: إِنَّ فِيهَا لَوُرْقًا قَالَ ((فَأَنَّى تُرَى ذَلِكَ جَاءَهَا؟)) قَالَ يَا رَسُولَ اللهِ عِرْقٌ نَزَعَهَا قَالَ: ((وَلَعَلَّ هَذَا عِرْقٌ نَزَعَهُ، وَلَمْ يُرَخِّصْ لَهُ فِي الانْتِفَاءِ مِنْهُ)).

[راجع: ٥٣٠٥]

7315. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.)ने कि एक ख़ातून रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आईं और अर्ज़ किया कि मेरी वालिदा ने हज्ज करने की नज़्र मानी थी और वो (अदायगी से पहले ही) वफ़ात पा गईं। क्या मैं उनकी तरफ़ से हज्ज कर लूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ उनकी तरफ़ से हज्ज कर लो। तुम्हारा क्या ख़्याल है, अगर तुम्हारी वालिदा पर क़र्ज़ होता तो तुम उसे पूरा करतीं? उन्होंने कहा कि हाँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर उस क़र्ज़ को भी पूरा कर जो अल्लाह तआला का है क्योंकि इस क़र्ज़ का पूरा करना ज़्यादा ज़रूरी है। (राजेअ : 1852)

٧٣١٥- حدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ امْرَأَةً جَاءَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ: إِنَّ أُمِّي نَذَرَتْ أَنْ تَحُجَّ فَمَاتَتْ قَبْلَ أَنْ تَحُجَّ أَفَأَحُجُّ عَنْهَا؟ قَالَ: ((نَعَمْ حُجِّي عَنْهَا، أَرَأَيْتِ لَوْ كَانَ عَلَى أُمِّكِ دَيْنٌ أَكُنْتِ قَاضِيَتَهُ؟)) قَالَتْ: نَعَمْ قَالَ: ((فَاقْضُوا الَّذِي لَهُ فَإِنَّ اللهَ أَحَقُّ بِالْوَفَاءِ)). [راجع: ١٨٥٢]

बाब 13 : क़ाज़ियों को कोशिश करके अल्लाह की किताब के मुवाफ़िक़ हुक्म देना चाहिये क्योंकि अल्लाह पाक ने फ़र्माया,

١٣- باب مَا جَاءَ فِي اجْتِهَادِ الْقُضَاةِ بِمَا أَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى لِقَوْلِهِ:

الْمَدِينَةِ: قَالَ سَمِعْتُ هَذَا مِنَ النَّبِيِّ ﷺ وَبَلَغَنِي أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ: قَالَ: ((وَلأَهْلِ)) الْيَمَنِ ((يَلَمْلَمُ)) وَذُكِرَ الْعِرَاقُ فَقَالَ: لَمْ يَكُنْ عِرَاقٌ يَوْمَئِذٍ.

किया। बयान किया कि मैंने ये नबी करीम (ﷺ) से सुना और मुझे मा'लूम हुआ है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अहले यमन के लिये यलमलम (मीक़ात है) और इराक़ का ज़िक्र हुआ तो उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में इराक़ नहीं था।

ये मीक़ात एहरामे हज्ज की मीक़ात हैं इस लिहाज़ से क़ाबिले ज़िक्र हैं यही बाब से मुताबक़त है।

٧٣٤٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا الْفُضَيْلُ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عن أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ أُرِيَ وَهُوَ فِي مُعَرَّسِهِ بِذِي الْحُلَيْفَةِ فَقِيلَ لَهُ إِنَّكَ بِبَطْحَاءَ مُبَارَكَةٍ. [راجع: ٤٨٣]

7345. हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन मुबारक ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ैल ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे मूसा बिन इस्माईल बिन उ़क़्बा ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे उनके वालिद अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) को जबकि आप मुक़ामे ज़ुल हुलैफ़ह में पड़ाव किये हुए थे, ख़्वाब दिखाया गया और कहा गया कि आप एक मुबारक वादी में हैं। (राजेअ़ : 483)

तश्रीह : ज़ुलहुलैफ़ह में एक मुबारक वादी है जिसका ज़िक्र किया गया। ह़ाफ़िज़ ने कहा इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस बाब में जो अह़ादीष़ बयान की उससे मदीना की फ़ज़ीलत ज़ाहिर की और इसकी फ़ज़ीलत में शक क्या है? वहाँ वह्य उतरती रही, वहीं आँहज़रत (ﷺ) की क़ब्र है और मिम्बर है जो बहिश्त की एक क्यारी है। कलाम इसमें हैं कि क्या मदीना के आ़लिम दूसरे मुल्कों के आ़लिमों पर मुक़द्दम हैं, तो अगर ये मक़सूद हो कि आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में या उस ज़माने में जब तक स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) मदीना में जमा थे तो ये मुसल्लम है। अगर ये मुराद हो कि हर ज़माने में तो इसमें नज़ाअ़ है और कोई वजह नहीं कि मदीने के आ़लिम हर ज़माने में दूसरे मुल्कों के आ़लिमों पर मुक़द्दम हों। इसलिये कि अइम्म-ए-मुज्तहिदीन के ज़माने के बाद फिर मदीना में एक भी आ़लिम ऐसा नहीं हुआ जो दूसरे मुल्कों के किसी आ़लिम से भी ज़्यादा इ़ल्म रखता हो या दूसरे मुल्कों के सब आ़लिमों से बढ़कर हो बल्कि मदीना में ऐसे-ऐसे बिदअ़ती और बदनिय्यत लोग जाकर रहे जिसके बिदअ़ती और बदनिय्यत होने में कोई शक नहीं हो सकता।

बाब 17 : अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान सूरह आले इमरान में कि ऐ पैग़म्बर! आपको उस काम में कोई दख़ल नहीं आख़िर आयत तक

١٧- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ﴾

٧٣٤٦- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ فِي صَلاَةِ الْفَجْرِ رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ قَالَ: ((اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ فِي الأَخِيرَةِ)) ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ الْعَنْ فُلاَنًا

7346. हमसे अह़मद बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें सालिम ने और उन्हे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़ज्र की नमाज़ में ये दुआ रुकूअ़ से सर उठाने के बाद पढ़ते थे कि, ऐ अल्लाह! फ़लाँ और फ़लाँ को अपनी रह़मत से दूर कर दे। उस पर अल्लाह अ़ज़्ज व जल ने ये आयत नाज़िल की कि आपको इस मामले में कोई इख़्तियार नहीं है। या

अल्लाह! उनकी तौबा क़ुबूल कर ले या उन्हें अ़ज़ाब दे कि बिला शुब्हा वो ह़द से तजावुज़ करने वाले हैं। (राजेअ़ : 469)

وَفُلاَنًا)) فَأَنْزَلَ اللهُ عزَّ وَجَلَّ: ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ﴾ [آل عمران: ١٢٨]. [راجع: ٤٦٩]

बाब 18 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह कह़फ़ में, और इंसान सबसे ज़्यादा झगड़ालू है

١٨- باب قَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿وَكَانَ الإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلاً﴾ [الكهف: ٥٤] وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَلاَ تُجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلاَّ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ﴾ [العنكبوت: ٤٦].

और इर्शादे ख़ुदावन्दी सूरह अ़न्कबूत में, और तुम अहले किताब से बह़स न करो लेकिन उस त़रीक़े से जो अच्छा हो या'नी नर्मी के साथ अल्लाह के पैग़म्बरों और उसकी किताबों का अदब मल्हूज़ रखकर उनसे बह़स करो। (अ़न्कबूत : 46)

7347. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि और मुझसे मुह़म्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमको अ़त्ताब बिन बशीर ने ख़बर दी, उन्हें इस्ह़ाक़ इब्ने अबी राशिद ने, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हे ज़ैनुल आबेदीन अ़ली बिन हुसैन (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें उनके वालिद हुसैन बिन अ़ली (रज़ि.) ने ख़बर दी कि अ़ली बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) ने बयान किया कि उनके और फ़ात़िमा बिन्ते रसूलुल्लाह (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) के घर एक रात आँह़ज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाए और फ़र्माया क्या तुम लोग तहज्जुद की नमाज़ नहीं पढ़ते। अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! हमारी जानें अल्लाह के हाथ में हैं पस जब वो हमें उठाना चाहे तो हमको उठा देगा। ज्यों ही मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से ये कहा तो आप पीठ मोड़कर वापस जाने लगे और कोई जवाब नहीं दिया लेकिन वापस जाते हुए आप अपनी रान पर हाथ मार रहे थे और कह रहे थे कि, और इंसान बड़ा ही झगड़ालू है, अगर कोई तुम्हारे पास रात में आए तो त़ारिक़ कहलाएगा और क़ुर्आन में जो वत्त़ारिक़ का लफ़्ज़ आया है उससे मुराद सितारा है और ष़ाक़िब बमा'नी चमकता हुआ। अ़रब लोग आग जलाने वाले से कहते हैं। अष़्कुब नारक या'नी आग रोशन कर। इससे लफ़्ज़े ष़ाक़िब है। (राजेअ़ : 1127)

حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ ح. حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ أَخْبَرَنَا عَتَّابُ بْنُ بَشِيرٍ عَنْ إِسْحَاقَ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ أَنَّ حُسَيْنَ بْنَ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ طَرَقَهُ وَفَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ بِنْتَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ لَهُمْ أَلاَ تُصَلُّونَ فَقَالَ عَلِيٌّ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّمَا أَنْفُسُنَا بِيَدِ اللهِ فَإِذَا شَاءَ أَنْ يَبْعَثَنَا بَعَثَنَا فَانْصَرَفَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ قَالَ لَهُ ذَلِكَ : وَلَمْ يَرْجِعْ إِلَيْهِ شَيْئًا، ثُمَّ سَمِعَهُ وَهُوَ مُدْبِرٌ يَضْرِبُ فَخِذَهُ وَهُوَ يَقُولُ: ﴿وَكَانَ الإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلاً﴾. مَا أَتَاكَ لَيْلاً فَهُوَ طَارِقٌ وَيُقَالُ الطَّارِقُ: النَّجْمُ وَالثَّاقِبُ الْمُضِيءُ يُقَالُ: اثْقُبْ نَارَكَ لِلْمُوقِدِ. [راجع: ١١٢٧]

तशरीह : ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने ये जवाब बत़रीक़ इंकार के नहीं दिया मगर उनसे नींद की ह़ालत में ये कलाम निकल गया, इसमे शक नहीं कि अगर वो आँह़ज़रत (ﷺ) के फ़र्माने पर उठ खड़े होते और नमाज़ पढ़ते तो और ज़्यादा अफ़ज़ल होता। अगरचे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने जो कहा वो भी दुरुस्त था मगर किसी शख़्स का जगाना और बेदार करना भी अल्लाह ही का जगाना और बेदार करना है। ह़ज़रत अ़ली(रज़ि.) का उस मौक़े पर ये कहना कि जब अल्लाह हमको जगाएगा तो उठेंगे मह़ज़ मुजादिला और मुकाबिरा था, इसलिये आँह़ज़रत (ﷺ) ये आयत पढ़ते हुए तशरीफ़ ले गये। और तहज्जुद की नमाज़ कुछ फ़र्ज़ न थी कि आँह़ज़रत (ﷺ) उनको मजबूर करते। दूसरे मुम्किन है कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) उसके बाद उठे हों और तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी हो। (वह़ीदी)

7348. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे सईद मक़्बरी ने, उनसे उनके वालिद अबू सईद कैसान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम मस्जिदे नबवी में थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया यहूदियों के पास चलो। चुनाँचे हम आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ रवाना हुए। जब हम उनके मदरसे तक पहुँचे तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने खड़े होकर उन्हें आवाज़ दी और फ़र्माया ऐ यहूदियों! इस्लाम लाओ तो तुम सलामत रहोगे। इस पर यहूदियों ने कहा कि अबुल क़ासिम! आप (ﷺ) ने अल्लाह का ह़ुक्म पहुँचा दिया। रावी ने बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने दोबारा उनसे फ़र्माया कि यही मेरा मक़्सद है, इस्लाम लाओ तो तुम सलामत रहोगे। उन्होंने कहा कि अबुल क़ासिम! आपने अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया। फिर आपने यही बात तीसरी बार कही और फ़र्माया, जान लो कि सारी ज़मीन अल्लाह और उसके रसूल की है और मैं चाहता हूँ कि तुम्हें इस जगह से बाहर कर दूँ। पस तुममें से जो कोई अपनी जायदाद के बदले में कोई क़ीमत पाता हो तो उसे बेच ले वरना जान लो कि ज़मीन अल्लाह और उसके रसूल की है। (तुमको ये शहर छोड़ना होगा)। (राजेअ़ : 3167)

٧٣٤٨- حدَّثنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ بَيْنَا نَحْنُ فِي الْمَسْجِدِ خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: انْطَلِقُوا إِلَى يَهُودَ فَخَرَجْنَا مَعَهُ حَتَّى جِئْنَا بَيْتَ الْمِدْرَاسِ فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ فَنَادَاهُمْ فَقَالَ: ((يَا مَعْشَرَ يَهُودَ أَسْلِمُوا تَسْلَمُوا)) فَقَالُوا: بَلَّغْتَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ قَالَ: فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((ذَلِكَ أُرِيدُ أَسْلِمُوا تَسْلَمُوا)) فَقَالُوا: قَدْ بَلَّغْتَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((ذَلِكَ أُرِيدُ)) ثُمَّ قَالَهَا الثَّالِثَةَ فَقَالَ: ((اعْلَمُوا إِنَّمَا الأَرْضُ للهِ وَرَسُولِهِ، وَإِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُجْلِيَكُمْ مِنْ هَذِهِ الأَرْضِ، فَمَنْ وَجَدَ مِنْكُمْ بِمَالِهِ شَيْئًا فَلْيَبِعْهُ، وَإِلاَّ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا الأَرْضُ للهِ وَرَسُولِهِ)).

[راجع: ٣١٦٧]

बाब 19 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद, और मैंने इसी त़रह़ तुम्हें उम्मते वस्त़ बना दिया (या'नी मोतदिल और सीधी राह पर चलने वाली) और उसके बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जमाअ़त को लाज़िम पकड़ने का ह़ुक्म दिया और आपकी मुराद जमाअ़त से अहले इल्म की जमाअ़त थी।

٧٩- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا﴾ [البقرة ١٤٣] وَمَا أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِلُزُومِ الْجَمَاعَةِ وَهُمْ أَهْلُ الْعِلْمِ.

7349. हमसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे

٧٣٤٩- حدَّثنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ،

حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يُجَاءُ بِنُوحٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَيُقَالُ لَهُ: هَلْ بَلَّغْتَ؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ. يَا رَبِّ فَتُسْأَلُ أُمَّتُهُ هَلْ بَلَّغَكُمْ فَيَقُولُونَ مَا جَاءَنَا مِنْ نَذِيرٍ فَيَقُولُ مَنْ شُهُودُكَ فَيَقُولُ مُحَمَّدٌ وَأُمَّتُهُ فَيُجَاءُ بِكُمْ فَتَشْهَدُونَ)) ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا﴾ - قَالَ عَدْلاً - ﴿لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا﴾ [البقرة : ١٤٣]. وَعَنْ جَعْفَرِ بْنِ عَوْنٍ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا.

[راجع: ٣٣٣٩]

अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे अबू सालेह (ज़क्वान) ने बयान किया, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत के दिन नूह (अ.) को लाया जाएगा और उनसे पूछा जाएगा, क्या तुमने अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो अ़र्ज़ करेंगे कि हाँ ऐ रब! फिर उनकी उम्मत से पूछा जाएगा कि क्या इन्होंने तुम्हें अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो कहेंगे कि हमारे पास कोई डराने वाला नहीं आया। अल्लाह तआ़ला हज़रत नूह (अ.) से पूछेगा, तुम्हारे गवाह कौन हैं? नूह (अ.) अ़र्ज़ करेंगे कि मुहम्मद (ﷺ) और उनकी उम्मत। फिर तुम्हें लाया जाएगा और तुम लोग उनके हक़ में शहादत (गवाही) दोगे, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये आयत पढ़ी, और इसी तरह मैंने तुम्हें दरम्यानी उम्मत बनाया, कहा कि वस्त बमा'नी अ़दल (मियानारवी) है, ताकि तुम लोगों के लिए गवाह बनो और रसूल तुम पर गवाह बने। इस्हाक़ बिन मंसूर से जा'फ़र बिन औन ने रिवायत किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू सालेह ने, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने यही हदीष बयान की। (राजेअ : 3339)

तश्रीह : हालाँकि मुसलमानों ने हज़रत नूह (अ.) को दुनिया में नहीं देखा न उनकी उम्मत वालों को मगर यक़ीन के साथ गवाही देंगे क्योंकि जो बात अल्लाह और रसूल के फ़र्माने से और तवातुर के साथ सुनी जाए वो मिष्ल देखी हुई बात की यक़ीनी होती है और दुनिया में भी ऐसी गवाही ली जाती है। मषलन एक शख़्स किसी का बेटा हो और सब लोगों में मशहूर हो तो ये गवाही दे सकते हैं कि वो फ़लाँ शख़्स का बेटा है हालाँकि उसको पैदा होते वक़्त आँख से किसी ने नहीं देखा। इस आयत से कुछ ने ये निकाला है कि इज्माअ़ हुज्जत है क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत को उम्मते आ़दिला फ़र्माया और ये मुम्किन नहीं कि सारी उम्मत का इज्माअ़ नाहक़ और बातिल पर हो जाए।

٢٠- باب إِذَا اجْتَهَدَ الْعَامِلُ - أَوِ الْحَاكِمُ- فَأَخْطَأَ خِلاَفَ الرَّسُولِ مِنْ غَيْرِ عِلْمٍ، فَحُكْمُهُ مَرْدُودٌ لِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنْ عَمِلَ عَمَلاً لَيْسَ عَلَيْهِ أَمْرُنَا فَهُوَ رَدٌّ)).

बाब 20 : जबकि कोई आ़मिल या हाकिम इज्तिहाद करे और लाइल्मी में रसूल (ﷺ) के हुक्म के ख़िलाफ़ कर जाए तो उसका फ़ैसला नाफ़िज़ नहीं होगा क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जिसने कोई ऐसा काम किया जिसके बारे में हमारा कोई फ़ैसला नहीं था तो वो रद्द है

उन कुछ लोगों के क़ौल की तर्दीद मक़्सूद है जो क़ाज़ी के हर फ़ैसले को बहरहाल नाफ़िज़ व हक़ क़रार देते हैं।

7350, 7351. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उनसे उनके भाई अबूबक्र ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मजीद बिन सुहैल बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने बयान किया, उन्होंने सईद बिन मुसय्यब से सुना, वो अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) और अबू हुरैरह (रज़ि.) से बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनी अ़दी अंसारी के एक साहब सुवाद बिन अ़ज़िया को ख़ैबर का आमिल बनाकर भेजा तो वो उ़म्दह क़िस्म की खजूरें वसूल करके लाए। आँहुज़ूर (ﷺ) ने पूछा क्या ख़ैबर की तमाम खजूरें ऐसी ही हैं? उन्होंने कहा कि नहीं या रसूलल्लाह! अल्लाह की क़सम! हम ऐसी एक साअ़ खजूर दो साअ़ (ख़राब) खजूर के बदले ख़रीद लेते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ऐसा न किया करो बल्कि (जिंस को जिंस के बदले) बराबर बराबर में ख़रीदो, या यूँ करो कि रद्दी खजूर नक़द बेच डालो फिर ये खजूर उसके बदले ख़रीद लो। इसी तरह हर चीज़ को जो तौलकर बिकती है उसका हुक्म उन ही चीज़ों का है जो नाप कर बिकती हैं। (राजेअ़: 2201,2202)

٧٣٥٠، ٧٣٥١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنْ أَخِيهِ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلاَلٍ، عَنْ عَبْدِ الْمَجِيدِ بْنِ سُهَيْلِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّ سَمِعَ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ يُحَدِّثُ أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ وَأَبَا هُرَيْرَةَ حَدَّثَاهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ بَعَثَ أَخَا بَنِي عَدِيٍّ الأَنْصَارِيَّ وَاسْتَعْمَلَهُ عَلَى خَيْبَرَ فَقَدِمَ بِتَمْرٍ جَنِيبٍ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((أَكُلُّ تَمْرِ خَيْبَرَ هَكَذَا)) قَالَ: لاَ وَاللهِ يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّا لَنَشْتَرِي الصَّاعَ بِالصَّاعَيْنِ مِنَ الْجَمْعِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تَفْعَلُوا، وَلَكِنْ مِثْلاً بِمِثْلٍ - أَوْ بِيعُوا هَذَا - وَاشْتَرُوا بِثَمَنِهِ مِنْ هَذَا وَكَذَلِكَ الْمِيزَانُ)). [راجع: ٢٢٠١، ٢٢٠٢]

बाब 21 : हाकिम का ़सवाब, जबकि वो इज्तिहाद करे और सेहत पर हो या ग़लती कर जाए

़सवाब बहरहाल मिलेगा।

٢١- باب أَجْرِ الْحَاكِمِ إِذَا اجْتَهَدَ فَأَصَابَ أَوْ أَخْطَأَ

7352. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद मुक़्री मक्की ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हैवह बिन शुरैह ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अल्हाद ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम बिन हारिष़ ने, उनसे बुस्र बिन सईद ने, उनसे अ़म्र बिन आ़स़ के मौला अबू क़ैस ने, उनसे अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) ने, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि जब हाकिम कोई फ़ैस़ला अपने इज्तिहाद से करे और फ़ैस़ला स़हीह हो तो उसे दोहरा ़सवाब मिलता है और जब किसी फ़ैस़ले में इज्तिहाद करे और ग़लती कर जाए तो उसे इकहरा ़सवाब मिलता है (इज्तिहाद का) बयान किया कि फिर मैंने ये ह़दीष़ अबूबक्र बिन अ़म्र बिन ह़ज़म से बयान की तो उन्होंने बयान किया कि मुझसे अबू

٧٣٥٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِءُ الْمَكِّيُّ، حَدَّثَنَا حَيْوَةُ بْنُ شُرَيْحٍ، حَدَّثَنِي يَزِيدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْهَادِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي قَيْسٍ مَوْلَى عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِذَا حَكَمَ الْحَاكِمُ فَاجْتَهَدَ ثُمَّ أَصَابَ فَلَهُ أَجْرَانِ، وَإِذَا حَكَمَ فَاجْتَهَدَ ثُمَّ أَخْطَأَ فَلَهُ أَجْرٌ)) قَالَ: فَحَدَّثْتُ

بِهٰذَا الْحَدِيثِ اَبَا بَكْرِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ فَقَالَ: هٰكَذَا حَدَّثَنِي اَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ، عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ. وَقَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ الْمُطَّلِبِ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ اَبِي بَكْرٍ، عَنْ اَبِي سَلَمَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ.

सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने इसी त़रह़ बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया। और अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मुत्त़लिब ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र ने बयान किया, उनसे अबू सलमा (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने इसी त़रह़ बयान किया।

तश्रीह: या'नी मुर्सलन रिवायत की, उसके वालिद ने मौस़ूलन रिवायत की थी। इस ह़दीष़ से ये निकला कि हर मसले में ह़क़ एक ही अम्र होता है लेकिन मुज्तहिद अगर ग़लती करे तो भी उससे मुवाख़ज़ा न होगा बल्कि उसको अज्र और ष़वाब मिलेगा। ये उस सूरत में है जब मुज्तहिद जान बूझकर नस़ या इज्माअ़ का ख़िलाफ़ न करे वरना गुनहगार होगा और उसकी अ़दालत जाती रहेगी। जैसे ऊपर गुज़र चुका। इस ह़दीष़ से कुछ ने ये भी निकाला है कि हर क़ाज़ी मुज्तहिद होना चाहिये वरना उसकी क़ज़ा स़ह़ीह़ न होगी। अहले ह़दीष़ का यही क़ौल है और यही राजेह़ है और ह़नफ़िया ने मुक़ल्लिद क़ाज़ी की भी क़ज़ा जाइज़ रखी है और ये कहा है कि मुक़ल्लिद को अपने इमाम के ह़ुक्म के बरख़िलाफ़ ह़ुक्म देना जाइज़ नहीं मगर उस पर कोई दलील नहीं है। मुम्किन है कि आदमी कुछ मसाइल में मुक़ल्लिद हो कुछ मसाइल में मुज्तहिद हो जिस मसले में आदमी तमाम दलाइल को अच्छी त़रह़ देख ले उसमें वो मुज्तहिद हो जाता है और जब उस मसले में मुज्तहिद हो गया तो अब उसको उस मसले में तक़्लीद दुरुस्त नहीं है बल्कि दलील पर अ़मल करना चाहिये। यही क़ौल ह़क़ और यही ष़वाब है और जिसने इसके ख़िलाफ़ किया है कि दलील मा'लूम होने पर भी उसके ख़िलाफ़ अपने इमाम की तक़्लीद पर जमा रहा उसका क़ौल नामा'कूल और ग़लत़ है। दलील मा'लूम होने के बाद दलील की पैरवी करना ज़रूरी है और तक़्लीद जाइज़ नहीं और अल्लाह तआ़ला ने जाबजा क़ुर्आन मे ऐसे मुक़ल्लिदों की मज़म्मत की है जो दलील मा'लूम होने पर भी तक़्लीद पर जमे रहते थे ये स़रीह़ जिहालत और नाइंस़ाफ़ी है।

बाब 22 : उस शख़्स का रद्द जो ये समझता है

٢٢- باب الْحُجَّةِ عَلَى مَنْ قَالَ :

कि आँह़ज़रत (ﷺ) के तमाम अह़काम हर एक स़ह़ाबी को मा'लूम रहते थे इस बाब में ये भी बयान किया है कि बहुत से स़ह़ाबा आँह़ज़रत (ﷺ) के पास से ग़ायब रहते थे और उनको इस्लाम की कई बातों की ख़बर न होती थी।

إِنَّ اَحْكَامَ النَّبِيِّ ﷺ كَانَتْ ظَاهِرَةً وَمَا كَانَ يَغِيبُ بَعْضُهُمْ عَنْ مُشَاهِدِ النَّبِيِّ ﷺ وَاُمُورِ الْاِسْلَامِ

तश्रीह: तो कुछ बात अकाबिर स़ह़ाबा पर जैसे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) या अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) थे, पोशीदा रह जाती। जब दूसरे स़ह़ाबा से सुनते तो फ़ौरन उस पर अ़मल करते और अपनी राय से रुजूअ़ करते। स़ह़ाबा, ताबेईन, अइम्मा-ए-दीन सबके ज़मानों में यही होता रहा कुछ अह़ादीष़ उनको पहुँचीं, कुछ न पहुँचीं क्योंकि उस ज़माने में ह़दीष़ की किताबें जमा नहीं हुई थीं। अब ह़नफ़िया का ये समझना कि इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) को सब अह़ादीष़ पहुँची थीं बिलकुल ख़िलाफ़े अ़क़्ल और ख़िलाफ़े वाक़िया है। ऐसा होता तो ख़ुद इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) ये क्यूँ फ़र्माते कि जहाँ तुमको आँह़ज़रत (ﷺ) की ह़दीष़ मिल जाए तो मेरा क़ौल छोड़ दो। जब ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को सब अह़ादीष़ न पहुँची हों तो इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) की निस्बत ये ख़्याल करना क्यूँकर स़ह़ीह़ हो सकता है और जब ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से कुछ मसाइल मे ग़लती हुई है तो और इमाम या मुज्तहिद किस शुमार व क़तार में हैं। पस अस़ल इमाम व मुक़्तदा मा'सूम अ़निल ख़त़ा स़य्यदना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (ﷺ) ही हैं। उम्मत में किसी का ये मुक़ाम नहीं है।

٧٣٥٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، حَدَّثَنِي عَطَاءٌ، عَنْ عُبَيْدِ

7353. हमसे मुसद्दद बिन मुसर्हिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज

بْنِ عُمَيْرٍ قَالَ: اسْتَأْذَنَ أَبُو مُوسَى عَلَى عُمَرَ فَكَأَنَّهُ وَجَدَهُ مَشْغُولاً فَرَجَعَ فَقَالَ عُمَرُ: أَلَمْ أَسْمَعْ صَوْتَ عَبْدِ اللهِ بْنِ قَيْسٍ ائْذَنُوا لَهُ؟ فَدُعِيَ لَهُ فَقَالَ: مَا حَمَلَكَ عَلَى مَا صَنَعْتَ؟ فَقَالَ: إِنَّا كُنَّا نُؤْمَرُ بِهَذَا، قَالَ: فَأْتِنِي عَلَى هَذَا بَيِّنَةً أَوْ لأَفْعَلَنَّ بِكَ، فَانْطَلَقَ إِلَى مَجْلِسٍ مِنَ الأَنْصَارِ فَقَالُوا: لاَ يَشْهَدُ إِلاَّ أَصَاغِرُنَا، فَقَامَ أَبُو سَعِيدٍ الخُدْرِيُّ فَقَالَ : قَدْ كُنَّا نُؤْمَرُ بِهَذَا، فَقَالَ عُمَرُ: خَفِيَ عَلَيَّ هَذَا مِنْ أَمْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَلْهَانِي الصَّفْقُ بِالأَسْوَاقِ.

[راجع: ٢٠٦٢]

ने, उनसे अ़त़ा बिन अबी रिबाह ने, उनसे उ़बैद बिन उ़मैर ने बयान किया कि अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने उ़मर (रज़ि.) से (मिलने की) इजाज़त चाही और ये देखकर कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) मशग़ूल हैं आप जल्दी से वापस चले गये। फिर उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि क्या मैंने अभी अ़ब्दुल्लाह बिन कैस (अबू मूसा रज़ि .) की आवाज़ नहीं सुनी थी? उन्हें बुला लो। चुनाँचे उन्हें बुलाया गया तो उ़मर (रज़ि.) ने पूछा कि ऐसा क्यूँ किया? (कि जल्दी वापस हो गये) उन्होंने कहा कि हमें ह़दीष़ में इसका ह़ुक्म दिया गया है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि इस ह़दीष़ पर कोई गवाह लाओ, वरना मैं तुम्हारे साथ ये (सख़्ती) करूँगा। चुनाँचे ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि.) अंसार की एक मज्लिस में गये। उन्होंने कहा कि इसकी गवाही हममें से सबसे छोटा दे सकता है। चुनाँचे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) खड़े हुए और कहा कि हमें दरबारे नबवी से इसका ह़ुक्म दिया जाता था। इस पर उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) का ये ह़ुक्म मुझे मा'लूम नहीं था, मुझे बाज़ार के कामों ख़रीद व फ़रोख़्त ने इस ह़दीष़ से ग़ाफ़िल रखा। (राजेअ़ : 2062)

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपनी निस्यान (भूल) को फ़ौरन तस्लीम करके ह़दीषे़ नबवी के आगे सर झुका दिया। एक मोमिन मुसलमान की यही शान होनी चाहिये कि ह़दीषे़ पाक के सामने इधर उधर की बातें छोड़कर सरे तस्लीम ख़म कर दे। बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है कि कुछ अह़ादीष़ ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को बाद में मा'लूम हुईं, ये कोई ऐ़ब की बात नहीं है। मज़्मूने ह़दीष़ एक बहुत बड़े अदबी, अख़्लाक़ी, समाजी अम्र पर मुश्तमिल है अल्लाह हर मुसलमान को इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ दे, आमीन।

٧٣٥٤- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ أَنَّهُ سَمِعَ مِنَ الأَعْرَجِ يَقُولُ: أَخْبَرَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ: إِنَّكُمْ تَزْعُمُونَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ يُكْثِرُ الْحَدِيثَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَاللهُ الْمَوْعِدُ إِنِّي كُنْتُ امْرَأً مِسْكِينًا أَلْزَمُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَلَى مِلْءِ بَطْنِي، وَكَانَ الْمُهَاجِرُونَ يَشْغَلُهُمُ الصَّفْقُ بِالأَسْوَاقِ، وَكَانَتِ الأَنْصَارُ يَشْغَلُهُمُ "الْقِيَامُ عَلَى أَمْوَالِهِمْ، فَشَهِدْتُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ وَقَالَ: ((مَنْ

7354. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यय़ना ने, कहा मुझसे ज़ुह्री ने, उन्होंने अ़अ़रज से सुना, उन्होने बयान किया कि मुझे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि तुम समझते हो कि अबू हुरैरह (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की बहुत ज़्यादा ह़दीष़ बयान करते हैं, अल्लाह के हुज़ूर में सबको जाना है। बात ये थी कि मैं एक मिस्कीन शख़्स था और पेट भरने के बाद हर वक़्त आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ रहना चाहता था लेकिन मुहाजिरीन को बाज़ार के कारोबार मशग़ूल रखते थे और अंसार को अपने माला की देखभाल मसरूफ़ रखती थी। मैं एक दिन आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर था और आपने फ़र्माया कि कौन अपनी चादर फैलाएगा, यहाँ तक मैं अपनी बात पूरी कर लूँ और फिर वो अपनी चादर समेट ले और उसके बाद कभी मुझसे सुनी हुई कोई

يَبْسُطُ رِدَاءَهُ حَتَّى أَقْضِيَ مَقَالَتِي ثُمَّ يَقْبِضُهُ فَلَنْ يَنْسَ شَيْئًا سَمِعَهُ مِنِّي؟)) فَبَسَطْتُ بُرْدَةً كَانَتْ عَلَيَّ فَوَ الَّذِي بَعَثَهُ بِالْحَقِّ مَا نَسِيتُ شَيْئًا سَمِعْتُهُ مِنْهُ.[راجع: ١١٨]

बात न भूले। चुनाँचे मैंने अपनी चादर जो मेरे जिस्म पर थी, फैला दी और उस ज़ात की क़सम! जिसने आँहज़रत (ﷺ) को हक़ के साथ भेजा था फिर कभी मैं आपकी कोई हदीष जो आपसे सुनी थी, नहीं भूला। (राजेअ : 118)

तश्रीह: हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को पाँच हज़ार से ज़ाइद अहादीष बरजुबान याद थीं। कुछ लोग इस कषरते हदीष पर रश्क करते, उनके जवाब में आपने ये बयान दिया जो यहाँ मज़्कूर है बाब और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है।

बाब 23 : आँहज़रत (ﷺ) से एक बात कही जाए और आप उस पर इंकार न करें जिसे तक़रीर कहते हैं तो ये हुज्जत है। आँहज़रत (ﷺ) के सिवा और किसी की तक़रीर हुज्जत नहीं

٢٣- باب مَنْ رَأَى تَرْكَ النَّكِيرِ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ حُجَّةً لاَ مِنْ غَيْرِ الرَّسُولِ

तश्रीह: क्योंकि आप ख़ता से मा'सूम और महफ़ूज़ थे और आप (ﷺ) का इंकार न करना इस फ़ेअल के जवाज़ की दलील है। दूसरे लोगों का सुकूत जवाज़ की दलील नहीं हो सकता। कुछ ने कहा अगर एक सहाबी ने दूसरे सहाबा के सामने या एक मुज्तहिद ने एक बात कही और दूसरे सहाबा ने या मुज्तहिदों ने उसको सुनकर उस पर सुकूत किया तो इज्माअे सुकूती कहलाया जाएगा वो भी हुज्जत है जैसे हज़रत उमर (रज़ि.) ने मुतआ की हुर्मत पर बरसरे मिम्बर बयान किया और दूसरे सहाबा ने उस पर इंकार नहीं किया तो गोया इसकी हुर्मत पर इज्माअे सुकूती हो गया।

٧٣٥٥- حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ قَالَ: رَأَيْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَحْلِفُ بِاللهِ إِنَّ ابْنَ الصَّيَّادِ الدَّجَّالُ قُلْتُ تَحْلِفُ بِاللهِ قَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ عُمَرَ يَحْلِفُ عَلَى ذَلِكَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَلَمْ يُنْكِرْهُ النَّبِيُّ ﷺ.

7355. हमसे हम्माद बिन हुमैद ने बयान किया, कहा हमसे उबैदुल्लाह बिन मुआज़ ने, कहा हमसे हमारे वालिद हज़रत मुआज़ बिन हस्सान ने बयान किया, उनसे शुअबा बिन हज्जाज ने बयान किया, उनसे सअद बिन इब्राहीम ने, उनसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) को देखा कि वो इब्ने सय्याद के वाक़िये पर अल्लाह की क़सम खाते थे। मैंने उनसे कहा कि आप अल्लाह की क़सम खाते हैं? उन्होंने कहा कि मैंने उमर (रज़ि.) को नबी करीम (ﷺ) के सामने अल्लाह की क़सम खाते देखा और आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर कोई इंकार नहीं किया।

तश्रीह: अगर इब्ने सय्याद दज्जाल न होता तो आप ज़रूर हज़रत उमर (रज़ि.) को उस पर क़सम खाने से मना करते। यहाँ ये इश्काल होता है कि ऊपर किताबुल जनाइज़ में गुज़र चुका है कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसकी गर्दन मारना चाही तो आपने फ़र्माया अगर वो दज्जाल है तब तो तू इसको गर्दन न मार सकेगा। अगर दज्जाल नहीं है तो इसका मारना तेरे हक़ में बेहतर न होगा। इससे मा'लूम होता है कि ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) को उसके दज्जाल होने में शक था, फिर हज़रत उमर (रज़ि.) के क़सम खाने पर आपने इंकार क्यूँ नहीं किया। इसका जवाब ये है कि शायद पहले आँहज़रत (ﷺ) को उसके दज्जाल होने में शुब्हा हो फिर हज़रत उमर (रज़ि.) ने ये क़सम खाई उस वक़्त मा'लूम हो गया कि वही दज्जाल है। अबू दाऊद ने इब्ने उमर (रज़ि.) से निकाला वो क़सम खाते थे और कहते थे बेशक इब्ने सय्याद ही मसीह दज्जाल है और मुम्किन है कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत उमर (रज़ि.) पर इसलिये इंकार न किया हो कि इब्ने सय्याद भी उन तीस दज्जालों में से एक दज्जाल

किया, कहा मुझसे मेरे वालिद और चचा ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया और उनसे उनके वालिद ने, उन्हें मुहम्मद बिन जुबैर ने ख़बर दी और उन्हें उनके वालिद जुबैर बिन मुत्इम (रज़ि.) ने ख़बर दी कि एक ख़ातून रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आईं तो आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें एक हुक्म दिया। उन्होंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! अगर मैं आपको न पाऊँ तो फिर क्या करूँगी? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब मुझे न पाओ तो अबूबक्र (रज़ि.) के पास जाना। हुमैदी ने इब्राहीम बिन सअ़द से ये इज़ाफ़ा किया कि ग़ालिबन ख़ातून की मुराद वफ़ात थी। इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा हुमैदी ने इस रिवायत में इब्राहीम बिन सअ़द से इतना बढ़ाया है कि आपको न पाऊँ, इससे मुराद ये है कि आपकी वफ़ात हो जाए। (राजेअ़ : 3659)

إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي وَعَمِّي قَالاَ: حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ أَبِيهِ أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ جُبَيْرٍ أَنَّ أَبَاهُ جُبَيْرَ بْنَ مُطْعِمٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ امْرَأَةً أَتَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَكَلَّمَتْهُ فِي شَيْءٍ، فَأَمَرَهَا بِأَمْرٍ فَقَالَتْ: أَرَأَيْتَ يَا رَسُولَ اللهِ إِنْ لَمْ أَجِدْكَ قَالَ: ((إِنْ لَمْ تَجِدِينِي فَأْتِي أَبَا بَكْرٍ)). زَادَ الْحُمَيْدِيُّ عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ كَأَنَّهَا تَعْنِي الْمَوْتَ.

[راجع: ٣٦٥٩]

तश्रीह : इस ह़दीष़ को इमाम बुख़ारी (रह.) दलालत की मिष़ाल के त़ौर पर लाए कि आँहज़रत (ﷺ) ने औ़रत के ये कहने से कि मैं आपको न पाऊँ ये समझ लिया कि मुराद इसकी मौत है। कुछ ने कहा इसमें दलालत है अबूबक्र सि़द्दीक़ (रज़ि.) के ख़लीफ़ा होने की और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने जो कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने किसी को ख़लीफ़ा नहीं किया तो इसका मत़लब ये है कि स़राह़त के साथ, बाक़ी इशारे के त़ौर पर तो कई अह़ादीष़ से मा'लूम होता है कि आप अबूबक्र सि़द्दीक़ (रज़ि.) को ख़लीफ़ा करना चाहते थे। मष़लन ये ह़दीष़ और मर्ज़े मौत में अबूबक्र (रज़ि.) को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म देने की ह़दीष़ और ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि) की वो ह़दीष़ कि अपने भाई और बाप को बुला भेज, मैं लिख दूँ, ऐसा न हो कोई आरज़ू करने वाला कुछ और आरज़ू करे और वो ह़दीष़ कि स़ह़ाबा ने आपसे पूछा, हम आपके बाद किसको ख़लीफ़ा करें फ़र्माया अबूबक्र (रज़ि.) को करोगे तो वो ऐसे हैं उ़मर(रज़ि.) को करोगे तो वो ऐसे हैं, अ़ली (रज़ि.) को करोगे तो वो ऐसे हैं मगर मुझको उम्मीद नहीं कि तुम अ़ली (रज़ि.) को करोगे। इस ह़दीष़ में भी अबूबक्र (रज़ि.) को पहले बयान किया और शाह वलीउल्लाह स़ाह़ब ने इज़ालतुल ख़ुलफ़ा में इस बह़ष़ को बहुत तफ़्स़ील से बयान किया है।

बाब 25 : नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मान कि, अहले किताब से दीन की कोई बात न पूछो

٢٥- بَاب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لاَ تَسْأَلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ عَنْ شَيْءٍ))

7361. अबुल यमान इमाम बुख़ारी (रह.) के शैख़ ने बयान किया, कि हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हे ज़ुह्री ने, उन्हें हुमैद बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने ख़बर दी, उन्होंने मुआ़विया (रज़ि.) से सुना, वो मदीने में क़ुरैश की एक जमाअ़त से ह़दीष़ बयान कर रहे थे। मुआ़विया (रज़ि.) ने कअ़ब अह़बार बहुत सच्चे थे और बावजूद उसके कभी कभी उनकी बात झूठ निकलती थी। ये मत़लब नहीं है कि कअ़ब अह़बार झूठ बोलते थे।

٧٣٦١- وَقَالَ أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ سَمِعَ مُعَاوِيَةَ يُحَدِّثُ رَهْطًا مِنْ قُرَيْشٍ بِالْمَدِينَةِ، وَذَكَرَ كَعْبَ الأَحْبَارِ فَقَالَ: إِنْ كَانَ مِنْ أَصْدَقِ هَؤُلاَءِ الْمُحَدِّثِينَ الَّذِينَ يُحَدِّثُونَ عَنْ أَهْلِ الْكِتَابِ، وَإِنْ كُنَّا مَعَ ذَلِكَ لَنَبْلُو عَلَيْهِ

लफ़्ज़ अह्द से नफ़ी कर दी गई है और कभी शिर्कत मर्तबा और मन्सब में होती है उसकी नफ़ी लफ़्ज़े स़मद से की गई है। कभी शिर्कत निस्बत में होती है जिसकी लफ़्ज़ लम यलिद से नफ़ी की गई है और कभी शिर्कत काम और ताप़ीर मे होती है उसकी नफ़ी लफ़्ज़े वलम यकुल्लहू कुफ़ुवन अह्द से की गई है। आगे ह़ज़रत शाह स़ाह़ब फ़र्माते हैं कि दुनिया के मज़ाहिबे बात़िला पाँच हैं। अव्वल दहरिया, दौम फ़लासफ़ा, सौम ष़नविया, चौथा यहूद व नस़ारा, पाँचवाँ मजूसिया और हर एक के ज़िक्र में ह़ज़रत शाह स़ाह़ब ने इस सूरह का वो कलिमा ज़िक्र किया है जिससे उस फ़िर्क़े की तर्दीद होती है। पस इस सूरह को मसल-ए-तौह़ीद में जामेअ़ व मानेअ़ क़रार दिया गया है इसीलिये इसकी फ़ज़ीलत है जो इस ह़दीष़ में मज़्कूर है।

M-09825696131

7375. हमसे मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे अह़मद बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने, उनसे अबू हिलाल ने और उनसे अबुर्रिजाल मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने, उनसे उनकी वालिदा अ़म्र बिन्ते अ़ब्दुर्रह़मान ने, वो उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) की परवरिश में थीं। उन्होंने आइशा (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक स़ाह़ब को एक मुहिम पर रवाना किया। वो स़ाह़ब अपने साथियों को नमाज़ पढ़ाते थे और नमाज़ में ख़त्म कुल हुवल्लाहु अह़द पर करते थे। जब लोग वापस आए तो उसका ज़िक्र आँह़ज़रत (ﷺ) से किया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उनसे पूछो कि वो ये त़र्ज़े अ़मल क्यूँ इख़्तियार किये हुए थे। चुनाँचे लोगों ने पूछा तो उन्होंने कहा कि वो ऐसा इसलिये करते थे कि ये अल्लाह की स़िफ़त है और मैं उसे पढ़ना अ़ज़ीज़ रखता हूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें बता दो कि अल्लाह भी उन्हें अ़ज़ीज़ रखता है।

٧٣٧٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنَا عَمْرٌو، عَنِ ابْنِ أَبِي هِلَالٍ أَنَّ أَبَا الرِّجَالِ مُحَمَّدَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَدَّثَهُ عَنْ أُمِّهِ عَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَكَانَتْ فِي حَجْرِ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ رَجُلاً عَلَى سَرِيَّةٍ، وَكَانَ يَقْرَأُ لأَصْحَابِهِ فِي صَلاَتِهِ فَيَخْتِمُ بِقُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ فَلَمَّا رَجَعُوا ذَكَرُوا ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((سَلُوهُ لأَيِّ شَيْءٍ يَصْنَعُ ذَلِكَ؟)) فَسَأَلُوهُ فَقَالَ: لأَنَّهَا صِفَةُ الرَّحْمَنِ، وَأَنَا أُحِبُّ أَنْ أَقْرَأَ بِهَا فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَخْبِرُوهُ أَنَّ اللهَ يُحِبُّهُ)).

तश़रीह़: इस सूरह शरीफ़ में अल्लाह तआ़ला की अव्वलीन स़िफ़त वह़दानियत दूसरी स़िफ़ते स़मदानियत को ज़ाहिर किया गया है। मअ़रिफ़ते इलाही के समझने के सिलसिले में वजूदे बारी तआ़ला की ज़ात इससे बिलकुल पाक है कि वो औलाद मिस़्ल मख़्लूक़ के रखता हो या कोई उसका जनने वाला हो वो इन दोनों सिलसिलों से बहुत दूर है। इस सिलसिले के लिये मुज़क्कर हो या मुअन्नष़ हम ज़ात होना ज़रूरी है और सारी कायनात में उसका हम ज़ात कोई नहीं है। वो इस बारे में भी वह़दहू ला शरीक लहू है। इन तमाम कामों को समझकर मअ़रिफ़ते इलाही ह़ासिल करना अंबिया किराम का यही अव्वलीन पैग़ाम है। यही अस़ल दा'वते दीन है ला इलाहा इल्लल्लाह का यही मफ़्हूम है।

बाब 2 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह बनी इस्राईल में कि आप कह दीजिए कि अल्लाह को पुकारो या रहमान को, जिस नाम से भी पुकारोगे

٢- باب قَوْلِ اللهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى : ﴿قُلِ ادْعُوا اللهَ أَوِ ادْعُوا الرَّحْمَنَ أَيًّامَا تَدْعُوا

तो अल्लाह के सब नाम अच्छे हैं. (बनी इस्राईल) فَلَهُ الأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ﴿الأسراء: ١١٠﴾

तश्रीह: निन्नान्वे नाम तो बहुत मशहूर हैं जो तिर्मिज़ी की हदीष़ में वारिद हैं और उनके सिवा भी बहुत नाम और सिफ़ात क़ुर्आन व हदीष़ में वारिद हैं। उन सबसे अल्लाह को याद कर सकते हैं लेकिन अपने तरफ़ से कोई नाम या सिफ़त तराशना जाइज़ नहीं। हज़रातें सूफ़िया ने फ़र्माया है कि अल्लाह के मुबारक नामों में अजीब आषार हैं बशर्ते कि आदमी पाक होकर अदब से इनको पढ़ा करे और ये भी ज़रूरी है कि हलाल का लुक़्मा खाता हो, हराम से परहेज़ करता हो। मषलन ग़िना और तवंगरी के लिये या ग़नी या मुग़नी का विर्द रखे। शिफ़ा और तन्दुरुस्ती के लिये या शाफ़ी या काफ़ी या माफ़ी का, हुसूले मतालिब के लिये या क़ाज़ियुल हाजात या काफ़ियुल मुहिम्मात का, दुश्मन पर ग़ल्बा हासिल करने के लिये या अज़ीज़ या क़हहार का, अज़्दियादे इज़्ज़त और आबरू के लिये या राफ़ेअ या मुइज़्ज़ का, अला हाज़ल क़यास। (वहीदी)

७३७६- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ وَأَبِي ظَبْيَانَ، عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ يَرْحَمُ اللهُ مَنْ لاَ يَرْحَمُ النَّاسَ)). [راجع: ٦٠١٣]

7376. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमको अबू मुआविया ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें ज़ैद बिन वहब और अबू ज़िब्यान ने और उनसे जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो लोगों पर रहम नही खाता अल्लाह भी उस पर रहम नहीं खाता। (राजेअ: 6013)

M-09825696131

बाब की मुताबक़त ज़ाहिर है कि अल्लाह की एक सिफ़त रहम भी है तो रहमान और रहीम नामों से भी उसे पुकार सकते हैं।

७३७७- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ إِذْ جَاءَهُ رَسُولُ إِحْدَى بَنَاتِهِ يَدْعُوهُ إِلَى ابْنِهَا فِي الْمَوْتِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((ارْجِعْ فَأَخْبِرْهَا أَنَّ للهِ مَا أَخَذَ، وَلَهُ مَا أَعْطَى وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِأَجَلٍ مُسَمًّى، فَمُرْهَا فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ)) فَأَعَادَتِ الرَّسُولَ أَنَّهَا أَقْسَمَتْ لَتَأْتِيَنَّهَا فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَقَامَ مَعَهُ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ وَمُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ فَدُفِعَ الصَّبِيُّ إِلَيْهِ وَنَفْسُهُ تَقَعْقَعُ كَأَنَّهَا فِي شَنٍّ، فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ فَقَالَ لَهُ سَعْدٌ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا هَذَا؟ قَالَ:

7377. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे आसिम अहवल ने, उनसे अबू उ़ष्मान नह्दी ने और उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास थे कि आपकी एक साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब के भेजे हुए एक शख़्स आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए कि उनके लड़के जाँकनी में मुब्तला हैं और वो आँहुज़ूर (ﷺ) को बुला रही हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि तुम जाकर उन्हें बता दो कि अल्लाह ही का सब माल है जो चाहे ले ले और जो चाहे दे दे और उसकी बारगाह में हर चीज़ के लिये एक वक़्त मुक़र्रर है। पस उनसे कहो कि सब्र करें और उस पर सब्र प़वाब की निय्यत से करें। साहबज़ादी ने दोबारा आपको क़सम देकर कहला भेजा कि आप ज़रूर तशरीफ़ लाएँ। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) खड़े हुए और आपके साथ सअ़द बिन मुआज़ और मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) भी खड़े हुए (फिर जब आप साहबज़ादी के घर पहुँचे तो) बच्चे आपको दिया गया और उसकी सांस उखड़ रही थी जैसे पुरानी मुश्क का हाल होता है। ये देखकर आँहज़रत (ﷺ) की आँखों मे आँसू भर आए। उस पर सअ़द (रज़ि.) ने कहा या

M-09825696131

((هَذِهِ رَحْمَةٌ جَعَلَهَا اللهُ فِي قُلُوبِ عِبَادِهِ وَإِنَّمَا يَرْحَمُ اللهُ مِنْ عِبَادِهِ الرُّحَمَاءَ)).

[راجع: ١٢٨٤]

रसूलल्लाह! ये क्या है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये रहमत है जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के दिलों में रखी है और अल्लाह भी अपने उन्हीं बन्दों पर रहम करता है जो रहम दिल होते हैं। (राजेअ : 1284)

तर्जुमा-ए-बाब यहीं से निकला कि अल्लाह के लिये सिफ़ते रहम का इस्बात हुआ।

٣- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿أَنَا الرَّزَّاقُ ذُوالْقُوَّةُ الْمَتِينُ﴾

बाब 3 : अल्लाह तआला का इर्शाद सूरह वज़्ज़ारियात में, मैं बहुत रोज़ी देने वाला, ज़ोरदार मज़बूत हूँ

तश्रीह : कुर्आन मजीद में यूँ है, इन्नल्लाह हुवर्रज़्ज़ाकु ज़ुल कुव्वतिल मतीन (अज़्ज़ारियात : 58) हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहाँ लफ़्ज़ अल्लर्रज़्ज़ाक़ लिखे हैं। इब्ने मसऊद (रज़ि) की यही क़िरात है।

٧٣٧٨- حدَّثَنَا عَبْدَانُ، عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا أَحَدٌ أَصْبَرَ عَلَى أَذًى سَمِعَهُ مِنَ اللهِ يَدَّعُونَ لَهُ الْوَلَدَ، ثُمَّ يُعَافِيهِمْ وَيَرْزُقُهُمْ)).

[راجع: ٦٠٩٩]

7378. हमसे अब्दान ने बयान किया, उनसे अबू हम्ज़ा ने, उनसे आ'मश ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने, उनसे अबू अब्दुर्रहमान सुल्मी ने और उनसे अबू मूसा अश्अरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तकलीफ़ वो बात सुनकर अल्लाह से ज़्यादा सब्र करने वाला कोई नहीं है। कमबख़्त मुश्रिक कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है और फिर भी वो उन्हें माफ़ करता है और उन्हें रोज़ी देता है। (राजेअ : 6099)

٤- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿عَالِمُ الْغَيْبِ فَلاَ يُظْهِرُ عَلَى غَيْبِهِ أَحَدًا﴾

बाब 4 : अल्लाह तआला का इर्शाद है सूरह जिन में कि, वो ग़ैब का जानने वाला है और अपने ग़ैब को किसी पर नहीं खोलता।

[الجن: ٢٦]. ﴿وَإِنَّ اللهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ﴾، وَأَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ - ﴿وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَى وَلاَ تَضَعُ إِلاَّ بِعِلْمِهِ﴾ - ﴿إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ﴾. قَالَ يَحْيَى بْنُ زِيَادٍ الظَّاهِرُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا وَالْبَاطِنُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا.

और सूरह लुक़्मान में फ़र्माया, बिला शुब्हा अल्लाह के पास क़यामत का इल्म है, और उसने अपने इल्म ही से उसे नाज़िल किया। और औरत जिसे अपने पेट में उठाती है और जो कुछ जनती है वो उसी के इल्म के मुताबिक़ होता है और उसी की तरफ़ क़यामत में लौटाया जाएगा। यह्या बिन ज़ियाद फ़रा ने कहा हर चीज़ पर ज़ाहिर है या'नी इल्म की वजह से और हर चीज़ पर बातिन है या'नी इल्म की वजह है।

٧٣٧٩- حدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ

7379. हमसे ख़ालिद बिन मुख़्लद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उन्होंने

M-09825696131

دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ خَمْسٌ لاَ يَعْلَمُهَا إِلاَّ اللهُ لاَ يَعْلَمُ مَا تَغِيضُ الأَرْحَامُ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ، إِلاَّ اللهُ وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى يَأْتِي الْمَطَرُ أَحَدٌ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى تَقُومُ السَّاعَةُ إِلاَّ اللهُ)).

[راجع: ١٠٣٩]

कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। ग़ैब की पाँच कुँजियाँ हैं, जिन्हें अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता। अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि रह़म मादर में क्या है, अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा, अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि बारिश कब आएगी, अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि किस जगह कोई मरेगा और अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि क़यामत कब क़ायम होगी? (राजेअ़ : 1039)

तश्रीह : इस पर सब मुसलमानों का इत्तिफ़ाक़ है कि ग़ैब का इल्म आँह़ज़रत (ﷺ) को भी न था मगर जो बात अल्लाह तआ़ला आपको बतला देता वो मा'लूम हो जाती। इब्ने इस्ह़ाक़ ने मग़ाज़ी में नक़ल किया कि आँह़ ज़रत (ﷺ) की ऊँटनी गुम हो गई तो इब्ने स़ल्लत कहने लगा। मुह़म्मद (ﷺ) अपने तईं पैग़म्बर कहते हैं और आसमान के ह़ालात तुमसे बयान करते हैं लेकिन उनको अपनी ऊँटनी की ख़बर नहीं वो कहाँ है? ये बात आँह़ज़रत (ﷺ) को पहुँची तो फ़र्माया एक शख़्स ऐसा ऐसा कहता है और मैं तो क़सम अल्लाह की वही बात जानता हूँ जो अल्लाह तआ़ला ने मुझको बतलाई और अब अल्लाह तआ़ला ने मुझको बतला दिया वो ऊँटनी फ़लाँ घाटी में है, एक पेड़ पर अटकी हुई है, आख़िर स़ह़ाबा गये और उसको लेकर आए।

٧٣٨٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : مَنْ حَدَّثَكَ أَنَّ مُحَمَّدًا ﷺ رَأَى رَبَّهُ فَقَدْ كَذَبَ وَهُوَ يَقُولُ: ﴿لاَ تُدْرِكُهُ الأَبْصَارُ﴾ [الأنعام: ١٠٣] وَمَنْ حَدَّثَكَ أَنَّهُ يَعْلَمُ الْغَيْبَ فَقَدْ كَذَبَ، وَهُوَ يَقُولُ: ﴿لاَ يَعْلَمُ الْغَيْبَ إِلاَّ اللهُ﴾.

[راجع: ٣٢٣٤]

7380. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने बयान किया, उनसे शअ़बी ने बयान किया, कि अगर तुमसे कोई ये कहता है कि मुह़म्मद (ﷺ) ने अपने रब को देखा तो वो ग़लत़ कहता है क्योंकि अल्लाह तआ़ला अपने बारे में ख़ुद कहता है कि नज़रें उसको देख नहीं सकतीं और जो कोई कहता है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ग़ैब जानते थे तो ग़लत़ कहता है क्योंकि अल्लाह तआ़ला ख़ुद कहता है कि ग़ैब का इल्म अल्लाह के सिवा और किसी को नहीं। (राजेअ़ : 3234)

तश्रीह : सच है,

इल्म ग़ैबी किस नुमी दांद बजुज़ परवरदिगारगर किसे दा'वा कन्द हर्गिज़ अज़्बावर मदार

जो ग़ाली लोग रसूले करीम (ﷺ) के लिये इल्मे ग़ैब ष़ाबित करते हैं वो क़ुर्आन मजीद की तह़रीफ़ करते हैं और अज़्ख़ुद एक ग़लत़ अ़क़ीदा घड़ते हैं। लोगों को ऐसे ख़न्नास लोगों से दूर रहकर अपने दीन व ईमान की ह़िफ़ाज़त करनी चाहिये। रसूले करीम (ﷺ) ने जो भी ग़ायबाना ख़बरें दी हैं वो सब वह्य इलाही से हैं। उनको ग़ैब कहना लोगों को धोखा देना है।

बाब 5 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह ह़श्र में, ﴿السَّلاَمُ﴾ : ٥- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ بَاعًا، وَإِنْ أَتَانِي يَمْشِي أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً)). [طرفاه في : ٧٥٠٥، ٧٥٣٧].

अगर वो मुझसे एक हाथ क़रीब आता है तो मैं उससे दो हाथ क़रीब हो जाता हूँ और अगर वो मेरी त़रफ़ चलकर आता है तो मैं उसके पास दौड़कर आ जाता हूँ। (दीगर मक़ाम : 7505, 7537)

तश्रीह : या'नी मेरा बन्दा मेरे साथ जैसा गुमान रखेगा मैं उसी त़रह़ उससे पेश आऊँगा। अगर ये गुमान रखेगा कि मैं उसके क़ुसूर माफ़ कर दूँगा तो ऐसा ही होगा। अगर ये गुमान रखेगा कि मैं उसको अ़ज़ाब दूँगा तो ऐसा ही होगा। ह़दीष़ से ये निकला कि रजा का पहलू बन्दे में ग़ालिब होना चाहिये और परवरदिगार के साथ नेक गुमान रखना चाहिये। अगर गुनाह बहुत हैं तो भी ये ख़्याल रखना चाहिये कि वो ग़फ़ूरुर्रह़ीम है। उसकी रह़मत से मायूस नहीं होना चाहिये। **इन्नल्लाह यग़्फ़िरुज़्ज़ुनुब जमीअ़न अन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रह़ीम.** (अज़्ज़ुमर : 53)

बाब 16 : सूरह क़स़स़ में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद, अल्लाह के चेहरे के सिवा तमाम चीज़ें मिट जाने वाली हैं

١٦- باب قَوْلِ الله تَعَالَى : ﴿كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلاَّ وَجْهَهُ﴾ [القصص : ٨٨]

तश्रीह : ग़र्ज़ इमाम बुख़ारी (रह़.) की ये है कि चेहरे का इत़्लाक़ परवरदिगार पर कुर्आन व ह़दीष़ में आ रहा है और गुमराह जह़मिया ने इसका इंकार किया है। उन्होंने चेहरे से ज़ात और यद से क़ुदरत के साथ तावील की है। ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) ने इसका रद्द किया है।

7406. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत नाज़िल हुई। आप कह दीजिए कि वो क़ादिर है इस पर कि तुम पर तुम्हारे ऊपर से अ़ज़ाब नाज़िल करे, तो नबी करीम (ﷺ) ने कहा, मैं तेरे चेहरे की पनाह माँगता हूँ। फिर आयत के ये अल्फ़ाज़ नाज़िल हुए जिनका तर्जुमा ये है कि, वो तुम्हारे ऊपर से तुम पर अ़ज़ाब नाज़िल करे या तुम्हारे पैरों के नीचे से अ़ज़ाब आ जाए। तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फिर ये दुआ़ की कि मैं तेरे चेहरे की पनाह चाहता हूँ। फिर ये आयत नाज़िल हुई जिनका तर्जुमा ये है, या तुम्हें फ़िर्क़ाबन्दी में मुब्तला कर दे (कि ये भी अ़ज़ाब की क़िस्म है) तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये आसान है ब निस्बत अगले अ़ज़ाबों के। (राजेअ़ : 4628)

٧٤٠٦- حدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ: ﴿قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَى أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُم﴾ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَعُوذُ بِوَجْهِكَ فَقَالَ: ﴿أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ﴾)) [الانعام: ٦٥] فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَعُوذُ بِوَجْهِكَ قَالَ: ﴿أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا﴾)) [الانعام : ٦٥] فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هَذَا أَيْسَرُ)).

[راجع: ٤٦٢٨]

क्योंकि उनमें सब तबाह हो जाते हैं। मा'लूम हुआ कि फ़िर्क़ाबन्दी भी अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब है। उम्मत अ़र्से से इस अ़ज़ाब में मुब्तला हैं और वो इसको अ़ज़ाब मानने के लिये तैयार नहीं, स़द अफ़सोस।

बाब 17 : सूरह त़ाहा (39) में अल्लाह तआ़ला का ह़ज़रत मूसा (अ.) से फ़र्माना कि, मेरी आँखों के सामने तू परवरिश पाए. और इर्शाद इलाही

١٧- باب قَوْلِ الله تَعَالَى : [طه : ٣٩] ﴿وَلِتُصْنَعَ عَلَى عَيْنِي﴾ تُغَذَّى وَقَوْلِهِ جَلَّ ذِكْرُهُ : ﴿تَجْرِي

بِكِ مَنْ أَشَاءُ وَلِكُلِّ وَاحِدَةٍ مِنْكُمَا مِلْؤُهَا قَالَ : فَأَمَّا الْجَنَّةُ فَإِنَّ اللهَ لاَ يَظْلِمُ مِنْ خَلْقِهِ أَحَدًا، وَإِنَّهُ يُنْشِئُ لِلنَّارِ مَنْ يَشَاءُ فَيُلْقَوْنَ فِيهَا فَتَقُولُ: هَلْ مِنْ مَزِيدٍ؟ ثَلاَثًا حَتَّى يَضَعَ فِيهَا قَدَمَهُ فَتَمْتَلِئُ وَيُرَدُّ بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ وَتَقُولُ: قَطْ قَطْ قَطْ)).

भरती होने वाली है। कहा कि जहाँ तक जन्नत का ता'ल्लुक़ है तो अल्लाह अपनी मख़्लूक़ में किसी पर ज़ुल्म नही करेगा और दोज़ख़ की इस त़रह़ से कि अल्लाह अपनी मख़्लूक़ में से जिसको चाहेगा और दोज़ख़ के लिये पैदा करेगा वो उसमें डाली जाएगी उसके बाद भी दोज़ख़ कहेगी और कुछ मख़्लूक़ है (मैं अभी ख़ाली हूँ) तीन बार ऐसा ही होगा। आख़िर परवरदिगार अपना पैर उसमें रख देगा। उस वक़्त वो भर जाएगी, एक पर एक उलट कर सिमट जाएगी। कहने लगेगी **बस बस बस मैं भर गई।** (राजेअ : 4849)

[راجع: ٤٨٤٩]

ये अल्लाह का क़दम रखना बरह़क है जिसकी तफ़्सील अल्लाह ही को मा'लूम है उसमें कुरैद करना बिदअ़त है और तस्लीम करना सलफ़ का त़रीक़ा है।

٧٤٥٠- حدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَيُصِيبَنَّ أَقْوَامًا سَفْعٌ مِنَ النَّارِ بِذُنُوبٍ أَصَابُوهَا عُقُوبَةً، ثُمَّ يُدْخِلُهُمُ اللهُ الْجَنَّةَ بِفَضْلِ رَحْمَتِهِ يُقَالُ لَهُمْ: الْجَهَنَّمِيُّونَ)). وَقَالَ هَمَّامٌ: حَدَّثَنَا قَتَادَةَ حَدَّثَنَا أَنَسٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٦٥٥٩]

7450. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ह़ौज़ी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कुछ लोग उन गुनाहों की वजह से जो उन्होंने किये होंगे, आग से झुलस जाएँगे। ये उनकी सज़ा होगी। फिर अल्लाह अपनी रह़मत से उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा और उन्हें जहन्नमीन कहा जाएगा। और हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से यही ह़दीष़ बयान की। (राजेअ़ : 6559)

बाब 26 : अल्लाह त़आला का सूरह फ़ात़िर में ये फ़र्मान कि बिला शुब्हा अल्लाह आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है वो अपनी जगह से टल नहीं सकते

٢٦- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿إِنَّ اللهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ أَنْ تَزُولاَ﴾

٧٤٥١- حدَّثَنَا مُوسَى، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ : جَاءَ حِبْرٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِنَّ اللهَ يَضَعُ السَّمَاءَ عَلَى إِصْبَعٍ، وَالأَرْضَ عَلَى إِصْبَعٍ، وَالْجِبَالَ عَلَى إِصْبَعٍ وَالشَّجَرَ وَالأَنْهَارَ عَلَى إِصْبَعٍ، وَسَائِرَ الْخَلْقِ عَلَى

7451. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अ़ल्क़मा ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि एक यहूदी आ़लिम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए और कहा, ऐ मुह़म्मद (ﷺ)! क़यामत के दिन अल्लाह त़आला आसमानों को एक उँगली पर, ज़मीन को एक उँगली पर, पहाड़ों को एक उँगली पर, पेड़ और नहरों को एक उँगली पर और तमाम मख़्लूक़ात को एक उँगली पर रखेगा। फिर अपने हाथ से इशारा करके कहेगा कि मैं ही बादशाह हूँ। इस पर

إِصْبَعٍ ثُمَّ يَقُولُ بِيَدِهِ: أَنَا اللَّهُ، فَضَحِكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَقَالَ: ((﴿وَمَا قَدَرُوا اللهَ حَقَّ قَدْرِهِ﴾)). [راجع: ٤٨١١]

आँहज़रत (ﷺ) हंस दिये और ये आयत पढ़ी, वमा क़दरुल्लाह हक़्क़ा क़दरिही जो सूरह ज़ुमर में है। (राजेअ : 4811)

٢٧- باب مَا جَاءَ فِي تَخْلِيقِ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَغَيْرِهَا مِنَ الْخَلاَئِقِ وَهُوَ فِعْلُ الرَّبِّ تَبَارَكَ وَتَعَالَى وَأَمْرُهُ فَالرَّبُّ بِصِفَاتِهِ وَفِعْلِهِ وَأَمْرِهِ وَهُوَ الْخَالِقُ الْمُكَوِّنُ غَيْرُ مَخْلُوقٍ، وَمَا كَانَ بِفِعْلِهِ وَأَمْرِهِ وَتَخْلِيقِهِ وَتَكْوِينِهِ فَهُوَ مَفْعُولٌ وَمَخْلُوقٌ وَمُكَوَّنٌ.

बाब 27 : आसमानों और ज़मीन और दूसरी मख़्लूक़ के पैदा करने का बयान

और ये पैदा करना अल्लाह तबारक व तआला का एक फ़ेअल और उसका अम्र है। पस अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपनी सिफ़ात, अपने फ़ेअल और अपने अम्र समेत ख़ालिक़ है, वही बनाने वाला है और ग़ैर मख़्लूक़ है और जो चीज़ भी उसके फ़ेअल, उसके अम्र, उसकी तख़्लीक़ और उसकी तक्वीन से बनी हैं वो सब मख़्लूक़ और मुकव्वन हैं।

तश्रीह : ये बाब लाकर इमाम बुख़ारी (रह.) ने अहले सुन्नत का मज़हब साबित किया कि अल्लाह की सिफ़ात ख़्वाह ज़ातिया हों जैसे इल्म, क़ुदरत, ख़्वाह अफ़्आलिया हों ख़ल्क़, तरज़ीक़, कलाम, नुज़ूल, इस्तवा वग़ैरह ये सब ग़ैर मख़्लूक़ हैं और मुअतज़िला व जहमिया का रद्द किया। इमाम बुख़ारी (रह.) ने रिसाला ख़ल्क़े अफ़्आलुल इबाद में लिखा है कि क़दरिया तमाम अफ़्आल का ख़ालिक़ बशर को जानते हैं और जबरिया तमाम अफ़्आल का ख़ालिक़ और फ़ाइल अल्लाह को कहते हैं और जहमिया कहते हैं फ़ेअल और मफ़्ऊल एक है। इसी वजह से वो कलिमा कुन को भी मख़्लूक़ कहते हैं और सलफ़ अहले सुन्नत का ये क़ौल है कि तख़्लीक़ अल्लाह का फ़ेअल है और मख़्लूक़ हमारे अफ़्आल हैं न कि अल्लाह तआला के अफ़्आल वो अल्लाह की सिफ़ात हैं। अल्लाह की ज़ात सिफ़ात के सिवा बाक़ी सब चीज़ें मख़्लूक़ हैं। (वहीदी)

٧٤٥٢- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، أَخْبَرَنِي شَرِيكُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي نَمِرٍ، عَنْ كُرَيْبٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: بِتُّ فِي بَيْتِ مَيْمُونَةَ لَيْلَةً وَالنَّبِيُّ ﷺ عِنْدَهَا لأَنْظُرَ كَيْفَ صَلاَةُ رَسُولِ اللهِ ﷺ بِاللَّيْلِ فَتَحَدَّثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مَعَ أَهْلِهِ سَاعَةً ثُمَّ رَقَدَ فَلَمَّا كَانَ ثُلُثُ اللَّيْلِ الأَخِيرِ أَوْ بَعْضُهُ قَعَدَ فَنَظَرَ إِلَى السَّمَاءِ فَقَرَأَ: ﴿إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ - إِلَى قَوْلِهِ لأُولِي - الأَلْبَابِ﴾

7452. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझे शुरैक बिन अब्दुल्लाह बिन अबी नम्र ने ख़बर दी, उन्हें कुरैब ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि एक रात मैंने उम्मुल मोमिनीन मैमूना (रज़ि.) के घर गुज़ारी। उस रात नबी करीम (ﷺ) उन्हीं के पास थे। मेरा मक़्सद रात में आँहज़रत (ﷺ) की नमाज़ को देखना था। आँहज़रत (ﷺ) ने थोड़ी देर तो अपनी अहलिया के साथ बातचीत की, फिर सो गये। जब रात का आख़िरी तिहाई हिस्सा या कुछ हिस्सा बाक़ी रह गया तो आप उठ बैठे और आसमान की तरफ़ देखकर ये आयत पढ़ी। बिला शुब्हा आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में अक़्ल रखने वालों के लिये निशानियाँ हैं, फिर उठकर

رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى إِذَا أَحَبَّ عَبْدًا نَادَى جِبْرِيلَ إِنَّ اللهَ قَدْ أَحَبَّ فُلَانًا فَأَحِبَّهُ فَيُحِبُّهُ جِبْرِيلُ، ثُمَّ يُنَادِي جِبْرِيلُ فِي السَّمَاءِ إِنَّ اللهَ قَدْ أَحَبَّ فُلَانًا، فَأَحِبُّوهُ فَيُحِبُّهُ أَهْلُ السَّمَاءِ وَيُوضَعُ لَهُ الْقَبُولُ فِي أَهْلِ الأَرْضِ)).

किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो जिब्रईल (अ.) को आवाज़ देता है कि अल्लाह फ़लाँ से मुहब्बत करता है तुम भी उससे मुहब्बत करो। चुनाँचे जिब्रईल (अ.) भी उससे मुहब्बत करते हैं। फिर वो आसमान में आवाज़ देते हैं कि अल्लाह फ़लाँ से मुहब्बत करता है तुम भी उससे मुहब्बत करो। चुनाँचे अहले आसमान भी उससे मुहब्बत करने लगते हैं और इस तरह रूए ज़मीन में भी उसे मक़्बूलियत हासिल हो जाती है।

(राजेअ : 3209)

[راجع: ٣٢٠٩]

उसकी ता'ज़ीम और मुहब्बत सबके दिलों में समा जाती है। ये ख़ालिसन मुवह्हिदीन सुन्नते नबवी के ताबेदारों का ज़िक्र है उन ही को दूसरे लफ़्ज़ों में औलिया अल्लाह कहा जाता है न कि फ़ुस्साक़ फ़ुज्जार बिदअती लोग वो तो अल्लाह और रसूल के दुश्मन हैं।

٧٤٨٦- حدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ، قَالَ: ((يَتَعَاقَبُونَ فِيكُمْ مَلاَئِكَةٌ بِاللَّيْلِ وَمَلاَئِكَةٌ بِالنَّهَارِ، وَيَجْتَمِعُونَ فِي صَلاَةِ الْعَصْرِ وَصَلاَةِ الْفَجْرِ، ثُمَّ يَعْرُجُ الَّذِينَ بَاتُوا فِيكُمْ فَيَسْأَلُهُمْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِهِمْ كَيْفَ تَرَكْتُمْ عِبَادِي؟ فَيَقُولُونَ : تَرَكْنَاهُمْ وَهُمْ يُصَلُّونَ وَأَتَيْنَاهُمْ وَهُمْ يُصَلُّونَ)).

7486. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे मालिक ने, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारे पास रात और दिन के फ़रिश्ते एक के बाद एक आते हैं और अस्र और फ़ज्र की नमाज़ों में दोनों वक़्त के फ़रिश्ते इकट्ठे होते हैं। फिर जब वो फ़रिश्ते ऊपर जाते हैं जिन्होंने रात तुम्हारे साथ गुज़ारी है तो अल्लाह तआला उनसे पूछता है हालाँकि वो बन्दों के अहवाल का सबसे ज़्यादा जानने वाला है कि तुमने मेरे बन्दों को किस हाल में छोड़ा? वो जवाब देते हैं कि हमने उन्हें इस हाल में छोड़ा कि वो नमाज़ पढ़ रहे थे और जब हम उनके पास गये जब भी वो नमाज़ पढ़ रहे थे। (राजेअ : 555)

[راجع: ٥٥٥]

इस हदीष से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि अल्लाह तआला फ़रिश्तों से कलाम करता है।

٧٤٨٧- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ وَاصِلٍ عَنِ الْمَعْرُورِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا ذَرٍّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَتَانِي جِبْرِيلُ فَبَشَّرَنِي أَنَّهُ مَنْ مَاتَ لاَ يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا، دَخَلَ الْجَنَّةَ قُلْتُ: وَإِنْ سَرَقَ وَإِنْ زَنَى قَالَ : وَإِنْ سَرَقَ وَإِنْ زَنَى)). [راجع: ١٢٣٧]

7487. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे वासिल ने, उनसे मअरूर ने बयान किया कि मैंने अबू ज़र्र (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे पास जिब्रईल (अ.) आए और मुझे ये बशारत दी कि जो शख़्स इस हाल में मरेगा कि वो अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता होगा तो वो जन्नत में जाएगा। मैंने पूछा गो उसने चोरी की और ज़िना भी की हो? फ़र्माया कि गो उसने चोरी और ज़िना किया हो। (राजेअ : 1237)